प्रयागराज, रविवार 30 अगस्त 2026 से 05 सितंबर 2026 तक
वर्ष-14, अंक-35
पृष्ठ- 8 मूल्य: 3 रूपये

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार
हिन्दी साप्ताहिक

14th ANNIVERSARY

E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

भूस्खलन से बनी 2 झीलों से नेपाल में खतरा अभी टला नहीं,एक से पानी रिस रहा, लापता लोगों का आंकड़ा 2500 हुआ

काठमांडू। नेपाल में बुधवार को आई भीषण बाढ़ और भूस्खलन के बाद खतरा अभी टला नहीं है। नेपाल-चीन सीमा के पास भूस्खलन से दो नई झीलें बन गई हैं। इनमें से एक झील से लगातार पानी रिस रहा है, जबकि दूसरी का आकार बढ़ता जा रहा है। इससे आसपास के इलाकों में दोबारा बाढ़ या भूस्खलन का खतरा बना हुआ है। इसी इलाके में बुधवार को अचानक आई बाढ़ ने भारी तबाही मचाई थी। तेज बहाव अपने साथ कीचड़, रेत, बजरी और बड़ी चट्टानें लेकर नीचे के इलाकों में पहुंचा था। नेपाल और तिब्बत में इस आपदा से अब तक 633 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि करीब 2,500 लोग लापता हैं। इनमें 320 भारतीय भी शामिल हैं। वहीं, करीब 400 भारतीय अभी तिब्बत में फंसे हुए हैं। नेपाल के राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल ने सोशल मीडिया साइट एक्स पर पोस्ट करते हुए भारत के समर्थन के लिए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का आभार जताया। उन्होंने कहा कि भारत सरकार की ओर से दिखाई गई चिंता, सहयोग और एकजुटता के लिए नेपाल सरकार

और जनता की ओर से वह दिल से धन्यवाद। यूएन बोला- नेपाल में हजारों परिवारों को खाने और साफ पानी की जरूरत नेपाल में भीषण बाढ़ के बाद हालात अब भी गंभीर हैं। यूएन के मुताबिक, हजारों परिवारों को भोजन और पीने के साफ पानी की जरूरत है। राहत-बचाव के लिए कई देशों और अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों ने मदद बढ़ाई है। यूरोपीय संघ, कनाडा और अमेरिका ने नेपाल को राहत सामग्री और आर्थिक सहायता देने का ऐलान किया है। नेपाल सरकार ने बाढ़ और भूस्खलन से प्रभावित 5 जिलों की 15 लोकल बॉडी को आपदा प्रभावित-इमरजेंसी क्षेत्र घोषित किया है। सरकार का कहना है कि इन इलाकों में राहत और पुनर्वास कार्यों को तेज करने के लिए यह फैसला लिया गया है। वैज्ञानिक जेफ्री कार्गेल ने सीएनएन से कहा कि नेपाल में बाढ़ प्रभावित इलाके के ऊपर बनी दूसरी झील का पानी अस्थिर है। बांध टूटा तो नीचे के इलाकों में फिर बड़ी बाढ़ आ सकती है। पहली झील का बांध शुक्रवार को टूट चुका है। अगर दूसरी झील भी टूटी तो उसका पानी पहली झील में पहुंचकर दोनों का पानी एक साथ नीचे ला सकता है। कार्गेल ने रेस्क्यू टीमों को ऊंचे इलाकों में तैयार रहने की सलाह दी है। दोनों झीलें नेपाल-चीन सीमा के पास हैं, जहां बुधवार को भीषण बाढ़ आई थी। बाढ़ ने नेपाल की नई सरकार की आर्थिक मुश्किलें भी बढ़ा दी हैं। देश की अर्थव्यवस्था विदेशी मदद, विदेशों में काम कर रहे नेपाली लोगों के भेजे पैसे और चीन-भारत के सामान पर निर्भर है। राष्ट्रीय आपदा प्राधिकरण के मुताबिक, बाढ़ से 80 पुल और करीब 40 किमी सड़कें खराब हुई हैं। प्रभावित इलाका चीन सीमा के पास है। ये सड़कें और पुल चीन से सामान लाने-भेजने के लिए जरूरी हैं। चीन नेपाल का दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। नेपाल पुलिस के मुताबिक, देश में बाढ़ और भूस्खलन से मरने वालों की संख्या बढ़कर 626 हो गई है।

अमेरिका ने वेनेजुएला का 65 अरब बैरल तेल कब्जे में लिया, भारत को 40 साल की जरूरत के बराबर

वॉशिंगटन डीसी/काराकस। अमेरिका ने वेनेजुएला के 65 अरब बैरल से ज्यादा तेल भंडार पर कंट्रोल हासिल करने के लिए एक समझौता किया है। यह आंकड़ा इसलिए भी बड़ा है, क्योंकि अमेरिका के पास खुद करीब 46 अरब बैरल तेल है। अमेरिकी विदेश विभाग के मुताबिक, यह काम वेनेजुएला में काम करने वाली एक निजी कंपनी के साथ मिलकर किया जाएगा। इस साझेदारी से निकलने वाले तेल में अमेरिका को 55फीसदी हिस्सा मिलेगा। हालांकि, इस निजी कंपनी का नाम अभी नहीं बताया गया है। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने सोशल मीडिया पर पोस्ट कर इसे दुनिया की सबसे बड़ी डील बताया है। वेनेजुएला की राष्ट्रपति डेल्सी रोड्रिग्ज ने भी इसे ऐतिहासिक समझौता बताया है। डोनाल्ड ट्रम्प अमेरिकी राष्ट्रपतिः- अमेरिका ने वेनेजुएला के साथ दुनिया की सबसे बड़ी ऑयल डील की है। अब अमेरिका का तेल भंडार दोगुने से भी ज्यादा हो जाएगा। इससे लंबे समय तक अमेरिकियों के लिए पेट्रोल की कीमतें कम करने में मदद मिलेगी।इतना तेल भारत की 40 साल की जरूरत के बराबरः- वेनेजुएला के पास दुनिया का सबसे

बड़ा तेल भंडार है। वहां 300 अरब बैरल से ज्यादा तेल मौजूद है। ट्रम्प जिस 65 अरब बैरल तेल पर अमेरिकी कंट्रोल की बात कर रहे हैं, वह वेनेजुएला के कुल तेल भंडार का करीब पांचवां हिस्सा है। वेनेजुएला के पास इतना बड़ा तेल भंडार होने के बावजूद वहां उत्पादन काफी कम है। आर्थिक संकट, निवेश की कमी और अमेरिकी प्रतिबंधों के कारण उसका तेल उद्योग लंबे समय से मुश्किल में है। भारत से तुलना करें तो देश हर साल करीब 1.6 से 1.7 अरब बैरल कच्चा तेल विदेशों से खरीदता है। इस हिसाब से 65 अरब बैरल तेल भारत के 40 साल के ऑयल इम्पोर्ट के बराबर है। यानी मात्रा के लिहाज से देखें तो ट्रम्प जिस 65 अरब बैरल तेल की बात कर रहे हैं, वह भारत की करीब चार दशक की तेल जरूरत के बराबर है। अमेरिका के हिस्से में कितना तेल आएगा- इस डील में सबसे अहम बात अभी भी साफ नहीं है। अमेरिका को वेनेजुएला के 65 अरब बैरल तेल का मालिकाना हक मिलेगा या सिर्फ उसके उत्पादन में बड़ा हिस्सा मिलेगा, यह समझना जरूरी है। अभी उपलब्ध जानकारी के मुताबिक, अमेरिका को साझेदारी से होने वाले तेल उत्पादन का 55फीसदी हिस्सा मिलेगा। लेकिन इस काम में शामिल निजी कंपनी का नाम और समझौते की पूरी शर्तें अभी सामने नहीं आई हैं। इसलिए 65 अरब बैरल तेल पर अमेरिका का कंट्रोल होने का मतलब यह नहीं है कि पूरा तेल अमेरिका का हो गया है। असल में अमेरिका को कितना अधिकार मिलेगा, यह डील की पूरी शर्तें सामने आने के बाद ही साफ होगा। 100 अरब डॉलर से ज्यादा निवेश- राष्ट्रपति रोड्रिग्ज के मुताबिक, समझौते के तहत वेनेजुएला के 17 तेल क्षेत्रों को दोबारा विकसित किया जाएगा। इसमें 100 अरब डॉलर से ज्यादा का निवेश होने की बात कही गई है। उनका कहना है कि इस पूरे काम से वेनेजुएला की सरकार को आने वाले समय में करीब 209 अरब डॉलर टैक्स मिल सकता है। उन्होंने कहा कि वेनेजुएला अपने बड़े तेल भंडार का इस्तेमाल देश के विकास के लिए करना चाहता है। मादुरो की गिरफ्तारी के बाद बदले रिश्ते- अमेरिका और वेनेजुएला के रिश्ते जनवरी में निकोलस मादुरो की गिरफ्तारी के बाद बदल गए। डेल्सी रोड्रिग्ज के राष्ट्रपति बनने के बाद दोनों देशों में बातचीत बढ़ी और वेनेजुएला का तेल इसका सबसे अहम मुद्दा बन गया। इसके बाद वेनेजुएला ने तेल उद्योग के नियम बदले। नए नियमों से विदेशी कंपनियों को ज्यादा अधिकार मिले और अमेरिकी कंपनियों के लिए वहां निवेश और तेल उत्पादन बढ़ाने का रास्ता खुल गया।

मोदी सेंट्रल एशिया के दौरे पर रवाना, पहले उज्बेकिस्तान जाएंगे, फिर किर्गीजस्तानमें एससीओ समिट में हिस्सा लेंगे
जिनपिंग-पुतिन से मुलाकात संभव

नयी दिल्ली। पीएम मोदी शनिवार सुबह दो देशों के लिए दिल्ली से रवाना हुए। उनका यह चार दिन का दौरा होगा। पहले वे उज्बेकिस्तान जाएंगे फिर किर्गीजस्तान का दौरा करेंगे। पीएम चार साल बाद सेंट्रल एशिया के दौरे पर जा रहे हैं। वे किर्गीजस्तान की राजधानी बिश्केक में होने वाली शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की 26वीं समिट में भी हिस्सा लेंगे। इस दौरान वे चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग और रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन समेत कई नेताओं के साथ मुलाकात कर सकते हैं। उज्बेकिस्तान दौराः पीएम की द्विपक्षीय बातचीत, लाल बहादुर स्मारक भी जाएंगे-मोदी 29-30 अगस्त को उज्बेकिस्तान की राजधानी ताशकंद में रहेंगे। प्रधानमंत्री के रूप में यह उनका चौथा उज्बेकिस्तान दौरा होगा। ताशकंद में मोदी और राष्ट्रपति शावकत मिर्जियोयेव के बीच बैठक होगी। इसमें व्यापार, निवेश, रक्षा, ऊर्जा, शिक्षा और आपसी सहयोग बढ़ाने पर चर्चा की जाएगी। बैठक में भारत के विकसित भारत 2047 और उज्बेकिस्तान-2030 विजन के तहत सहयोग बढ़ाने के नए रास्तों पर भी बात होगी। मोदी ताशकंद में लाल बहादुर शास्त्री स्मारक और महात्मा गांधी सेंटर का भी दौरा कर सकते हैं। किर्गीजस्तान दौराः मोदी एससीओ समिट में शामिल होंगे, जिनपिंग-पुतिन से मुलाकात- उज्बेकिस्तान दौरे के बाद प्रधानमंत्री मोदी 31 अगस्त से 1 सितंबर तक किर्गीजस्तान की राजधानी बिश्केक में रहेंगे। यहां वे एससीओ की 26वीं समिट में हिस्सा लेंगे। भारत 2017 से एससीओ का पूर्ण सदस्य है। समिट में सुरक्षा, आतंकवाद,

व्यापार, कनेक्टिविटी और आर्थिक सहयोग जैसे मुद्दों पर चर्चा होगी। समिट के दौरान मोदी की चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग, रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और अन्य देशों के नेताओं से मुलाकात हो सकती है। मोदी बिश्केक में होने वाले 6वें वर्ल्ड नोमैड गेम्स के उद्घाटन समारोह में भी शामिल होंगे। भारत के लिए क्यों अहम है यह दौराः 4 पॉइंट-1. खनिजों का भंडारः भारत लंबे समय से मध्य एशिया के देशों के साथ अपने रिश्ते मजबूत करने की कोशिश कर रहा है। मध्य एशिया तेल, गैस, यूरेनियम और अन्य महत्वपूर्ण खनिजों का बड़ा भंडार है। 2. ऊर्जा जरूरतः भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए इस क्षेत्र के देशों के साथ सहयोग बढ़ाना चाहता है। 3. नए बिजनेस रूटः भारत मध्य एशिया के देशों के साथ व्यापार भी बढ़ाना चाहता है। इसके लिए वह नए व्यापार और परिवहन मार्ग विकसित करने पर काम कर रहा है। 4. आतंकवाद के खिलाफ मुहिमः अफगानिस्तान की स्थिति और आतंकवाद जैसे मुद्दों पर भी भारत इन देशों के साथ सहयोग बढ़ा रहा है। प्रधानमंत्री मोदी के पिछले 3 उज्बेकिस्तान दौरेः- 2015ः प्रधानमंत्री बनने के बाद मोदी पहली बार उज्बेकिस्तान पहुंचे थे। इस दौरे में दोनों देशों ने व्यापार, ऊर्जा और सुरक्षा सहयोग बढ़ाने पर जोर दिया था।2016ः मोदी ताशकंद में एससीओ समिट में शामिल हुए थे। इसी सम्मेलन के दौरान भारत को संगठन की पूर्ण सदस्यता देने की प्रक्रिया आगे बढ़ी थी। भारत 2017 में एससीओ का पूर्ण सदस्य बना। 2022ः मोदी समरकंद में एससीओ समिट में शामिल हुए थे। रूस-यूक्रेन युद्ध के बीच उन्होंने रूसी राष्ट्रपति पुतिन से कहा था, 'आज का युग युद्ध का नहीं है।' उनका यह बयान दुनियाभर में चर्चा का विषय बना था। अब एससीओ के बारे में जानिए, 2001 में हुई थी इसकी स्थापना- शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) एक क्षेत्रीय अंतरराष्ट्रीय संगठन है जिसकी स्थापना 2001 में चीन, रूस, कजाकिस्तान, किर्गीजस्तान, ताजिकिस्तान और उज्बेकिस्तान ने मिलकर की थी। बाद में भारत और पाकिस्तान 2017 में इससे जुड़े।

रेडियो खराबी से ट्रम्प का हेलिकॉप्टर विमान के करीब पहुंचा था, एटीएस को एक हफ्ते पहले से दिक्कत की जानकारी थी, फिर भी चूक हुई

वॉशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प का हेलिकॉप्टर मरीन वन और एक यात्री विमान के करीब

पहुंचने की वजह सामने आई है। जांच के मुताबिक रेडियो संपर्क में आई खराबी के कारण एयर ट्रैफिक कंट्रोलर्स (एटीएस) को हेलिकॉप्टर की उड़ान से पहले मिलने वाली जरूरी चेतावनी नहीं मिल पाई। यह घटना 4 अगस्त को हुई थी। ट्रम्प को लेकर मरीन वन व्हाइट हाउस के पास से उड़ान भर रहा था, तभी रीगन नेशनल एयरपोर्ट से एक यात्री विमान को भी टेकऑफ की मंजूरी मिल गई। हेलिकॉप्टर और विमान कुछ देर के लिए काफी करीब आ गए, लेकिन पायलटों की सतर्कता से टकराव टल गया। जांच में यह भी सामने आया कि एयर ट्रैफिक कंट्रोलर्स को इस रेडियो खराबी की जानकारी एक हफ्ते पहले ही हो गई थी। इसके बावजूद घटना वाले दिन राष्ट्रपति की सुरक्षा में चूक हुई। व्हाइट हाउस में निर्माण के कारण रेडियो में खराबी आई- जांच में पता चला कि व्हाइट हाउस में चल रहे निर्माण के कारण मरीन वन के उड़ान भरने की जगह बदल दी गई थी। हेलिकॉप्टर ने द एलिप्स से उड़ान भरी थी। द एलिप्स और रीगन एयरपोर्ट के पास लगे रेडियो रिसीवर के बीच सीधा संपर्क ठीक नहीं था। इसी वजह से हेलिकॉप्टर की रेडियो कॉल कंट्रोल टावर तक सही तरीके से नहीं पहुंच पाई। एक हफ्ते पहले मीटिंग में दिक्कत पर चर्चा हुई थी-घटना से पहले 30 जुलाई को मरीन वन के पायलटों और एयर ट्रैफिक कंट्रोलर्स की बैठक हुई थी। इसमें तीन मिनट पहले दी जाने वाली फ्लाइट वॉर्निंग के कंट्रोल टावर तक नहीं पहुंचने की बात सामने आई थी। तब तय किया गया था कि रेडियो संपर्क न होने पर किसी दूसरे विमान या व्यक्ति के जरिए यह सूचना दी जाएगी। 4 अगस्त को पायलटों ने जॉइंट बेस एनाकोस्टिया-बोलिंग के जरिए भी कंट्रोल टावर तक संदेश पहुंचाने की कोशिश की। हालांकि, यह तरीका भी काम नहीं आया। कंट्रोलर्स को मरीन वन के उड़ान भरने की जानकारी नहीं मिली और इसी दौरान यात्री विमान को टेकऑफ की मंजूरी दे दी गई। ट्रम्प का हेलिकॉप्टर और विमान सिर्फ 1.3 किमी दूर थे- एनटीएसबी के शुरुआती आंकड़ों के मुताबिक, दोनों विमानों के बीच सबसे कम दूरी करीब 1.3 किलोमीटर थी।

बांग्लादेश चीन से जे-10 लड़ाकू विमान खरीदेगा, कहा- 'इसने भारत के राफेल गिराए', भारत को कैसे घेर रहे चीन-पाकिस्तान

नयी दिल्ली/ढाका। बांग्लादेश ने चीन से जे-10ई फाइटर जेट खरीदने का ड्राफ्ट एग्रीमेंट तैयार कर लिया। ये एक सामान्य बात लगती है। लेकिन इसकी घोषणा हुआ नहीं, सिर्फ मसौदा तैयार हुआ है। ड्राफ्ट एग्रीमेंट के मुताबिक- बांग्लादेश, चीन से करीब 20 से 24 'जे-10सीई' फाइटर जेट खरीदेगा। पूरी डील करीब 2.2

अरब डॉलर यानी करीब 21 हजार करोड़ रुपए की है। एक जेट की कीमत 62.7 मिलियन डॉलर, यानी करीब 595 करोड़ रुपए है। पायलट्स की ट्रेनिंग, पार्ट्स, मेंटेनेंस सपोर्ट वगैरह का खर्च जोड़कर बांग्लादेश को एक जेट 115 मिलियन डॉलर, यानी करीब 1092 करोड़ रुपए का पड़ेगा। बांग्लादेश 2036 तक, यानी दस सालों में पूरी रकम चुकाएगा। हालांकि बांग्लादेश को जेट्स कब तक मिलेंगे, ये अभी साफ नहीं है। इस डील के बाद करते हुए बांग्लादेशी मंत्री जाहिद उर रहमान ने जो दलील दी, वो भारत के लिए ज्यादा चिंताजनक है। रहमान ने कहा- 'मई 2025 में भारत-पाकिस्तान की जंग के दौरान जिस चीनी जे-10सी ने भारत के राफेल मार गिराए, बांग्लादेश उसी जेट पर भरोसा जताने जा रहा है।' हालांकि, ऑपरेशन सिंदूर के दौरान राफेल गिरने के दावों की आज तक पुष्टि नहीं हो सकी। बांग्लादेश और चीन के बीच जे-10सी को लेकर क्या सौदा हुआ है? अभी सौदा बांग्लादेश, चीनी जे-10सीई खरीदने वाला दूसरा देश बन जाएगा। पहला पाकिस्तान है। चीनी वायुसेना भी एक सीट वाले मल्टीरोल कॉम्बैट जेट जे-10सी का इस्तेमाल करती है। बांग्लादेशी पीएम तारिक रहमान के सलाहकार जाहिद उर रहमान ने बताया कि अगर 30 जून 2027 तक डील को बजट में मंजूरी मिल गई, तो खरीद प्रक्रिया आगे बढ़ेगी। इसी दौरान जाहिद रहमान ने कहा, 'भारत और पाकिस्तान जंग में थे, तो भारत का राफेल फाइटर जेट चीन के जे-10 ने गिराया था। ये अब साबित हो चुका है। बांग्लादेश ने राफेल के खिलाफ जे-10 के परफॉरमेंस पर गौर किया है। चीनी फाइटर जेट, यूरोपियन एयरक्राफ्ट- यूरोफाइटर टाइफून और राफेल से सस्ते भी हैं।' क्या वाकई चीनी जेट ने भारत के राफेल मार गिराए थे? जवाबः मई 2025 में पाक सेना प्रवक्ता लेफ्टिनेंट जनरल अहमद शरीफ के दावे से इस बहस की शुरुआत हुईः-अहमद शरीफ ने कहा था, 'पाकिस्तान ने भारत के तीन राफेल, एक सुखोई-30 और एक मिग-29 विमान को मार गिराया है। इनमें से कुछ पर चीन से मिली लॉन्ग रेंज की पीएल-15 मिसाइल्स से हमला हुआ था।' कुछ विदेशी मीडिया में भी पाकिस्तान के सूत्रों के हवाले से ऐसी खबरें चलीं।**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

भागवत न्यूयॉर्क में दुनिया के पहले इस्कॉन मंदिर पहुंचे, बोले- विश्व में कई तरह के संघर्ष, कृष्ण चेतना से ही शांति आ सकती है

न्यूयॉर्क। आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने शुक्रवार को न्यूयॉर्क में दुनिया के पहले इस्कॉन सेंटर का दौरा किया। मंदिर में श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि आज दुनिया में कई तरह के संघर्ष हैं। ऐसे समय में 'कृष्ण चेतना' शांति ला सकती है। उन्होंने कहा कि दुनिया में भले ही अलग-अलग तरह की विविधताएं, मतभेद और संघर्ष हों, लेकिन अगर लोगों को यह समझ आने लगे कि सब कुछ कृष्ण का ही हिस्सा है, तो दुनिया में बेहतर और शांतिपूर्ण माहौल बनाया जा सकता है। भागवत 26 सेकंड एवेन्यू स्थित उस जगह पर भी पहुंचे, जहां स्वामी प्रभुपाद ने जुलाई 1966 में इस्कॉन की स्थापना की थी। इसे मैचलैस गिफ्ट्स भी कहा जाता है। इस्कॉन इस साल अपनी स्थापना की 60वीं वर्षगांठ मना रहा है। इस्कॉन के 120 देशों में 1,300 मंदिर हैं। 29 अगस्त को मैडिसन स्क्वायर में भागवत का कार्यक्रम-आरएसएस प्रमुख 25 अगस्त को न्यूयॉर्क पहुंचे थे। वे आरएसएस के 100 साल पूरे होने के मौके पर तीन देशों, अमेरिका, कनाडा और ब्रिटेन दौरे पर हैं। इस दौरान वे भारतीय समुदाय और अलग-अलग संगठनों के कार्यक्रमों में हिस्सा लेने वाले हैं। भागवत 29 अगस्त को न्यूयॉर्क के मैडिसन स्क्वायर गार्डन में 'यूनिवर्सल वननेस सेलिब्रेशन' कार्यक्रम में हिस्सा लेंगे। यह कार्यक्रमएए के 100 साल पूरे होने के मौके पर आयोजित किए जा रहे कार्यक्रमों का हिस्सा है। अमेरिकन हिंदूज फॉर एंगेजमेंट एंड डायलॉग (अहेड) फोरम आयोजक है। कार्यक्रम में भागवत का संबोधन भी होगा। 61 संगठनों ने कार्यक्रम को विरोध किया, रद्द करने की मांग- भागवत के मैडिसन स्क्वायर गार्डन

में होने वाले कार्यक्रम का विरोध भी हो रहा है। अमेरिका के कई हिंदू संगठनों समेत 61 इंटरफेथ और धर्मनिरपेक्ष संगठनों ने कार्यक्रम के खिलाफ खुला पत्र जारी किया है। मंगलवार को हिंदूस फॉर ह्यूमन राइट्स, इंडियन अमेरिकन मुस्लिम काउंसिल और इंटरफेथ सेंटर ऑफ न्यूयॉर्क समेत कई संगठनों ने न्यूयॉर्क सिटी हॉल के बाहर प्रेस कॉन्फ्रेंस की थी। इन संगठनों ने कार्यक्रम को रद्द करने की मांग की है। न्यूयॉर्क मेयर ने कहा था- लोगों को बांटने वाली सोच के खिलाफ हूं-न्यूयॉर्क के मेयर जोहरान ममदानी भी कार्यक्रम को लेकर अपनी असहमति जता चुके हैं। उन्होंने आरएसएस को 'बांटने वाली सोच' वाला बताया। ममदानी ने कहा कि वह आरएसएस के इस कार्यक्रम का समर्थन नहीं करते। हालांकि, उन्होंने कहा कि उन्हें नहीं पता कि निजी तौर पर आयोजित कार्यक्रम को रद्द करने का अधिकार शहर प्रशासन के पास है या नहीं। हिंदू अमेरिकन फाउंडेशन ने जारी की सुरक्षा सलाह- हिंदू अमेरिकन फाउंडेशन (एचएएफ) ने कार्यक्रम से पहले सुरक्षा एडवाइजरी जारी की है। संगठन ने कार्यक्रम में शामिल होने वाले लोगों से सतर्क रहने, आसपास की गतिविधियों पर नजर रखने और किसी भी तरह के विवाद से बचने की अपील की है। एचएएफ ने कहा कि कार्यक्रम को रोकने और रद्द कराने की कोशिशें की गई हैं। संगठन ने न्यूयॉर्क प्रशासन से कार्यक्रम में शामिल होने वाले लोगों की सुरक्षा और उनके नागरिक अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित करने की अपील की है। अमेरिकी आयोग ने आरएसएस पर बैन की मांग की थी-भागवत के अमेरिका दौरे से पहले अमेरिकी अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता आयोग (USCIRF) ने आरएसएस पर बैन लगाने की मांग की है। आयोग ने 19 अगस्त को अमेरिकी सरकार से आरएसएस नेताओं को हाई लेवल राजनयिक सुविधाएं नहीं देने और उनसे आधिकारिक मुलाकात नहीं करने की अपील भी की।

क्वेटा में 200 साल पुराना गुरुद्वारा गिराया,शॉपिंग मॉल बनाया जा रहा, बीजेपी बोली- सिखों की विरासत खत्म की जा रही

इस्लामाबाद/क्वेटा। पाकिस्तान के बलूचिस्तान की राजधानी क्वेटा में करीब 200 साल पुराने ऐतिहासिक 'श्री गुरु सिंह सभा गुरुद्वारा' को गिरा दिया गया। अब इस जगह पर एक मॉल का निर्माण किया जा रहा है। बलूचिस्तान गुरुद्वारा सिंह सभा के सदस्य सरदार जसबीर सिंह के अनुसार, पूरा सिख समाज इसका विरोध कर रहा है, लेकिन अभी तक सरकार कोई एक्शन नहीं ले रही। उन्होंने बताया कि बलूचिस्तान में कभी 12 गुरुद्वारे थे, जिनमें से अब सिर्फ 2 बचे हैं।गुरुद्वारे को गिराए जाने पर भारत में भी कड़ा विरोध हो रहा है। भाजपा के नेशनल स्पोक्सपर्सन आरपी सिंह ने कहा कि ये पाकिस्तान में सिखों की विरासत खत्म करने की कोशिश है। अकाल तख्त साहिब को पाकिस्तान सरकार के सामने मामला उठाना चाहिए और स्वतंत्र जांच होनी चाहिए। 200 साल पुराने गुरुद्वारे में खुला था स्कूल- क्वेटा के आर्चर रोड स्थित श्री गुरु सिंह सभा गुरुद्वारा परिसर में बाद में सेंट गैब्रिएल स्कूल संचालित हो रहा था। सिख समुदाय के नेता सरदार जसबीर सिंह के मुताबिक, अब उसी गुरुद्वारे को ढहाकर यहां शॉपिंग प्लाजा का निर्माण कराया जा रहा है। मामला बलूचिस्तान हाई कोर्ट तक पहुंचा, लेकिन कोर्ट ने फिलहाल निर्माण रोकने से इनकार कर दिया है। निजी बिल्डर को जमीन बेची गई- सिख समुदाय के मुताबिक, यह जमीन श्री गुरु सिंह सभा से जुड़ी संपत्ति थी। आरोप है कि इवैक्यूई ट्रस्ट प्रॉपर्टी बोर्ड (ईटीपीबी) ने इसे एक निजी बिल्डर को बेच दिया। अब सवाल उठ रहा है कि ईटीपीबी को इस धार्मिक संपत्ति को बेचने का अधिकार किस आधार पर मिला और जमीन की बिक्री की प्रक्रिया क्या थी? इस पर पाकिस्तान सरकार या ईटीपीबी की ओर से आधिकारिक जवाब सामने आना बाकी है। 4 पॉइंट्स में पढ़ें क्या बोले आरपी सिंह- मॉल का निर्माण तुरंत रोकने की मांगः भाजपा नेशनल स्पोक्सपर्सन आरपी सिंह ने गुरुद्वारा साहिब की जमीन पर हो रहे मॉल के निर्माण को तत्काल रोकने की मांग की। उन्होंने कहा कि ऐतिहासिक गुरुद्वारा परिसर का पुनर्निर्माण और संरक्षण सुनिश्चित किया जाना चाहिए। साथ ही बलूचिस्तान ही नहीं, पूरे पाकिस्तान में बचे सिख धार्मिक स्थलों और उनकी संपत्तियों की सुरक्षा की मांग की। गुरुद्वारा गिराने वालों पर एक्शन होः आरपी सिंह ने गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा साहिब को गिराए जाने की निंदा करते हुए इसके लिए जिम्मेदार लोगों पर कार्रवाई की मांग की। उन्होंने कहा कि धार्मिक स्थल को हटाकर वहां व्यावसायिक निर्माण किया जाना गंभीर मामला है। उन्होंने गुरुद्वारा विध्वंस की पूरी और स्वतंत्र जांच कराने की भी मांग उठाई।

दिल्ली-एनसीआर में सीएनजी रु3.89 महंगी, कीमत रु83 प्रति किलो से बढ़कर करीब रु87 हुई

नयी दिल्ली। दिल्ली-एनसीआर में सीएनजी की कीमत रु3.89 प्रति किलो बढ़ गई है। इंद्रप्रस्थ गैस लिमिटेड (आईजीएल) के मुताबिक, नई कीमत शनिवार सुबह 6 बजे से लागू होगी। इसके बाद दिल्ली में

सीएनजी रु83.09 से बढ़कर रु86.98 प्रति किलो हो जाएगी। इस साल सीएनजी के दाम में यह पांचवीं बढ़ोतरी है। आईजीएल के मुताबिक, इस बार कीमत बढ़ाने की मुख्य वजह एलएनजी की बढ़ती आयात लागत, अंतरराष्ट्रीय गैस कीमतों में तेजी और सीएनजी की बढ़ती मांग है। इससे पहले मई में पश्चिम एशिया संघर्ष के बीच अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा कीमतों में तेजी के चलते आईजीएल ने 10 दिनों के भीतर चार फेज में सीएनजी के दाम कुल रु6 प्रति किलो बढ़ाए थे। नई कीमतों के बाद नोएडा और गाजियाबाद में सीएनजी रु95.59 प्रति किलो हो गई है। मेरठ में इसकी कीमत रु95.47 और गुरुग्राम में रु92.01 प्रति किलो है। पेट्रोल और डीजल की तरह सीएनजी के दाम भी अलग-अलग राज्यों में अलग होते हैं। इसकी एक वजह राज्यों में लागू अलग-अलग वैट दरें हैं। दिल्ली में कीमत बढ़ने के बावजूद आईजीएल ने कहा है कि सीएनजी उपभोक्ताओं के लिए दूसरे ईंधनों के मुकाबले किफायती विकल्प बनी हुई है। होर्मुज संकट से एलएनजी की सप्लाई और कीमत पर असर- आईजीएल ने बताया कि पश्चिम एशिया में संकट बढ़ने से होर्मुज स्ट्रेट के जरिए एलएनजी की सप्लाई और माल ढुलाई प्रभावित हुई है। संकट से पहले की तुलना में अब वैश्विक एलएनजी कीमतें करीब दोगुनी हो गई हैं। यूरोप में सर्दियों से पहले गैस भंडारण बढ़ाने की जरूरत ने भी कीमतों पर दबाव बढ़ाया है। सीएनजी की बढ़ती मांग से आयात पर निर्भरता बढ़ी- आईजीएल के मुताबिक, भारत में सीएनजी की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए इनपुट गैस का बड़ा हिस्सा आयातित स्पॉट एलएनजी से पूरा किया जा रहा है। महंगी एलएनजी और बढ़ती घरेलू मांग से आईजीएल की इनपुट गैस लागत बढ़ी। इसी असर को कम करने के लिए कंपनी ने सीएनजी के दाम रु3.89 प्रति किलो बढ़ाए। ऑटो-टैक्सी और माल ढुलाई पर पड़ सकता है असर-दिल्ली-एनसीआर में बड़ी संख्या में ऑटो, टैक्सी, बस और माल ढोने वाले वाहन सीएनजी से चलते हैं। ऐसे में ईंधन महंगा होने का असर इन वाहनों के संचालन खर्च पर पड़ सकता है। सीएनजी की कीमत बढ़ने से आगे चलकर यात्री किराए और माल ढुलाई की लागत पर भी असर पड़ने की संभावना है। खासकर उन लोगों और कारोबारों पर इसका ज्यादा असर हो सकता है, जो रोजाना सीएनजी से चलने वाले वाहनों पर निर्भर हैं। एशिया में एलएनजी बेंचमार्क कीमत दोगुने से ज्यादा हुई- अंतरराष्ट्रीय बाजार में एलएनजी की कीमतों में तेजी का अंदाजा एशिया के जेकेएम बेंचमार्क से लगाया जा सकता है। इस साल फरवरी में इसकी कीमत करीब 11 डॉलर प्रति एमएमबीटीयू थी, जो अगस्त में बढ़कर 23.4 डॉलर हो गई। यूरोप के टीटीएफ गैस बेंचमार्क में भी इसी दौरान बड़ा उछाल आया। फरवरी में यह करीब 11.3 डॉलर प्रति एमएमबीटीयू था, जो अगस्त में बढ़कर 23.3 डॉलर हो गया। इन वैश्विक कीमतों में तेजी का असर भारत में आयातित गैस की लागत पर भी पड़ा है।

दबिश के दौरान 36 लीटर शराब व 150 किलो लहन बरामद

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। गुरूवार को जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका के आदेशानुसार जनपद में अवैध अवैध कच्ची शराब बनाने के अड्डों एवं संदिग्ध घरों पर दबिश दी गई। कार्रवाई के दौरान कुल 36 लीटर अवैध कच्ची शराब एवं 150

शराब के निर्माण, बिक्री एवं तस्करी के विरुद्ध चलाए जा रहे प्रवर्तन अभियान के अंतर्गत आबकारी निरीक्षक क्षेत्र-2 रोबिन आर्य मय हमराह टीम द्वारा विभिन्न स्थानों पर दबिश की कार्रवाई की गई। आबकारी टीम द्वारा महराजगंज तहसील के थाना बछरावां अंतर्गत संदिग्ध ग्राम पश्चिम गाँव, शेरा बरौला एवं बद्री प्रसाद का पुरवा में किलोग्राम लहन बरामद किया गया। बरामद लहन को मौके पर ही नष्ट कर दिया गया।

प्रकरण में आबकारी अधिनियम की सुसंगत धाराओं के अंतर्गत कुल 02 अभियोग पंजीकृत किए गए। आबकारी विभाग द्वारा अवैध शराब के निर्माण, बिक्री एवं तस्करी के विरुद्ध अभियान लगातार जारी रहेगा।

राष्ट्रीय खेल दिवस पर 29 से 31 अगस्त तक होंगी विभिन्न खेल प्रतियोगिताएं

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। क्रीड़ाधिकारी धीरेंद्र कुमार पुरुषोत्तम ने बताया कि मेजर ध्यानचंद जी के जन्मदिवस (29 अगस्त) के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय खेल दिवस 2026 के अवसर पर जिला खेल कार्यालय, पं. मोतीलाल नेहरू स्टेडियम, रायबरेली में 29 से 31 अगस्त 2026 तक विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। 29 अगस्त को 14 वर्षीय बालक हॉकी प्रतियोगिता, 30 अगस्त को बालक जूनियर वर्ग कबड्डी प्रतियोगिता तथा 31 अगस्त को बालक जूनियर वर्ग फुटबॉल प्रतियोगिता आयोजित होगी। प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने के इच्छुक बालक कार्यालय दिवस में निःशुल्क प्रवेश करा सकते हैं। प्रतियोगिताओं से संबंधित अधिक जानकारी के लिए जिला खेल कार्यालय, रायबरेली में संपर्क किया जा सकता है।

घर का आंगन 25 फीट धस गया जिसमे गिरकर लड़की की हुई मौत, 7 घंटे फंसी रही, 60 जवानों ने गड्ढा खोदकर निकाला, बोरवेल के ऊपर फर्श बना दी थी

कानपूर। कानपुर में घर का आंगन अचानक धंसने से 25 फीट गहरे गड्ढे में गिरी लड़की को 7 घंटे के ऑपरेशन के बाद बाहर निकाल लिया गया। लेकिन अस्पताल में उसे डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। हादसा शुक्रवार सुबह 6:40 बजे हुआ। रक्षाबंधन पर 18 साल की यशी सविता नहाकर बाथरूम से बाहर निकली थी। जैसे ही उसने अपना एक कदम

आंगन की तरफ बढ़ाया, नीचे की जमीन धंस गई। यशी नीचे मौजूद बोरिंग में समा गई। उसे संभलने का मौका तक नहीं मिला। हादसे के वक्त घर में सिर्फ बड़ी बहन थी। मां-बाप घर से 200 मीटर दूर भैंस बांधने गए थे।

बहन ने देखा तो उसने पहले रस्सी डालकर यशी को निकालने की कोशिश की।

इतनी देर में मिट्टी और धंस गई और लड़की नीचे अंदर चली गई। बहन चीखते हुए घर से बाहर भागी।

मां-बाप और पड़ोसियों को बुलाया। तुरंत पुलिस को सूचना दी गई। 35 मिनट बाद पुलिस आई, लेकिन वह बेबस दिखी।

घर से 22 किमी दूर जाजमऊ से फायरब्रिगेड को बुलाया गया। तब तक डेढ़ घंटे बीत चुके थे। 8 बजे फायरकर्मी मौके पर आए। उन्होंने उसी गड्ढे को फावड़े से खोदना शुरू किया, जिसमें यशी गिरी थी।

मिट्टी धंसकर गड्?ढे में गिर रही थी, इसलिए रेस्क्यू रोक दिया गया। फिर जेसीबी मंगवाई गई और बरामदे को तोड़ा गया। हादसा स्थल से 10 फीट दूर जेसीबी से गड्?ढा खोदा गया। 10 बजे तक एनडीआरएफ और एसडीआरएफ से करीब 35 किमी दूर महाराजपुर थाना क्षेत्र के पुरवामीर गांव का है। यशी, पिता विनोद, मां रेखा, बड़ी बहन ऋचा और भाई अमित उर्फ भास्कर के साथ रहती थी। यशी सबसे छोटी थी। दो बहनों रूपा और अनुपमा की शादी हो चुकी है।

भाई अमित लखनऊ में एक मेडिकल कंपनी में जॉब करता है। पिता बंटाई पर खेती करते हैं।

तीन साल पहले बोरिंग कराई, पानी नहीं निकला तो ऊपर फर्श बनवा दी-घरवालों ने बताया, करीब तीन साल पहले 630 स्क्वॉयर फीट में घर बनाया गया, जो 18 फीट चौड़ा और 35 फीट लंबा है।

घर की शुरुआत में एक बरामदा है। फिर आंगन और आखिर में कमरा है। आंगन से सटा बाथरूम है।

घर निर्माण के समय आंगन में बोरिंग कराई गई थी, लेकिन पानी नहीं निकलने के कारण उसे छोड़ दिया गया और दूसरी जगह नई बोरिंग कराई गई।

उसी पुरानी बोरिंग के ऊपर फर्श बना दी गई थी। लगातार बारिश के कारण जमीन कमजोर हो गई थी। अब जमीन धंसने से यह हादसा हो गया।

जिला व्यापार बन्धु की बैठक सम्पन्न,व्यापारियों की समस्याओं के त्वरित निस्तारण के दिए गए निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। गुरूवार को जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका के निर्देशानुसार अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) सिद्धार्थ की अध्यक्षता में जिला व्यापार बन्धु की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में व्यापारियों से संबंधित विभिन्न समस्याओं एवं विभागीय प्रकरणों पर विस्तार से चर्चा की गई तथा संबंधित अधिकारियों को समस्याओं का प्राथमिकता के आधार पर निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। बैठक में व्यापारियों द्वारा विभिन्न विभागों से संबंधित समस्याएं एवं सुझाव प्रस्तुत किए गए। अपर जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि व्यापारियों की समस्याओं को गंभीरता से लेते हुए नियमानुसार प्रभावी एवं समयबद्ध कार्यवाही सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि व्यापारियों को किसी प्रकार की अनावश्यक कठिनाई न हो तथा शासन की मंशा के अनुरूप व्यापारिक गतिविधियों के लिए बेहतर एवं सुगम वातावरण उपलब्ध कराया जाए। बैठक में नगर मजिस्ट्रेट राम अवतार, उपायुक्त राज्यकर परमहंश श्रीवास्तव, अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. अरविन्द कुमार, अधिशासी अधिकारी नगर पालिका स्वर्ण सिंह सहित संबंधित विभागों के अधिकारी एवं व्यापार बन्धु के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

बाढ़ से बचाव एवं राहत उपायों को लेकर ग्रामीणों को किया गया जागरूक,ग्राम हसनपुर एवं कोडारी मजरे ऐमापुर में बाढ़ राहत चौपाल आयोजित की गई

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। गुरूवार को जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका के निर्देशानुसार जनपद में चौपाल में राजस्व निरीक्षक, क्षेत्रीय लेखपाल, पशु चिकित्सा विभाग, चिकित्सा विभाग सहित संबंधित विभागों के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे। चौपाल के दौरान ग्रामीणों को बाढ़ से बचाव, डूबने की घटनाओं की रोकथाम, बाढ़ के दौरान उत्पन्न होने वाली विभिन्न समस्याओं, आवश्यक सुरक्षा उपायों, सतर्कता एवं राहत व्यवस्था के संबंध में विस्तार से जागरूक किया गया। अधिकारियों ने ग्रामीणों को आपदा की स्थिति में घबराने के बजाय सतर्कता बरतने तथा प्रशासन द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पालन करने की अपील की। ग्रामीणों को विशेष रूप से बच्चों को नदी, नालों एवं जलभराव वाले क्षेत्रों से दूर रखने के लिए जागरूक किया गया। साथ ही किसी भी आपात स्थिति में तत्काल संबंधित अधिकारियों एवं आपातकालीन सेवाओं से सहायता लेने की अपील की गई। चौपाल के माध्यम से ग्रामीणों को प्रशासन द्वारा बाढ़ से निपटने के लिए किए जा रहे राहत एवं बचाव कार्यों की जानकारी भी दी गई तथा उनकी समस्याओं एवं आवश्यकताओं को सुना गया।

संभावित बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में ग्रामीणों को जागरूक करने के उद्देश्य से बाढ़ राहत चौपालों का आयोजन किया गया। तहसीलदार महराजगंज मंजुला मिश्रा की अध्यक्षता में ब्लॉक महराजगंज के ग्राम हसनपुर में तथा शिवगढ़ ब्लॉक के कोडारी मजरे ऐमापुर में नायब तहसीलदार की अध्यक्षता में बाढ़ राहत चौपाल आयोजित की गई।

बच्चियों ने योगी को बांधी राखी,जेल में बहनों को देखकर रोने लगे भाई, मां ने पोछे आंसू; बसों में खिड़की से चढ़े लोग

लखनऊ/वाराणसी/प्रयागराज/कानपुर। लखनऊ में रक्षाबंधन पर बच्चियों ने सीएम योगी आदित्यनाथ को राखी बांधी। मोबाइल का इस्तेमाल कम से कम करता है। बहुत जरूरी हुआ, तो बमुश्किल आधा घंटा ही मोबाइल देखता हूं। मैं प्रदेश के सभी बच्चों से कहूंगा कि मोबाइल फोन पर अनावश्यक समय बर्बाद करने के बजाय किताबें पढ़ना शुरू करें।' इधर, लखनऊ, मथुरा, अयोध्या, बलरामपुर और श्रावस्ती समेत प्रदेश भर की जेलों में बंद भाइयों को राखी बांधने उनकी बहनें पहुंचीं। लखनऊ जेल प्रशासन ने बहनों के लिए कोल्ड ड्रिंक की व्यवस्था की थी। वहीं, श्रावस्ती में बहनों को देखकर बंदी भाई रोने लगे। एक बंदी की मां ने अपने आंचल से उसके आंसू पोछे।

उधर, बाजारों में मिठाई और राखी की दुकानों पर खरीदारों की भारी भीड़ उमड़ी। बसों और ट्रेनों में जबरदस्त भीड़ के चलते यात्रियों को अंदर दाखिल होने के लिए कड़ी मशक्कत करनी पड़ी।

हालत यह रहे कि लोगों ने खिड़कियों के रास्ते बच्चों को अंदर बैठाया। कई लोग खड़े-खड़े सफर करने को मजबूर रहे। वहीं, काशी में बाबा विश्वनाथ को मंगला आरती के बाद रक्षासूत्र (राखी) पहनाया गया।

उनका ऑटोग्राफ लिया। राखी बंधवाने के बाद योगी ने सभी बच्चियों को चॉकलेट, शगुन के लिफाफे और तोहफे में एक-एक बैग दिया। इस दौरान उन्होंने बच्चों से बातचीत भी की। सीएम आवास आईं संस्कृति स्कूल की छात्रा श्रेयसी सिंह ने पूछा कि सोशल मीडिया के इस दौर में खुद को फोकस्ड कैसे रखें? इस पर योगी ने जवाब दिया-'मेरे जैसा व्यक्ति

वाराणसी में बेटे-बहू ने 24 घंटे लाश नहीं उठाने दी,बोले- मां रास्ते के लिए 2 साल दर-दर भटकीं

वाराणसी। 'पड़ोसी ने 2 साल पहले हमारे घर का रास्ता जबरदस्ती बंद कर दिया। सास रास्ता खुलवाने के लिए अधिकारियों के पास करीब 100 बार गईं। लेकिन, किसी ने नहीं सुनी। तीन ननद की शादी सिर्फ इसलिए इस घर से नहीं हो सकी, क्योंकि आने-जाने का रास्ता नहीं था। सास इस अफसोस में घुट रही थीं। आखिरकार उन्होंने खुदकुशी कर ली।' यह दर्द है कि वाराणसी की रहने वाली दीक्षा उपाध्याय का। उनकी 50 साल की सास कविता ने गुरुवार को टॉयलेट में फांसी लगाकर जान दे दी। पुलिस पहुंची तो परिवार ने करीब 24 घंटे तक लाश नहीं उठाने

दी। बहू दीक्षा ने कहा, सास की मौत के बाद अब प्रशासन हमें आश्वासन दे रहा है। लेकिन अब आश्वासन लेकर क्या करेंगे?कविता उपाध्याय का घर वाराणसी में पिंडरा तहसील इलाके के अहरक खास गांव में है। बुधवार शाम करीब 7 बजे उन्होंने टॉयलेट में फांसी लगा ली। जब बेटे विशाल ने टॉयलेट का दरवाजा खोला, तो मां फंदे से लटकती मिली। उसने चिल्लाकर परिवार के लोगों को बुलाया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम कराने की बात कही, तो परिजन ने इनकार कर दिया। उन्होंने कहा, 'हमारे रास्ते पर कुछ लोगों ने कब्जा कर रखा है। जब रास्ता ही नहीं है, तो शव किस रास्ते से लेकर जाएंगे?

डीएम की अध्यक्षता में सीएम डैशबोर्ड की समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। गुरूवार को जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका की अध्यक्षता में सीएम डैशबोर्ड के अंतर्गत राजस्व एवं विकास कार्यों की समीक्षा बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में सम्पन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने विभिन्न विभागों की प्रगति की समीक्षा करते हुए संबंधित अधिकारियों को निर्धारित लक्ष्यों एवं प्राथमिकताओं के अनुरूप कार्यों में तेजी लाने तथा योजनाओं का लाभ पात्र लाभार्थियों तक समय से पहुंचाने के निर्देश दिए। प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) की समीक्षा के दौरान जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि आवासों के सत्यापन कार्य को प्राथमिकता के आधार पर शीघ्र पूर्ण कराया जाए, जिससे पात्र लाभार्थियों को योजना का लाभ समय से उपलब्ध कराया जा सके। आईजीआरएस की समीक्षा करते हुए जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि जनशिकायतों का निर्धारित समय-सीमा के भीतर समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित किया जाए। किसी भी दशा में समय सीमा के उपरांत प्रकरण लंबित न रहे। उन्होंने अधिकारियों को शिकायतों के निस्तारण की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए। इसी प्रकार लंबित वादों की समीक्षा करते हुए जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को अधिक से अधिक वादों का प्राथमिकता के आधार पर

निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि लंबित प्रकरणों के निस्तारण में अनावश्यक विलंब न हो तथा विभागीय कार्यों की नियमित रूप से समीक्षा करते हुए प्रगति में अपेक्षित सुधार लाया जाए। जल जीवन मिशन की समीक्षा करते हुवे निर्देश दिए गए कि हाउस होल्ड कनेक्शन के कार्य में तेजी लाये, शत प्रतिशत घरों को कवर कर जलापूर्ति सुनिश्चित कराई जाए, इसके साथ ही सड़कों को भी प्राथमिकता से रेस्टोरेशन का कार्य कराया जाए। जिलाधिकारी ने सभी संबंधित अधिकारियों को सीएम डैशबोर्ड के विभिन्न संकेतकों में जनपद की स्थिति बेहतर करने के लिए माह के अंत तक प्रभावी कार्ययोजना बनाकर कार्य करने तथा शासन की प्राथमिकता वाली योजनाओं एवं कार्यक्रमों का समयबद्ध क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।बैठक में मुख्य विकास अधिकारी अंजुलता, अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) सिद्धार्थ, उपायुक्त श्रम रोजगार प्रमोद सिंह, परियोजना निदेशक डीआरडीए मुनेश चन्द्र, उप जिलाधिकारी सदर गौतम सिंह सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

योग शिविर में गूंजी रक्षाबंधन की खुशियां, बहन शिवांशी ने बांधी राखी,मातृभूमि सेवा मिशन ने दिया सामाजिक एकता, प्रेम और सौहार्द का संदेश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। मातृभूमि सेवा मिशन रायबरेली इकाई की ओर से शहीद स्मारक प्रांगण में संचालित दैनिक अपनत्व और भाईचारे की भावना को मजबूत करने का संकल्प लिया। मिशन के महामंत्री ने कहा कि रक्षाबंधन केवल भाई-बहन के प्रेम की सच्ची भावना है।' उन्होंने कहा कि मातृभूमि सेवा मिशन निरंतर ऐसे सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करता है,

निःशुल्क योग शिविर में रक्षाबंधन का पर्व हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। योगाभ्यास के उपरांत बहन शिवांशी पांडे ने सभी योग साधकों को राखी बांधकर भाई-बहन के पवित्र प्रेम, विश्वास और सामाजिक सौहार्द का संदेश दिया। बहन शिवांशी पांडे मिशन के योग शिविर में नियमित रूप से योगाभ्यास भी कराती हैं। रक्षाबंधन के अवसर पर उनके द्वारा सभी योग साधकों को राखी बांधना कार्यक्रम का विशेष आकर्षण रहा। इस दौरान उपस्थित लोगों ने एक-दूसरे के प्रति सम्मान, का पर्व नहीं, बल्कि आपसी विश्वास, सम्मान और सामाजिक एकता का प्रतीक है। ऐसे आयोजन समाज में व्याप्त कुरीतियों और भेदभाव को दूर कर प्रेम, सौहार्द एवं भाईचारे की भावना को मजबूत करते हैं। संयोजक प्रदीप पांडे ने कहा, 'रक्षाबंधन हमें यह संदेश देता है कि रिश्ते केवल परिवार तक सीमित नहीं होते। प्रेम, सम्मान और अपनत्व से पूरा समाज एक परिवार बन सकता है। सामाजिक कुरीतियों को समाप्त कर आपसी सौहार्द और एकता को मजबूत करना ही इस पवित्र पर्व जिनसे समाज में एकता, सद्भाव, सेवा और मानवता की भावना मजबूत हो। रक्षाबंधन का पवित्र सूत्र समाज को आपसी प्रेम और विश्वास से जोड़ने का संदेश देता है। कार्यक्रम में मुख्य योग शिक्षक अनुज शर्मा, सहयोगी शिक्षक सचिन पटेल, कोषाध्यक्ष राकेश, अनुराधा, अरविंद, केके, रश्मि पाण्डेय, सत्येंद्र सहित बड़ी संख्या में योग साधक मौजूद रहे। सभी ने मिलकर हर्ष और उल्लास के साथ रक्षाबंधन का पर्व मनाया और सामाजिक एकता व सौहार्द को मजबूत करने का संकल्प लिया।

42वीं वाहिनी पीएसी नैनी, प्रयागराज में तीन दिवसीय राष्ट्रीय खेल दिवस उत्सव का भव्य शुभारंभ

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। सेनानायक श्री राजेश कुमार श्रीवास्तव (आई0पी0एस0) के कुशल निर्देशन में 42वीं वाहिनी पीएसी नैनी, प्रयागराज में हॉकी विशेष आयोजन दिनांक 28.08.2026 से 30.08.2026 तक संचालित रहेगा। इस

गरिमामयी कार्यक्रम की शुरुआत एक घंटा खेल के मैदान में अभियान

के अंतर्गत की गई, जिसमें सभी के लिए सामूहिक खेल गतिविधियां कराई गईं। इसके पश्चात वाहिनी के जवानों एवं फैमिली लाइन के बच्चों के शारीरिक व मानसिक विकास को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। इनमें 100 मीटर तथा 400 मीटर दौड़, वॉलीबॉल, शतरंज, टेबल टेनिस और पास द बॉल जैसे रोचक खेल शामिल रहे। सभी प्रतिभागियों ने पूरे उत्साह, ऊर्जा और उत्कृष्ट खेल भावना के साथ मैदान पर अपना हुनर दिखाया। उपस्थित सभी जवानों और परिवारजनों ने इन रोमांचक मुकाबलों का भरपूर आनंद उठाया।इस तीन दिवसीय आयोजन का मुख्य उद्देश्य जवानों तथा उनके परिवारों में खेल भावना, शारीरिक फिटनेस, उत्तम स्वास्थ्य और आपसी सौहार्द व भाई-चारे को बढ़ावा देना है।

इसके साथ ही, इन खेल प्रतियोगिताओं के माध्यम से हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद जी एवं के महान जादूगर मेजर ध्यानचंद जी की जयंती (राष्ट्रीय खेल दिवस) के पावन अवसर पर तीन दिवसीय खेल एवं फिटनेस संबंधी गतिविधियों का भव्य शुभारंभ किया गया। 'खेलेगा भारत, जीतेगा भारत' विषय पर आधारित यह देश के अन्य महान खिलाड़ियों को डिजिटल श्रद्धांजलि भी अर्पित की गई।

उद्घाटन के अवसर पर वाहिनी के समस्त अधिकारी, कर्मचारी एवं उनके परिवारजन भारी संख्या में उपस्थित रहे।

झुग्गी-झोपड़ी की छात्राओं ने छात्रों को राखी बांधकर मनाया पवित्र रक्षाबंधन पर्व

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। महिला उन्नति संस्था एवं सावित्री बाई फुले शिक्षा केंद्र, सेक्टर-44 नोएडा के नेतृत्व में आज संचालिका श्रीमती रेनू बाला शर्मा ने किया।इस अवसर पर रेनू बाला शर्मा जी ने सभी बच्चों और उपस्थित लोगों को रक्षाबंधन की

रक्षाबंधन का पावन पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाली सभी छात्राओं ने स्नेहपूर्वक छात्रों की कलाई में राखी बांधकर भाई-बहन के अटूट प्रेम और विश्वास के साथ इस त्योहार को मनाया। सभी छात्राओं ने भविष्य में भाई होने का फर्ज निभाने की बात भी कही। बच्चों के चेहरों पर खुशी और उत्साह देखते ही बन रहा था।कार्यक्रम का नेतृत्व संस्था की अध्यक्ष एवं शिक्षा केंद्र की भी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि रक्षाबंधन केवल एक कच्चा धागा ही नहीं, बल्कि भाई-बहन के स्नेह, प्रेम और विश्वास के अटूट बंधन का प्रतीक है। इस दिन भाई अपनी बहन की रक्षा का संकल्प लेता है। उन्होंने सभी बच्चों को इस पवित्र त्योहार का महत्व समझाया और आपसी प्रेम और एकता बनाए रखने का संदेश दिया। कार्यक्रम के अंत में बच्चों को मिठाई और उपहार वितरित किए।

यूपी में हर तरफ पानी ही पानी, मछुआरे नदी में फंसे,गाजियाबाद में अचानक धुंध छा गई, 25 शहरों में बारिश, 53 में अलर्ट

लखनऊ/वाराणसी/प्रयागराज/कानपुर। यूपी में मानसूनी बारिश का सिलसिला जारी है। शुक्रवार सुबह लखनऊ, कानपुर, मुरादाबाद और संभल समेत 25 शहरों में बारिश हुई। गाजियाबाद में अचानक धुंध छा गई। कई जगह विजिबिलिटी 50-60 मीटर तक सिमट गई। कानपुर में इतनी बारिश हुई कि घर का आंगन 20 फीट धंस गया। गड्ढे में लड़की गिर गई। मौसम विभाग ने 53 शहरों में बारिश का अलर्ट जारी किया है। चंदौली, मिर्जापुर और सोनभद्र में भारी बारिश की चेतावनी जारी की गई है। इससे पहले, गुरुवार को मुरादाबाद-सीतापुर समेत 61 जिलों में बारिश हुई। सबसे ज्यादा 131.6 मिमी बारिश महोबा में रिकॉर्ड हुई। इधर, मानसूनी बारिश से नदियां उफान पर हैं। झांसी में 48 घंटे से हो रही मूसलाधार बारिश की वजह से सुखनई नदी में अचानक बाढ़ आ गई। मछली पकड़ने गए चार मछुआरे तेज बहाव में फंस गए। किनारे पर लगे एक पेड़ पर चढ़कर मदद की गुहार लगाने लगे। एसडीआरएफ की टीम ने चारों को बचाया। झांसी में ही उफनाते नाले में वैन बह गई, जिसमें सवार 6 लोगों को लोगों ने बचाया। वहीं, नेपाल-तिब्बत बॉर्डर पर बुधवार सुबह आई अचानक बाढ़ के बाद शव बहकर यूपी आ रहे हैं। गुरुवार को महराजगंज और कुशीनगर में प्रशासन ने तीन-तीन शवों को गंडक (नारायणी) नदी से बाहर निकाला। अभी तक किसी की पहचान नहीं हो पाई है। रेस्क्यू टीम लगातार मॉनिटरिंग कर रही है। लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह ने बताया-'मध्य प्रदेश-राजस्थान और दक्षिणी यूपी के ऊपर बने दबाव के क्षेत्र से अब तक प्रदेश में जमकर मानसूनी बारिश हुई। लेकिन, अब यह सिस्टम आगे बढ़ रहा है, जिससे बारिश की गतिविधियों पर ब्रेक लगेगा। 2-3 दिन यानी 31 अगस्त तक बारिश में कमी आएगी। इसके बाद सितंबर के पहले सप्ताह में फिर से बारिश का सिलसिला शुरू होगा।' गाजियाबाद में शुक्रवार सुबह शहर के कई इलाकों में धुंध छाई रही, जिससे कुछ देर तक दृश्यता प्रभावित हुई। सुबह के समय हवा में नमी और धुंध के कारण मौसम सुहाना नजर आया। सीतापुर में घाघरा नदी का जलस्तर घटने के साथ रामपुर मथुरा क्षेत्र में कटान तेज हो गया है। ग्राम पंचायत नागेश्वरपुरवा के शुक्लपुरवा गांव में नदी तेजी से जमीन को काट रही है। हालात ऐसे हैं कि ग्रामीण अपने हाथों से घर तोड़कर गृहस्थी का सामान सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने को मजबूर हैं।

गुरुवार शाम तक करीब 8 बीघा कृषि भूमि नदी में समा चुकी थी। वहीं बैराजों से करीब 2.45 लाख क्यूसेक पानी छोड़े जाने से ग्रामीणों की चिंता और बढ़ गई है। लगातार कटान के चलते गांव के कई परिवारों पर आशियाना उजड़ने का खतरा मंडरा रहा है।

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रयागराज

कौशल विकास का महत्व

लखीमपुर खीरी में 730 दिन से बेघर 37 परिवार,बाढ़ पीड़ितों को मुआवजा मिला, मगर रहने के लिए जमीन नहीं

लखीमपुर खीरी। लखीमपुर खीरी में निघासन तहसील क्षेत्र के

37 परिवार 730 दिनों से बेघर हैं। 26 गांवों के करीब 35 हजार की

आबादी पर हर साल की तरह इस बार भी बाढ़ का खतरा मंडरा रहा है। सबसे ज्यादा जसनगर और नया पिंड गांव के कई घर प्रभावित हैं, वहीं दोनों गांव के अब तक 2 घर कट चुके हैं। 2 साल पहले इन गांवों के 37 घर नदी में समा गए थे। अभी तक उन बाढ़ पीड़ितों को रहने के लिए जमीन नहीं मिल पाई हैं। कटान से विस्थापित हुए 37 परिवार दो साल बाद भी झुग्गियों में रहकर गुजर बसर कर रहे हैं। दो साल से बेघर लोगों की हकीकत जानने दैनिक भास्कर टीम इन दोनों गांवों में पहुंची। बातचीत का लहजा सुनने के बाद एक बार फिर ग्रामीणों को लगा कि प्रशासनिक टीम शायद मदद के लिए आई है। हकीकत से परे दुर्व्यवस्थाओं के बीच रह रहे लोगों के हाथ अपने आप जुड़ गए। इसके बाद जो संवाद शुरू हुआ, उसे सुनकर उनके दुख का अहसास हुआ। हालात यह थे कि कई लोगों ने हाथ जोड़कर रोते हुए कहा- साहब किसी तरह रहने का इंतजाम करा दें। उनकी अंगुलियां कांप रही थी और होठों से शब्द बड़ी मुश्किल से बाहर आ रहे थे। शायद यह महीनों से गुहार लगाते-लगाते थक गए थे। आंसू देखकर मन द्रवित हुआ, लेकिन भास्कर टीम ने अपने सवालों के बीच वहां की हकीकत जानी। जो सच सामने आया वो प्रशासनिक व्यवस्था में छेद ही छेद दिखा रहे थे। मुआवजे के अलावा इन्हें आज तक वो नहीं मिला, जिसकी उन्हें सबसे ज्यादा जरूरत थी। आशियाना शायद धरती पर हर इंसान के लिए यह पहली प्राथमिकता होती है। गांव के किनारे झुग्गी बनाकर रह रहे लोग-निघासन के 26 गांव मोहाना नदी के सीधे प्रभाव में आते हैं। इन 26 गांवों में दो गांव नया पिंड और जसनगर नदी के सबसे करीब बसा है। साल 2024 में नदी का जलस्तर बढ़ने से दोनों गांव भीषण कटान की जद में आ गए।बाढ़ आने से नया पिंड के 28 घर और जसनगर के 9 घर नदी की धारा में समा गए। साथ ही परिवारों की कई एकड़ कृषि योग्य भूमि भी समाप्त हो गई। तबाही के बाद इन 37 परिवारों के कुछ लोग इधर-उधर गांव किनारे बस गए।करीब 28 से 30 परिवार के लोग अभी भी वहीं गांव किनारे झुग्गी बनाकर रह रहे हैं। इन सभी परिवारों को मकान कटने के बाद प्रशासन ने 1 लाख 20 हजार मुआवजा दिया था।

समाजवादी पार्टी नोएडा महानगर ने धूमधाम से मनाई सामाजिक न्याय के पुरोधा बी.पी. मंडल जी की जयंती

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। समाजवादी पार्टी नोएडा महानगर संगठन द्वारा मंगलवार को नोएडा सेक्टर-53 स्थित सपा

नोएडा महानगर कैंप कार्यालय, कंचनजंगा मार्केट में सामाजिक न्याय के पुरोधा एवं मंडल आयोग के अध्यक्ष बाबू बिंदेश्वरी प्रसाद मंडल जी की जयंती श्रद्धापूर्वक एवं धूमधाम से मनाई गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता सपा नोएडा महानगर अध्यक्ष डॉ. आश्रय गुप्ता ने की, जबकि संचालन महानगर महासचिव विकास यादव ने किया।कार्यक्रम में उपस्थित समाजवादी पार्टी के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने बी.पी. मंडल जी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी तथा उनके द्वारा सामाजिक एवं शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्गों के अधिकारों के लिए किए गए संघर्ष को याद किया। सपा नोएडा महानगर अध्यक्ष डॉ. आश्रय गुप्ता ने कहा कि 'बी.पी. मंडल जी का पूरा जीवन सामाजिक न्याय और वंचित एवं पिछड़े वर्गों के अधिकारों के लिए समर्पित रहा। मंडल आयोग की सिफारिशों ने देश में सामाजिक न्याय की दिशा को नई मजबूती दी। समाजवादी पार्टी हमेशा डॉ. राम मनोहर लोहिया और नेताजी मुलायम सिंह यादव के विचारों को आगे बढ़ाते हुए सामाजिक न्याय, समानता और लोकतांत्रिक अधिकारों की लड़ाई लड़ती रही है। आज आवश्यकता है कि हम बी.पी. मंडल जी के विचारों को जन-जन तक पहुंचाएं और समाज के अंतिम व्यक्ति को उसका अधिकार दिलाने के लिए संघर्ष करें।' महानगर उपाध्यक्ष एवं मीडिया प्रभारी गौरव कुमार यादव ने कहा कि 'बी.पी. मंडल जी सामाजिक न्याय की उस विचारधारा के मजबूत स्तंभ थे, जिसने देश के करोड़ों पिछड़े और वंचित लोगों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया। उनका संघर्ष केवल किसी एक वर्ग के लिए नहीं, बल्कि समान अवसर और सम्मान की लड़ाई थी। समाजवादी पार्टी उनके विचारों और सामाजिक न्याय की लड़ाई को निरंतर आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है।' महानगर महासचिव विकास यादव ने कहा कि 'बी.पी. मंडल जी ने अपना पूरा जीवन समाज के कमजोर और पिछड़े वर्गों को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए समर्पित किया। उनके विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं। सामाजिक न्याय तभी मजबूत होगा जब समाज के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा, सम्मान, रोजगार और समान अवसर प्राप्त होगा।

समाजवादी पार्टी उनके विचारों को जन-जन तक पहुंचाने का काम करेगी।

' कार्यक्रम में महकार तंवर, बाबूलाल बंसल, लोकेश यादव, राणा मुखर्जी, बबली शर्मा, राम सहेली, लोकपाल यादव, कृपा शंकर यादव, रंजन कुमार, रेणुका मेथी, नकुल चौहान, बाबू प्रधान, विश्वास, शशि कुमार सहित बड़ी संख्या में पार्टी के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।कार्यक्रम के अंत में सभी कार्यकर्ताओं ने सामाजिक न्याय, समानता और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के लिए एकजुट होकर संघर्ष करने का संकल्प लिया।

आईएमएस नोएडा में एमबीए छात्रों के ओरिएंटेशन का समापन,उद्योग जगत के दिग्गजों ने विद्यार्थियों को नेतृत्व, कैरियर एवं उभरती तकनीकों के दिए मंत्र

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। सेक्टर-62 स्थित इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज (आईएमएस) नोएडा में एमबीए विद्यार्थियों के लिए आयोजित 5 दिवसीय ओरिएंटेशन का सफलतापूर्वक समापन हुआ। सेक्टर 62 स्थित संस्थान परिसर में आयोजित इस कार्यक्रम में विषय विशेषज्ञों एवं उद्योग जगत के अनुभवी विशेषज्ञों ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों, नेतृत्व क्षमता, टीमवर्क, करियर नियोजन, प्रभावी संचार तथा उद्योग जगत में उभरते रुझानों से परिचित कराना था। आईएमएस नोएडा के वाइस प्रेसिडेंट चिराग गुप्ता ने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि उच्च शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल ज्ञान अर्जित करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का समग्र विकास करना है। उन्होंने कहा कि आज के प्रतिस्पर्धी और तेजी से बदलते दौर में केवल शैक्षणिक योग्यता पर्याप्त नहीं है। नेतृत्व क्षमता, रचनात्मक सोच, प्रभावी संचार, नैतिक मूल्यों और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे गुण भी सफलता के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने तथा निरंतर सीखने की भावना बनाए रखने के लिए प्रेरित किया। आईएमएस के सलाहकार प्रोफेसर डॉ. जेके शर्मा ने कहा कि ज्ञान केवल कक्षा तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि उसका उपयोग वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में भी किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक चुनौती को सीखने और स्वयं के विकास के अवसर के रूप में देखना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों से शैक्षणिक प्रदर्शन के साथ-साथ सामाजिक, सांस्कृतिक एवं व्यक्तिगत विकास से जुड़ी गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करने का आह्वान किया, ताकि वे भविष्य की चुनौतियों का आत्मविश्वास और दक्षता के साथ सामना कर सकें। वहीं संस्थान की डीन सीआरसी एवं मैनेजमेंट डॉ. वर्तिका चतुर्वेदी ने बताया कि इस सप्ताहिक कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों के लिए विभिन्न कार्यशालाओं, अतिथि व्याख्यानों, समूह चर्चाओं, केस स्टडी और इंटरैक्टिव इंडस्ट्री सेशन का आयोजन किया गया। इन गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को कक्षा में प्राप्त ज्ञान को व्यावहारिक परिस्थितियों से जोड़ने तथा भविष्य की पेशेवर चुनौतियों के लिए तैयार होने का अवसर मिला। उन्होंने कहा कि 5 दिवस तक चले इस विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 15 उद्योग विशेषज्ञों ने विद्यार्थियों के साथ संवाद किया।

'हर घर बिजली' के दौर में 20 साल पुराने बुनियादी ढांचे और भारी-भरकम 'अफोर्डेबल शुल्क' की मार झेल रहा नोएडा

जनप्रतिनिधियों की खामोशी भी इस अव्यवस्था की जिम्मेदार

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। उत्तर प्रदेश की आर्थिक रीढ़

और प्रदेश की तिजोरी में सबसे ज्यादा राजस्व का योगदान देने वाला हाइटेक शहर नोएडा आज बिजली विभाग की घोर उपेक्षा और अव्यवस्था का शिकार है। एक तरफ सरकार द्वारा 'हर घर बिजली' पहुंचाने के बड़े-बड़े दावे किए जाते हैं, वहीं दूसरी तरफ नोएडा में जमीनी हकीकत यह है कि अंतरराष्ट्रीय कंपनियों और विदेशी निवेश को आकर्षित करने वाले इस शहर का बिजली आपूर्ति ढांचा आज भी बीसियों वर्ष पुराना बना हुआ है। आधुनिक तकनीक से लैस होने की बजाय यह शहर लगातार तेज वोल्टेज के उतार-चढ़ाव (विद्युत विभवांतर) और घंटों की अनिश्चित बिजली कटौती की दोहरी मार झेल रहा है। बिजली विभाग का उत्पीड़न यहीं खत्म नहीं होता; नया कनेक्शन लेने वाले आम नागरिकों और नए उपभोक्ताओं की जेब पर डाका डालते हुए उन पर जबरन 'अफोर्डेबल चार्ज' के नाम पर भारी-भरकम शुल्क थोप दिया गया है। नया विद्युत कनेक्शन लेने वाले उपभोक्ताओं के लिए यह अनपेक्षित वित्तीय बोझ किसी आर्थिक उत्पीड़न से कम नहीं है। एक तरफ जर्जर इंफ्रास्ट्रक्चर के कारण निर्बाध बिजली नहीं मिलती, और दूसरी तरफ नए कनेक्शन पर इस तरह के अनुचित शुल्क वसूल कर आम जनता का शोषण किया जा रहा है।इस पूरे प्रकरण में सबसे निराशाजनक पहलू यह है कि जनता द्वारा चुने गए हमारे जनप्रतिनिधियों की खामोशी भी इस अव्यवस्था की उतनी ही जिम्मेदार है। लाखों नागरिकों और व्यापारियों को प्रभावित करने वाले इस गंभीर बिजली संकट पर जनप्रतिनिधियों द्वारा साधी गई चुप्पी और उनकी बेरुखी के कारण ही विभाग के हौसले बुलंद हैं और उपभोक्ताओं की समस्याएं अनदेखी रह जाती हैं। इसके साथ ही, पूरे जिले में बिजली विभाग के पास मैनपावर की भीषण कमी है। पर्याप्त कर्मचारी और तकनीशियन न होने के कारण मामूली फॉल्ट आने पर भी उसे ठीक करने में घंटों का समय लग जाता है, जिससे आम जनता को प्रचंड अव्यवस्था के बीच तड़पना पड़ता है। इस पर तुर्रा यह कि उपभोक्ता केंद्रित व्यवस्था के बजाय विभाग ने शहर में केंद्रीकृत उत्पीड़न का मॉडल बना रखा है। अगर किसी उपभोक्ता के बिल में कोई गड़बड़ी हो जाए, तो पूरे जिले के निवासियों को सेक्टर-18 स्थित विद्युत घर के चक्कर काटने पड़ते हैं।

इसी तरह, पूरे शहर के लिए मीटर संबंधी समस्याओं का केवल एक ही केंद्र बनाया गया है, जहां लोगों को सुबह से शाम तक कतारों में खड़ा होना पड़ता है। आरडब्ल्यूए सेक्टर 105 नोएडा के अध्यक्ष दिव्य कृष्णात्रेय ने इस बदहाली पर कड़ा आक्रोश व्यक्त करते हुए कहा कि 'हर घर बिजली' का वास्तविक लाभ जनता को तभी मिलेगा जब निर्बाध आपूर्ति, पारदर्शी शुल्क संरचना और सुलभ सेवाएं उपलब्ध होंगी। उन्होंने शासन और उच्च अधिकारियों से मांग की है कि 20 साल पुराने जर्जर बिजली ढांचे को तुरंत आधुनिक तकनीक से बदला जाए, नए कनेक्शनों पर लगाए जा रहे अनुचित 'अफोर्डेबल चार्ज' को तत्काल वापस लिया जाए, विभाग में पर्याप्त मैनपावर की भर्ती की जाए और बिल या मीटर सुधार जैसी सुविधाओं को सेक्टर-वार और अंचल-वार विकेंद्रीकृत किया जाए ताकि आम उपभोक्ताओं को राहत मिल सके।

नोएडा में जन्मदिन की पार्टी के बहाने नाबालिग आयुष की हत्या दोस्त असद पर आरोप

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। शहर में थाना सेक्टर-24 क्षेत्र के चौड़ा गांव में नाबालिग छात्र आयुष शुक्ला की हत्या की घटना से सनसनी फैल गई है। आरोप है कि असद नाम का युवक जन्मदिन की पार्टी देने के बहाने आयुष को उसके घर से बुलाकर ले गया और बाद में चाकू से हमला कर उसकी हत्या कर दी। घटना के बाद से आरोपी के फरार होने की बात सामने आ रही है नोएडा और पुलिस की कई टीमें उसकी

तलाश में जुटी हैं। इस वारदात के सामने आने के बाद चौड़ा गांव और आसपास के इलाके में दहशत का माहौल है। सबसे ज्यादा सदमा आयुष के परिवार को लगा है। बेटे की मौत की खबर के बाद उसकी मां का रो-रोकर बुरा हाल है। परिजनों के मुताबिक आयुष को घर से बुलाकर ले जाने वाला युवक असद था और इसके कुछ समय बाद ही आयुष की हत्या की खबर सामने आई। मां से कहा- खाना बनाकर रखना, दो मिनट में आयुष के साथ वापस आता हूं।' मां को शायद यह अंदाजा भी नहीं था कि घर से बाहर जाते समय बेटे के साथ क्या होने वाला है। आयुष असद के साथ घर से निकला, लेकिन फिर वापस नहीं आया। आरोप है कि असद ने आयुष को जन्मदिन की पार्टी के नाम पर घर से बाहर बुलाया था। इसके बाद किसी स्थान पर दोनों के बीच क्या हुआ, इसे लेकर पुलिस जांच कर रही है। परिजनों का आरोप है कि असद ने आयुष पर चाकू से हमला किया और उसे मौत के घाट उतार दिया। वारदात की जानकारी सामने आने के बाद पुलिस ने आरोपी की तलाश शुरू कर दी है। दोस्तों के सामने हत्या की बात कहने का आरोप-इस मामले में सबसे गंभीर आरोप यह है कि असद ने कथित तौर पर अपने दोस्तों के सामने आयुष की हत्या करने की बात कही। परिजनों की ओर से दावा किया जा रहा है कि आरोपी ने खुद कहा था कि उसने आयुष को मार डाला है। हालांकि, इस कथित कबूलनामे की स्वतंत्र और आधिकारिक पुष्टि अभी पुलिस की ओर से नहीं की गई है। पुलिस आरोपी की गिरफ्तारी के बाद उससे पूछताछ कर पूरे घटनाक्रम की कड़ियां जोड़ने का प्रयास करेगी। परिजनों के अनुसार आयुष केंद्रीय विद्यालय का छात्र था। वह अभी नाबालिग था। परिवार के लिए उसकी हत्या किसी सदमे से कम नहीं है। आयुष की मौत की खबर जैसे ही परिवार और आसपास के लोगों तक पहुंची, लोग बड़ी संख्या में उसके घर पहुंचने लगे। परिवार का कहना है कि उनका बच्चा घर से सामान्य तरीके से निकला था, लेकिन कुछ ही समय बाद उसकी जिंदगी खत्म हो गई। इस मामले में उपलब्ध शुरुआती जानकारी में आयुष की उम्र को लेकर अलग-अलग दावे सामने आए हैं। कुछ विवरणों में उसकी उम्र 14 वर्ष, जबकि अन्य जानकारी में 17 वर्ष बताई जा रही है। ऐसे में पुलिस के आधिकारिक रिकॉर्ड और दस्तावेजों से उसकी सही उम्र की पुष्टि होना महत्वपूर्ण है। चूंकि आयुष नाबालिग था, इसलिए उसकी पहचान और व्यक्तिगत विवरण प्रकाशित करते समय भी कानूनी एवं पत्रकारिता संबंधी सावधानियों का पालन किया जाना जरूरी है। घटना के बाद थाना सेक्टर-24 पुलिस ने आरोपी असद की तलाश शुरू कर दी है। पुलिस की टीमें संभावित ठिकानों पर दबिश दे रही हैं। पुलिस यह भी पता लगाने में जुटी है कि आरोपी वारदात के बाद कहां गया और उसके साथ कोई अन्य व्यक्ति भी था या नहीं। नोएडा पुलिस की जांच में पुलिस के सामने कई अहम सवाल हैं। इन सवालों के जवाब नोएडा पुलिस तलाश कर रही है। आयुष को किस स्थान पर ले जाया गया था? हत्या की वजह क्या थी? क्या हत्या से पहले आयुष और असद के बीच कोई विवाद हुआ था? वारदात में कितने लोग शामिल थे? क्या हत्या पूर्व नियोजित थी? आरोपी ने कथित तौर पर दोस्तों के सामने हत्या की बात क्यों कही? घटना के बाद आरोपी कहां फरार हुआ। इस पूरी घटना में सबसे बड़ा सवाल हत्या की वजह को लेकर है। जन्मदिन की पार्टी के बहाने आयुष को घर से बुलाने और उसके बाद उसकी हत्या किए जाने के आरोपों ने मामले को बेहद गंभीर बना दिया है। अगर पुलिस जांच में यह साबित होता है कि आयुष को पहले से तय योजना के तहत घर से बुलाया गया था, तो मामला और गंभीर हो सकता है। गाजियाबाद के खोड़ा क्षेत्र में नाबालिग से जुड़ी हत्या की घटना के बाद नोएडा के चौड़ा गांव में नाबालिग की हत्या की खबर ने इलाके में चिंता बढ़ा दी है। दोनों घटनाओं का आपस में कोई संबंध है, ऐसा फिलहाल कोई तथ्य सामने नहीं आया है, लेकिन लगातार सामने आ रही ऐसी घटनाएं बच्चों और किशोरों की सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े करती हैं। नोएडा जैसे तेजी से विकसित हो रहे शहर में बड़ी संख्या में परिवार और युवा आबादी रहती है। ऐसे में नाबालिगों की सुरक्षा, उनकी संगत और सोशल सर्कल को लेकर अभिभावकों की चिंता स्वाभाविक है।

आयुष की मौत के बाद परिवार अब पुलिस से आरोपी की जल्द गिरफ्तारी और मामले की निष्पक्ष जांच की मांग कर रहा है। मां अपने बेटे को याद कर लगातार रो रही हैं। जिस बच्चे को कुछ देर पहले जन्मदिन की पार्टी के लिए घर से जाते हुए देखा गया था, उसके वापस न लौटने की घटना ने पूरे परिवार को तोड़ दिया है। नोएडा कमिश्नरी पुलिस ने इस मामले में दी यह जानकारी-नोएडा कमिश्नरी पुलिस ने इस मामले में जानकारी देते हुए बताया कि थाना सेक्टर-24 नोएडा क्षेत्रांतर्गत दिनांक 25.08.2026 को वादिया द्वारा तहरीर दी गई कि उनका 13 वर्षीय पुत्र हैप्पी उर्फ आयुष शुक्ला घर से खेलने के लिए अपने दोस्तो के घर गया था, जिसके बाद वापस नहीं आया। वादिया की तहरीर पर सुसंगत धाराओं में अभियोग पंजीकृत है। मुख्य बाल अपचारी को पुलिस संरक्षण में लिया गया है। मुख्य बाल अपचारी व मृतक आयुष शुक्ला एक ही समुदाय से है तथा शेष की गिरफ्तारी हेतु पुलिस टीम गठित की गई है। उल्लेखनीय है कि पीएम रिपोर्ट में मृतक के शरीर पर कोई जाहिरा चोट परिलक्षित नही होना, अंकित है। प्रकरण में अग्रिम वैधानिक कार्रवाई की जा रही है।

जरूरत से ज्यादा जांचें और दवाइयां भी अपने आप में एक बीमारी हैं

हाल ही में दो खबरें सामने आईं। पहली यह थी कि भारत के लगभग दस में से नौ वयस्कों इसमें पाया गया कि 87.3फीसदी लोगों में लिपिड से जुड़ी कम से कम एक असामान्यता थी। यहां

में कोलेस्ट्रॉल या अन्य लिपिड का स्तर सामान्य सीमा से ऊपर या नीचे है। दूसरी खबर अमेरिका से आई, जहां ऐसी नई दवाई को मंजूरी मिली है, जो एलडीएल कोलेस्ट्रॉल को 60फीसदी तक घटा सकती है। यह महज संयोग हो सकता है, लेकिन यह एक असुविधाजनक प्रश्न भी उठाता है : क्या किसी बीमारी का बोझ हमें तभी याद दिलाया जाता है, जब उसके इलाज के लिए नया बाजार तैयार होता है? मोटापा घटाने वाली दवाओं का हालिया अनुभव इसका स्पष्ट उदाहरण है। मोटापा वर्षों से बढ़ रहा था। लेकिन नई दवाओं के आते ही मोटापा चिकित्सा और मीडिया की सबसे चर्चित समस्याओं में शामिल हो गया। इससे जागरूकता तो बढ़ी, पर वजन को दवा से ठीक होने वाली बीमारी बना दिया गया। शारीरिक निष्क्रियता, तनाव, प्रोसेस्ड फूड जैसे मूल कारण पीछे छूट गए। भारत में हृदय रोग, मधुमेह, मोटापा और फैटी लिवर बढ़ रहे हैं। हमारी जीवनशैली में बैठना बढ़ा है, चलना घटा है और भोजन में चीनी, मैदा तथा प्रोसेस्ड फूड बढ़े हैं। पिछले कुछ सालों में लिपिड और कोलेस्ट्रॉल उपचार के लक्ष्य लगातार नीचे आए हैं। अधिक जोखिम वाले मरीजों के लिए एलडीएल कोलेस्ट्रॉल को 55 मिलीग्राम प्रति डेसीलीटर से नीचे रखने की सलाह दी जाती है। इससे पहले यह सीमा 70 थी। नई दवा एलडीएल कोलेस्ट्रॉल को 56 से 59फीसदी तक घटा सकती है। लेकिन हर मरीज को इसकी जरूरत नहीं है। यह उनके लिए महत्वपूर्ण हो सकती है, जिन्हें पहले हृदयाघात हो चुका है, जिनका हृदय जोखिम अधिक है या जिन्हें आनुवंशिक रूप से अत्यधिक कोलेस्ट्रॉल रहता है। इसी समय आईसीएमआर-इंडिया अध्ययन के परिणाम भी आए। यह अध्ययन भारत के 23,665 वयस्कों पर आधारित था और यह समझना जरूरी है कि इसका अर्थ यह नहीं कि लगभग 90फीसदी भारतीयों का खराब कोलेस्ट्रॉल खतरनाक स्तर पर है या उन्हें दवा शुरू कर देनी चाहिए। इसमें वो लोग भी शामिल हैं, जिनका एचडीएल लेवल कम है। यह अच्छा कोलेस्ट्रॉल माना जाता है लेकिन इसको बढ़ाने की दवा नहीं आती है। यह सिर्फ अच्छी और स्वस्थ दिनचर्या से ही बढ़ सकता है। समस्या तब शुरू होती है, जब उपचार से हासिल किए जाने वाले लक्ष्य पूरी आबादी के लिए सामान्य मान लिए जाते हैं। जैसे ही इलाज का लक्ष्य बदला जाता है, लाखों लोग अचानक उस श्रेणी में आ जाते हैं, जिन्हे दवा दिए जाने योग्य माना जाता है। जबकि उनके शरीर में रातोंरात कोई नया नुकसान नहीं हुआ होता। इसे मेडिकलाइजेशन कहते हैं। इसका मतलब है कि किसी जोखिम, शारीरिक भिन्नता या जीवनशैली की समस्या को ऐसी बीमारी में बदल दिया जाए, जिसके लिए लगातार जांच और दवा जरूरी मानी जाने लगे। इसका अर्थ यह नहीं कि कोलेस्ट्रॉल की दवाएं बेकार हैं। जबकि प्रश्न यह है कि दवा किसे और कितने समय तक चाहिए। एक ओर करोड़ों लोगों को जरूरी उपचार नहीं मिलता, वहीं सम्पन्न वर्ग में जरूरत से अधिक जांच और दवाएं बढ़ रही हैं। थोड़े बढ़े एलडीएल वाला स्वस्थ युवा और हृदयाघात झेल चुका व्यक्ति एक जैसे मरीज नहीं हो सकते। जीवनशैली से पैदा बीमारियों का समाधान गोलियों से नहीं होगा। हमें बेहतर भोजन, सक्रिय जीवन और मजबूत प्राथमिक स्वास्थ्य-सेवाएं चाहिए। समझदार मरीज दवा से इनकार नहीं करता; वह दवा की जरूरत, लाभ और अवधि पर प्रश्न पूछता है और सोच-समझकर निर्णय लेता है। (ये लेखक के अपने विचार हैं, डॉ. चन्द्रकान्त लहारिया)

सोशल बफर्स के तौर पर बॉट्स का इस्तेमाल 'सेल्फ मिसट्रस्ट' की महामारी

अजय रिसर्चर के तौर पर अपने काम में एआई का इस्तेमाल करता है। लेकिन लैब से बाहर भी एआई टूल उसका कन्वर्सेशन-कोच बन गया है। वह ईवनिंग पार्टियों में बातचीत की शुरुआती

लाइनें और मेहमानों व दोस्तों को विश करने के आइडिया लिखने में भी उसकी मदद लेता है। जब वह पूछता है कि यदि कोई ऐसा मुश्किल सवाल पूछ ले कि 'शादी कब कर रहे हो?' तब भी सामने वाले को जवाब देने में एआई उसकी मदद करता है। मान लीजिए बातचीत किसी ऐसी किताब या आर्टिकल पर पहुंच गई, जिसके बारे में अजय को जानकारी नहीं है तो वह तुरंत एआई से समरी मांग लेता है। जब तक एआई समरी बनाता है, उन पलों में अजय एक लाइन कहता रहता है कि 'मैं कभी-कभी पढ़ता हूं।' ऐसा नहीं कि अजय खुद नहीं सोच सकता, लेकिन एआई चीजों को थोड़ा आसान बना देता है। 20 वर्षीय अजय युवाओं की तेजी से बढ़ती उस जमात का हिस्सा है, जो बेहद इंसानी कामों को भी एआई से करवा रहे हैं। छोटी-बड़ी सोशल एंगजायटी से जूझ रहे कई युवा अजय की तरह ही आमने-सामने की मुलाकात से पहले एआई की मदद लेते हैं। सामान्य व्हाट्सएप चैट में भी अब बॉट-जनरेटेड मैसेज दिखने लगे हैं, लेकिन इस उम्र के रोमांटिक पार्टनर्स के बीच इनकी संख्या काफी है। अचानक उनके टेक्स्ट सटीक ग्रामर वाले हो जाते हैं। जबकि सामने वाला जानता है कि यह वही व्यक्ति है, जो साधारण लाइनें भी पांच गलतियों के बगैर नहीं लिख पाता था। कई रिश्ते तो मजबूत बनने से पहले ही टूटने लगे हैं। एक पार्टनर चाहता है कि बातचीत थोड़ा विस्तार लिए हो, क्योंकि अपनापन उसी इनफॉर्मेलिटी से आता है। यह परफेक्शन इसलिए आती है, क्योंकि चैटबॉट्स इंसानी भाषा के पैटर्न को जोड़कर वाक्य बनाते हैं। मैं एक ऐसी लड़की को जानता हूं, जिसने अपनी रिलेशनशिप इसलिए खत्म कर दी, क्योंकि उसे लगा कि जिस लड़के को वह डेट कर रही थी, वह इतना आलसी और अनरोमांटिक है कि उसने उनकी बातचीत को भी एआई को सौंप दिया। ब्लॉक करने से पहले उसने अपने आखिरी मैसेज में कहा कि 'अजीब है कि तुम्हारे प्यार के शब्द भी अपने नहीं, एआई जनरेटेड हैं।' स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ मेडिसिन में क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट एशली गोल्डन कहती हैं कि 'यह दोनों पक्षों के लिए नुकसानदायक है। चैटबॉट्स का उद्देश्य प्रोडक्टिविटी बढ़ाना था, रिलेशनशिप बनाना नहीं।' अगर आप ऐसे युवा हैं, जो अपना हर टेक्स्ट एआई से जंचवा रहे हैं तो आप खुद को यही सिखा रहे हैं कि आपकी अपनी समझ भरोसे लायक नहीं। यह बात खासतौर पर उन लोगों पर ज्यादा लागू होती है, जिन्हें सोशल एंग्जायटी रहती है। गोल्डन मानती हैं कि एआई लोगों को सोशल मिसस्टेप्स की पीड़ा से बचा सकता है, लेकिन यह राहत अस्थायी होती है। धीरे-धीरे यही टूल बैसाखी बन जाता है और लोग खुद के फैसलों पर ही कम भरोसा करने लगते हैं।आज कई एजीक्यूटिव्स जब मैनेजमेंट के नोटिस का गुस्से भरा रिप्लाई लिखते हैं तो उसे एआई से सुधारने की कोशिश करते हैं। पहले मन के भाव लिखना और फिर उन्हें एआई के जरिए भाषा में ढालना रिसीवर को थोड़ा उलझन में डाल देता है। भाषा भले बेहतर हो जाती हो, लेकिन पत्र में भावनाएं कोई स्पष्ट रुख नहीं दर्शातीं। कई बार दोस्तों से आमने-सामने की बातचीत के लिए एआई का सहारा लेना युवाओं पर उल्टा भी पड़ चुका है और बाद में गोल्डन ने उनकी काउंसलिंग की। एक्सपर्ट्स का कहना है कि किसी मुश्किल बातचीत की तैयारी के लिए एआई का इस्तेमाल सही है, लेकिन पूरी बातचीत उसी के भरोसे नहीं होनी चाहिए। एआई यह बता सकता है कि क्या कहना है, लेकिन कैसे कहना है यह हर व्यक्ति को खुद सीखना होगा। विशेषज्ञों का सुझाव है कि बड़े इवेंट्स या क्लाइंट्स के जवाब तैयार करने तक तो एआई का इस्तेमाल ठीक है, लेकिन इमोशनल बातचीत की स्क्रिप्ट लिखवाना बैकफायर कर सकता है। क्योंकि वह आपके कैरेक्टर से मेल नहीं खाता।

फंडा यह है कि अगर आप अपनी जिंदगी की हर चीज एआई से पॉलिश कराएंगे तो धीरे-धीरे अपनी ही आवाज पर भरोसा खो सकते हैं। एन. रघुरामन

हमें दुनिया को अपनी सभ्यता की बेहतर कहानी सुनानी होगी

मुझे दुनिया की विभिन्न सभ्यताओं से जुड़े महानतम संग्रहालयों को देखने का मौका मिला है। हाल ही में जब मैंने गीजा के पिरामिड, एथेंस के एक्रोपोलिस दुनिया की बेहद समृद्ध ऐतिहासिक धरोहरें हैं। लेकिन जब भी मेरी डेस्क पर पर्यटन या शहरी विकास से जुड़े बड़े प्रोजेक्ट की कोई फाइल आती तो वह एक ही समस्या में इंटरप्रिटेशन सेंटर अपार संभावनाओं से भरे हैं, लेकिन उन्हें गंभीर संरक्षण, बेहतर क्यूरेशन, मजबूत डिजाइन और ज्यादा कल्पनाशीलता की जरूरत है। तभी जाने वाले नॉर्थ और साउथ ब्लॉक की पहचान अब महज दफ्तरों और औपचारिक आयोजनों से नहीं, बल्कि ऐसे स्थान के तौर पर होगी, जहां राष्ट्र को सुव्यस्थित स्मृतियों

और भूमध्यसागर के किनारे पर बने बिब्लियोथेका अलेक्जेंड्रिना (पुस्तकालय) को देखा तो वहां के ऐतिहासिक महत्व को देखकर अभिभूत रह गया। गीजा के ग्रैंड इजिप्शियन म्यूजियम में विश्वस्तरीय संरक्षण, सुचिंतित डिजाइन और जीवंत कहानियों के जरिए मिस्र की पांच हजार वर्ष पुरानी सभ्यता से जुड़े एक लाख से अधिक पुरावशेष संग्रहित हैं। इनमें तूतनखामुन के मकबरे का खजाना भी है। एक्रोपोलिस में कांच के फर्श के नीचे प्राचीन बसावट को देखा जा सकता है, जो खुदाई में मिली थी। बिब्लियोथेका में ज्ञान को संरक्षित रखने के लिए किया गया निवेश स्पष्ट नजर आता है। भारत की सभ्यतागत विरासत भी इतनी ही समृद्ध है। हमारे पास सिंधु घाटी के सुनियोजित शहरों से लेकर स्मारकों, पांडुलिपियों, मंदिरों, किलों और पुरावशेषों तक जाकर उलझ जाती थी।

हमारे पास कहानियां तो बहुत हैं, लेकिन उन्हें कहने वाले पर्याप्त संस्थान नहीं हैं। हमारे सबसे अच्छे पुरावशेष संग्रहालयों में ही कैद हैं। मसलन, कोलकाता के इंडियन म्यूजियम में कला, पुरातत्व और प्राकृतिक इतिहास से जुड़ी 25 लाख वस्तुएं हैं, नई दिल्ली के नेशनल म्यूजियम में दो लाख से अधिक पुरावशेषों का संग्रह है, लेकिन इनका एक छोटा-सा हिस्सा ही प्रदर्शित किया जाता है। इसमें भी समसामयिक डिजाइन, लाइटिंग और इंटरप्रिटेटिव मीडिया का सीमित ही प्रयोग है। दरअसल, हमने उतनी महत्वाकांक्षा के साथ कभी हमारे इन संस्थानों में निवेश किया ही नहीं, जो हमारी महान विरासत को सहेजने, उनकी व्याख्या करने और इसे देश-दुनिया को बताने का काम करते हैं। हमारे म्यूजियम, आर्काइव्स और साइट वे उस सभ्यता के अनुरूप बन पाएंगे, जिसका वे प्रतिनिधित्व करते हैं। नॉर्थ-साउथ ब्लॉक को राष्ट्रीय संग्रहालय में बदलने की योजना इस बात का प्रतीक है कि संस्कृति राष्ट्र की मूल पहचान से जुड़ा मसला है। इसे दुनिया के सबसे बड़े संग्रहालयों में से एक बनाने की योजना है। इसमें इमर्सिव डिजाइन और डिजिटल माध्यमों से हजारों वर्षों की भारतीय सभ्यता की यात्रा बताई जाएगी। उम्मीद है कि अगले तीन वर्षों में कंटेंट टीमें आठ थीम आधारित क्षेत्रों में लगभग 30 दीर्घाएं विकसित करेंगी। केंद्रीय संग्रहालयों, एएसआई की साइटों और राज्यों के संग्रहालयों से 80 हजार से एक लाख तक पुरावशेष यहां लाए जाएंगे। इन्हें प्राचीन इतिहास और ज्ञान-परंपराओं से लेकर आधुनिक भारत तक की यात्रा के क्रम में व्यवस्थित किया जाएगा। अब तक सत्ता के केंद्र कहे के जरिए देखा जा सकता है। यहां सिंधु घाटी के शहर, ज्ञान-परंपराएं, कोणार्क के सूर्य-रथ, चोलकालीन कांस्य प्रतिमाएं और संविधान से जुड़े दस्तावेज तक प्रदर्शित किए जाएंगे। स्पष्ट मानक तय किए जाएं तो रायसीना हिल की प्रत्येक गैलरी दुनिया के प्रमुख संग्रहालयों की बराबरी कर सकती है। यदि हम वाराणसी, हम्पी या जयपुर जैसे शहरों में भी ऐसे संग्रहालय विकसित करें, जो संरक्षण, डिजाइन और सेवाओं के मामले में विश्वस्तरीय मानकों पर खरे हों तो भारत खुद को वैश्विक पर्यटन सर्किट में स्थापित कर सकता है। पर्यटक आज आर्ट हॉलिडे, प्राइवेट म्यूजियम टूर और क्यूरेटेड यात्रा कार्यक्रमों पर काफी पैसा खर्च कर रहे हैं। सांस्कृतिक अनुभव देने वाली यात्राएं लग्जरी ट्रैवल ट्रेंड में अपना अहम स्थान बनाए हुए हैं। ऐसे में हम मौका न चूकें। (ये लेखक के अपने विचार हैं, अमिताभ कांत)

भारतीय युवाओं के सामने उभरती चुनौतियां

लेखक - श्री अमरनाथ सक्सेना, चीफ टेक्निकल ऑफिसर - कमर्शियल, बजाज जनरल इंश्योरेंस लिमिटेड (पूर्व नाम बजाज आलियांज़ जनरल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड)

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) भारत की 26फीसदी आबादी ऐसे लोगों की है जिनकी उम्र 15 से 29 साल के बीच है। भारत को इस बात पर गर्व है कि उसके पास युवा प्रतिभाओं की भरमार है। ये युवा डिजिटल तौर-तरीकों को अच्छी तरह से समझते हैं, वे महत्वाकांक्षी हैं और कुछ नया प्रयोग करने से लेकर नए क्षेत्रों में कदम रखने से वे हिचकिचाते नहीं हैं। वे हमारे देश को विकास के अगले स्तर तक ले जाने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। हालांकि इन उम्मीदों के साथ उन्हें कुछ नए तरह के जोखिमों से दो-चार होना पड़ रहा है, जिसका सामना पिछली पीढ़ी ने कभी नहीं किया था। साइबर धोखाधड़ी करने वाले अपराधी ऑनलाइन ट्रेडिंग अकाउंट को हैक कर सकते हैं, और जो शॉपिंग वेबसाइटें बेहद सुरक्षित और भरोसेमंद दिखाई देती हैं, वहां भी लोग ठगी का शिकार बन सकते हैं। इससे आर्थिक सुरक्षा के लिए खतरा पैदा हो सकता है और यह एक गंभीर समस्या का रूप भी धारण कर सकती है। इसका असर केवल आर्थिक नुकसान तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि इसकी वजह से लोगों को गंभीर तनाव से गुज़रना पड़ता है, उनका मानसिक संतुलन बिगड़ता है और उन्हें चिंताजनक मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। इतना ही नहीं, लंबे समय तक स्क्रीन के सामने बैठकर काम करने से लोगों में जीवनशैली से जुड़ी बीमारियां बढ़ रही हैं। वर्ष 2025 में भारत में 7फीसदी से अधिक ग्राहकों के साथ डिजिटल लेन-देन के दौरान धोखाधड़ी करने की कोशिश की गई, जो कि वैश्विक दर की तुलना में दोगुनी रही। डिजिटल खतरों में बढ़ोत्तरी- आज के दौर में स्मार्टफोन और टैबलेट शिक्षा, मनोरंजन से लेकर लोगों से संपर्क बनाने और यहां तक कि करियर बनाने की दिशा में भी अहम भूमिका निभा रहे हैं। रिपोर्टों के अनुसार 15 से 29 साल की उम्र के जिन लोगों के पास मोबाइल हैं, उनमें से 95.5फीसदी लोग ग्रामीण क्षेत्रों से आते हैं, जबकि शहरों में इसी उम्र के 97.6फीसदी लोगों के पास अपना स्मार्टफोन है। गौरतलब है कि जहां टेक्नोलॉजी ने भारतीय युवाओं को सशक्त बनाया है, वहीं इसकी वजह से वे गंभीर जोखिमों के प्रति असुरक्षित भी बन गए हैं। साइबर धोखाधड़ी जैसे कि पहचान चुराना, फिशिंग अटैक और वित्तीय धोखाधड़ी जैसे अपराध दिनोंदिन बढ़ते ही जा रहे हैं। युवा लोग जो अक्सर ऑनलाइन लेन-देन करते हैं, डिजिटल प्लेटफॉर्म के ज़रिए निवेश करते हैं और कई पेमेंट एप्लीकेशन का इस्तेमाल करते हैं, यहां वे अक्सर साइबर अपराधों की वजह से होने वाले आर्थिक अपराध और उसे अंजाम देने के तरीकेः-जब ऑनलाइन शॉपिंग की बात आती है, तो विभिन्न सोशल मीडिया साइटों पर हमें तरह-तरह के विज्ञापन दिखते हैं और ये युवाओं को खासतौर पर आकर्षित करते हैं, क्योंकि इन पर ज़बरदस्त सेल ऑफर नज़र आता है। कई

नुकसान को गंभीरता से नहीं लेते हैं। राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल (एनसीआरपी) के अनुसार वर्ष 2021 से जून 2025 तक के बीच 65.9 लाख शिकायतें प्राप्त हुईं। ये आंकड़े दर्शाते हैं कि भारत में न केवल साइबर खतरों से जुड़े मामलों में वृद्धि हुई है, बल्कि ये मामले तेज़ी से बढ़ भी रहे हैं। सिर्फ एक साइबर घटना आपको भारी आर्थिक नुकसान पहुंचाने, कानूनी दिक्कतों में डालने और भावनात्मक रूप से तोड़ने के लिए काफी हो सकती है। कई युवा नौकरीपेशा लोग इस बात से अनजान होते हैं कि भारत में अब लोगों के लिए खास साइबर इंश्योरेंस पॉलिसियां उपलब्ध हैं। ये पॉलिसियां अनधिकृत डिजिटल लेन-देन, ऑनलाइन शॉपिंग धोखाधड़ी, पहचान चुराना, ऑनलाइन वसूली और साइबर खतरों से प्रभावित हुए डिजिटल उपकरणों को ठीक करने में होने वाले खर्चों के लिए आर्थिक मदद पेश करती हैं। जैसे-जैसे डिजिटल जीवनशैली हमारी ज़िंदगी का हिस्सा बनती जा रही है, वैसे-वैसे युवा पीढ़ी के लिए साइबर इंश्योरेंस भी हेल्थ इंश्योरेंस जितना ज़रूरी बनते जा रहा है। साइबर अपराधी युवाओं को कई तरह से ठगी का शिकार बना सकते हैं, इसलिए साइबर खतरों से बचने के लिए आपके पास साइबर इंश्योरेंस का होना बेहद ज़रूरी है। साइबर विज्ञापनों में तो ऐसे लुभावने प्रोडक्ट होते हैं, जो युवाओं को लगातार अपनी ओर आकर्षित करते हैं। उसके बाद जैसे ही खरीदार भुगतान कर देते हैं, वैसे ही फर्जी विक्रेता गायब हो जाते हैं। बाद में उनकी ऑनलाइन मौजूदगी का कोई नामोनिशान तक नहीं मिलता। इस तरह की धोखाधड़ी करने वालों को ढूंढने की सारी कोशिशें नाकामयाब हो जाती हैं और खरीदार को अपने पैसे गंवाने पड़ते हैं। कुछ मामलों में ऐसे विज्ञापनों की लिंक पर टैप या क्लिक करने से आपके मोबाइल पर मैलवेयर इंस्टॉल हो सकता है, जिसकी वजह से आपकी पहचान चुराई जा सकती है और यहां तक कि लोगों के पैसों की डिजिटल चोरी हो सकती है और वे ऑनलाइन वसूली का शिकार भी बन सकते हैं। युवाओं को इस बात की भी सावधानी बरतनी चाहिए कि ऑनलाइन लिंक में छिपा मैलवेयर उनके डिवाइसों को खराब कर सकता है। व्यक्तिगत साइबर पॉलिसी लोगों को कई तरह के कवर पेश करती है, जो कि उपरोक्त घटनाओं की वजह से होने वाले आर्थिक नुकसान से सुरक्षा प्रदान करती है। जहां ऑनलाइन शॉपिंग कवर फर्जी शॉपिंग वेबसाइट या ऐप पर की गई खरीदारी से हुए आर्थिक नुकसान से सुरक्षा पेश करता है, वहीं डेटा रिस्टोरेशन कवर मैलवेयर हमले के बाद डिवाइस को सुरक्षित रखने और उसे पुरानी स्थिति में वापस लाने के लिए आईटी पेशेवरों पर होने वाले खर्चों से आपको बचाता है। स्वास्थ्य संबंधी विकार और इंश्योरेंस की अहमियत- आज के भारतीय युवा जिस चुनौती का सामना कर रहे हैं, वह है जीवनशैली से जुड़ी बीमारियां। हाल के अध्ययन पुष्टि करते हैं कि भारतीय युवाओं में डायबिटीज़, कार्डियक अरेस्ट जैसे मामले तेज़ी से बढ़ रहे हैं, जबकि पहले ये बीमारियां अधेड़ उम्र के लोगों को होती थीं। हाल की रिपोर्टों के अनुसार लगभग 18-40 साल की उम्र के 18फीसदी लोग डायबिटीज़ से जूझ रहे हैं, जबकि 25फीसदी लोग प्री-डायबिटीक हैं। इससे यह बात पता लगती है कि पहले डायबिटीज़ को अधेड़ उम्र में होने वाला रोग माना जाता था, लेकिन अब यह विचारधारा बदल रही है। अध्ययन दर्शाते हैं कि 40 साल से कम उम्र के लोगों में कार्डियक के मामले बढ़ रहे हैं, जो कि गंभीर चिंता का विषय है।इन बीमारियों के बढ़ते मामलों को देखते हुए, युवाओं के लिए बेहद ज़रूरी है कि वे अपने लिए एक ज़बरदस्त हेल्थ इंश्योरेंस पॉलिसी ज़रूर चुनें। और तो और युवाओं के लिए यह भी ज़रूरी है कि वे इसे कम से कम उम्र में लें, ताकि सेहतमंद रहते हुए वे पॉलिसी की प्रतीक्षा अवधि पूरी कर लें। इससे यह बात भी पक्की हो जाएगी कि उन्हें फटाफट कवरेज मिलेगा और जब उन्हें इसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत होगी, तब वे इसे अच्छी तरह से इस्तेमाल कर पाएंगे। जब भी हेल्थ इंश्योरेंस चुनने की बात आए, तो सूझबूझ के साथ ऐसी पॉलिसी लें जिसमें ओपीडी कवर शामिल हो। इस तरह का कवर मामूली बीमारी/विकार के इलाज के लिए खासतौर पर फायदेमंद है, जिसमें आपको अस्पताल में भर्ती होने की ज़रूरत नहीं होती और डॉक्टर की सलाह और बताई गई दवाइयों से आसानी से इलाज हो सकता है। इसके अलावा, एक और चुनौती जिसका यह देश सामना कर रहा है वह है कैंसर और दिल से जुड़ी बीमारियों में आ रही तेज़ी। इसी के मद्देनज़र बेहतर है कि आप क्रिटिकल इलनेस पॉलिसी कवर का चयन करें। यह एक लाभ-आधारित पॉलिसी है, जिसमें कैंसर, कार्डियक सर्जरी के साथ-साथ कई दूसरी बीमारियों का पता लगने पर आपको एकमुश्त राशि प्रदान की जाती है।

नागरिकों की जान बराबर तो फिर मुआवजों में अंतर क्यों?

अब जब धर्मेंद्र प्रधान ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है और प्रदर्शनकारी छात्रों के खिलाफ दर्ज एफआईआर भी रद्द की गई हैं तो कॉकरोच जनता पार्टी द्वारा पेपर-लीक से आत्महत्या करने वाले 21 छात्रों को एक करोड़ रुपए के मुआवजे की मांग अटक सकती है। रेप विक्टिम, एसिड अटैक, सीवर लाइन में मौत, साइबर फ्रॉड जैसे मामलों में मुआवजे के लिए सुप्रीम कोर्ट के फैसले हैं। दुर्घटना में घायल होने वालों और मृतकों के मुआवजे के लिए कानून हैं। वीडियो मैसेज में प्रधानमंत्री ने युवाओं के आक्रोश को स्वीकारा हैं। अन्याय और कुशासन के खिलाफ जेन-जी के आंदोलन को गवर्नेंस में बेहतरी और सरकारी जवाबदेही से नियंत्रित किया जा सकता है। संविधान में नागरिकों को समान अधिकार हैं और एक देश एक कानून के नारे पर जोर है। ऐसे में तंत्र की विफलता और अन्याय से पीड़ित लोगों को समान मुआवजा देने की अपेक्षा से जुड़े 4 पहलुओं को समझेंः- 1. राहुल गांधी ने पिछले 10 सालों में 152 परीक्षाओं में पेपर-लीक का आरोप लगाया है। इसका सामना करने के बजाय भाजपा नेता विपक्ष-शासित राज्यों में परीक्षा माफिया के खिलाफ कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार 2014 से 2024 के दौरान लगभग 1.23 लाख छात्रों ने अलग-अलग कारणों से आत्महत्या की थी। ऐसे में क्या सभी मामलों में एक करोड़ रुपए का मुआवजा दिया जाएगा? 2. सांड के हमले से मृत एक व्यक्ति के परिवार को हाईकोर्ट जज ने 29.32 लाख मुआवजा दिलवाने का आदेश दिया था, जिसे डिवीजन बेंच ने रद्द कर दिया। दुर्घटना के 20 साल बाद, सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस करोल की पीठ ने मानवीय आधार पर 15 लाख रुपए और भूकम्प जैसी आपदा में मरने वालों के परिजनों के लिए 4 लाख के मुआवजे का प्रावधान किया गया था। कोरोना संकट से निपटने के लिए आपदा प्रबंधन कानून लागू हुआ

मुआवजा देने का फैसला दिया। दूसरे मामले में जस्टिस उज्जल भुइयां की पीठ ने सड़क दुर्घटना में घायल 6 महीने की बच्ची के लिए मुआवजे को 45.40 लाख से बढ़ाकर 83.38 लाख कर दिया। उनके अनुसार मानवीय गरिमा और जीवन के अधिकार के प्रति जजों को संवेदनशील रहना चाहिए। एक रिपोर्ट के अनुसार महानगरों में 58 फीसदी से ज्यादा सड़क हादसे आवारा कुत्तों और मवेशियों की वजह से हो रहे हैं। तब तो मवेशियों की वजह से घायल, मरने वालों और फसल नुकसान के सभी मामलों में भी पीड़ितों और किसानों को मुआवजा मिलना चाहिए। 3. सरकारी आंकड़ों के अनुसार कोरोना से लगभग 4.5 करोड़ लोग बीमार हुए और 5.33 लाख मौतें हुईं। 2015 के कानून में बाढ़, सूखा और भूकम्प जैसी आपदा में मरने वालों के परिजनों के लिए 4 लाख के मुआवजे का प्रावधान किया गया था। कोरोना संकट से निपटने के लिए आपदा प्रबंधन कानून लागू हुआ था, लेकिन उसके अनुसार मुआवजा नहीं मिला। 2020-21 के लॉकडाउन की वजह से 989 मृतकों को भी मुआवजा नहीं मिला। खबरों के अनुसार नोटबंदी के दौरान 105 लोग मरे थे, पर उन्हें भी मुआवजा नहीं मिला। पानी-हवा के प्रदूषण से मरने वालों को मुआवजे के लिए व्यावहारिक कानून नहीं हैं। 4. पुलिस लॉकअप में आधे घंटे की अवैध हिरासत के मामले में 2023 में दिल्ली हाईकोर्ट ने 50 हजार रुपए मुआवजे का आदेश दिया था। सजा खत्म होने के बावजूद जेल में रखने के मामले में 2022 में मध्य प्रदेश हाईकोर्ट ने 3 लाख रुपए मुआवजे का आदेश दिया था। दिल्ली सरकार की योजना के अनुसार जेल में अप्राकृतिक मौत (फांसी लगाकर या उत्पीड़न से) पर 7.5 लाख का मुआवजा मिलेगा। जेलों में बंद दो तिहाई कैदी वंचित वर्ग से हैं। ऐसे लाखों लोगों को मुकदमे में रिहाई के बावजूद गैर-जमानती गिरफ्तारी के लिए मुआवजा नहीं मिलता। केंद्र सरकार और सुप्रीम कोर्ट के फैसलों को पूरे देश में लागू करवाने की खास्त जरूरत है। कोरोना संकट से निपटने के लिए आपदा प्रबंधन कानून लागू हुआ था, लेकिन उसके अनुसार मुआवजा नहीं दिया गया है। 2020-21 के कोविड लॉकडाउन

की वजह से 989 मृतकों को भी मुआवजा नहीं मिला है। (ये लेखक के अपने विचार हैं,विराग गुप्ता)

आधुनिक समाचार
हिन्दी साप्ताहिक

पीएम की अपील पर 97फीसदी मंत्री इंस्टाग्राम पर एक्टिव,शाह के 8 लाख फॉलोअर्स बढ़े, ज्यादा पोस्ट किए

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 24 जुलाई 2026 को कैबिनेट बैठक में मंत्रियों से इंस्टाग्राम पर ज्यादा सक्रिय होने, रील बनाने व युवाओं से संवाद करने को कहा था। इसके बाद 24 अगस्त तक 29 में से 28 यानी 97फीसदी कैबिनेट मंत्रियों की इंस्टाग्राम एक्टिविटी बढ़ी है। जदयू के राजीव रंजन सिंह को छोड़ सभी मंत्री ज्यादा सक्रिय हैं। मोदी कैबिनेट में सबसे ज्यादा फॉलोअर्स गृह मंत्री शाह के बढ़े हैं। पिछले 1 महीने में उनके 8.53 लाख फॉलोअर्स बढ़े हैं।रील्स पर जोर- पीएम की सलाह के बाद मंत्रियों ने रील्स पर जोर दिया है। उपभोक्ता मामले, खाद्य व सार्वजनिक वितरण मंत्री प्रल्हाद जोशी ने नीतियों व अहम मुद्दों को रील्स के ज़रिए समझाने पर जोर दिया। मंत्रियों ने पिछले 1 महीने में 1,179 पोस्ट किए हैं। यह पहले की तुलना में 48फीसदी ज्यादा है। पीएम ने खुद सोशल मीडिया पर कई वीडियो जारी किए-नीट पेपर लीक पर जंतर-मंतर पर हो रहे विरोध प्रदर्शन के बीच पीएम मोदी ने कई बार सोशल मीडिया पर वीडियो जारी किया था। इन वीडियो में उन्होंने जेन-जी को पेपर लीक के मुद्दे पर संबोधित किया था। एक वीडियो में पीएम ने उन स्टूडेंट्स को माफ करने की भी बात कही थी जिन्होंने प्रदर्शन के दौरान उन्हें गाली दी थी। सरकार जेन-ज़ी से करेगी बात, वन डे-वन यूनिवर्सिटी प्लान-मोदी सरकार युवाओं से जुड़ने के लिए रोज एक यूनिवर्सिटी में एक केंद्रीय मंत्री भेजने की योजना बना रही है। मंत्री छात्रों से उनकी चिंताओं पर बात करेंगे और देश से जुड़े मुद्दों पर उनका नजरिया समझेंगे। 19 अगस्त को मोदी कैबिनेट की बैठक के दौरान 'वन डे, वन यूनिवर्सिटी' कार्यक्रम के तहत मंत्री तय यूनिवर्सिटी में जाकर छात्रों से अलग-अलग मुद्दों पर चर्चा करेंगे। वे छात्रों की राय सुनेंगे और खासकर युवाओं व छात्रों के लिए चल रही सरकारी योजनाओं की जानकारी देंगे। न्यूज एजेंसी पीटीएआई के सूत्रों के मुताबिक, इसके जरिए जेन-ज़ी से सीधे जुड़ना है। सूत्रों के मुताबिक, शिक्षा मंत्री प्रल्हाद जोशी और युवा मामले एवं खेल मंत्री मनसुख मांडविया को यूनिवर्सिटी और दौरे पर जाने वाले मंत्रियों के साथ तालमेल की जिम्मेदारी दी गई है। हालांकि, मंत्रियों के यूनिवर्सिटी दौरे का पूरा कार्यक्रम अभी सामने नहीं आया है। बैठक में मंत्रियों की सोशल मीडिया पोस्ट की पहुंच पर भी चर्चा हुई। इसमें खासतौर पर युवा लोगों तक संदेश पहुंचाने के लिए ज्यादा मेहनत करने की बात कही गई।

नेपाल बाढ़- 472 लोगों की मौत की पुष्टि, 1500 अभी भी लापता, 290 भारतीयों की तलाश जारी

काठमांडू।नेपाल सेना ने आपदा प्रभावित इलाकों में फंसे 1,024 विदेशी नागरिकों को सुरक्षित निकाल लिया है। बचाव दल अब भी लोगों को सुरक्षित जगह पहुंचाने, क्षतिग्रस्त बुनियादी ढांचे का जायजा लेने और टूटी सड़कों-पुलों के कारण बाकी

इलाकों से कट चुके लोगों तक पहुंचने में जुटे हैं। नेपाल में विनाशकारी बाढ़ और भूस्खलन के बाद कई इलाकों में हालात अब भी गंभीर हैं। बड़ी संख्या में लोगों के फंसे होने और सड़कों-पुलों के टूटने से राहत और बचाव अभियान में मुश्किलें आ रही हैं। नेपाल में बाढ़ की वजह से त्रिशूली-3ए हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट की सुरंग में करीब 100 लोग फंसे हुए हैं। नेपाली सेना की हेलिकॉप्टर रेस्क्यू टीमें उन्हें बाहर निकालने की कोशिश कर रही हैं। नेपाल सेना के प्रवक्ता राजा राम बसनेत ने एएफ़पी को बताया कि फिलहाल सेना का मुख्य फोकस लोगों की तलाश और उन्हें बचाने पर है। उन्होंने कहा कि त्रिशूली-3ए हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट की सुरंग में कुछ लोग फंसे हुए हैं। प्रधानमंत्री कार्यालय ने शुक्रवार को एक बयान में बताया कि इलाके से 350 लोगों को सुरक्षित निकाल लिया गया है, लेकिन करीब 100 लोग अब भी सुरंग में फंसे हुए हैं। चीन ने तिब्बत से 555 फंसे पर्यटकों को निकाला- तिब्बत में 555 फंसे हुए पर्यटकों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया है। शिन्हुआ न्यूज ने चीनी अधिकारियों के हवाले से यह जानकारी दी है। अभी यह पता नहीं है कि तिब्बत से निकाले गए इन 555 पर्यटकों का आंकड़ा नेपाल की ओर से जारी लापता या प्रभावित लोगों के आंकड़ों में शामिल है या नहीं। शिन्हुआ ने यह नहीं बताया कि बचाए गए पर्यटक किन देशों के नागरिक हैं। भारत, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका ने पहले ही बताया है कि उनके नागरिक इस आपदा के बाद लापता हैं। बाढ़ ने नेपाल में सिर्फ लोगों की जान ही नहीं ली, बल्कि देश की नई सरकार के लिए आर्थिक मुश्किलें भी बढ़ा दी हैं। नेपाल की अर्थव्यवस्था काफी हद तक विदेशी मदद, विदेशों में काम करने वाले नेपाली लोगों के भेजे पैसे और चीन-भारत से आने वाले सामान पर निर्भर है। अब बाढ़ ने इस स्थिति को और मुश्किल बना दिया है। नेपाल के राष्ट्रीय आपदा जोखिम न्यूनीकरण और प्रबंधन प्राधिकरण के मुताबिक, बाढ़ से 80 पुल और करीब 40 किलोमीटर पक्की सड़कें खराब हो गई हैं। बाढ़ से प्रभावित इलाका चीन की सीमा के पास है। वहां की कई सड़कें और पुल चीन से सामान लाने और नेपाल से सामान भेजने के लिए बेहद जरूरी हैं। चीन नेपाल का दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है।

बांग्लादेश चीन से जे-10 लड़ाकू विमान खरीदेगा, कहा- 'इसने भारत के राफेल गिराए', भारत को कैसे घेर रहे चीन-पाकिस्तान

नयी दिल्ली/ढाका। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने भी बयान दिया कि भारत-पाकिस्तान संघर्ष में 5 जेट गिरे थे। हालांकि उन्होंने

विमान का नाम नहीं लिया। भारत का रुख-भारत-पाक सीजफायर के दो दिन बाद, यानी 12 मई को एयर मार्शल एके भारती ने कहा था, 'मैं अभी इस पर कोई कमेंट नहीं करना चाहूंगा, हम युद्ध की हालत में हैं। इसका उल्टा असर होगा।' 30 मई को एक इंटरव्यू में चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ अनिल चौहान ने भी न खंडन किया और न ही पुष्टि। उन्होंने कहा, 'असली मुद्दा ये नहीं है कि कितने विमान गिरे, बल्कि ये है कि वे क्यों गिरे और हमने उनसे क्या सीखा। भारत ने अपनी गलतियों को पहचाना, उन्हें जल्दी सुधारा और फिर दो दिन में दुश्मन के ठिकानों को निशाना बनाकर प्रभावी तरीके से जवाब दिया।' 29 जून को इंडोनेशिया के भारतीय दूतावास में कार्यरत भारतीय नेवी ऑफिसर कैप्टन शिव कुमार ने कहा, 'मैं इस बात से सहमत हूं कि हमने कुछ विमान खो दिए और ऐसा पॉलिटिकल लीडरशिप द्वारा (पाकिस्तान के) सैन्य प्रतिष्ठानों और उनके एयर डिफेंस पर हमला न करने के निर्देश के चलते हुआ। भारत के राफेल और चीन के जे10 फाइटर जेट में कौन बेहतर? जवाबः अभी दुनिया में 5 सबसे एडवांस्ड फाइटर जेट्स हैं। जैसे- अमेरिका के एफ-22 रैप्टर और एफ-35 लाइटनिंग 2, चीन के जे-20 माइटी ड्रैगन और जे-35ए और रूस का सुखोई-57 फेलॉन। इन्हें 5वा जनरेशन फाइटर जेट्स कहा जाता है। राफेल और जे-10 दोनों 4.5वां जनरेशन के फाइटर जेट्स हैं। भारतीय सेना के रिटायर्ड कैप्टन और एविएशन एक्सपर्ट अभिनय डोगरा कहते हैं, 'जंग में राफेल, चीन के जे-10सी से कहीं बेहतर है। राफेल के स्पेक्ट्रा इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर सिस्टम और सेंसर चीन के मुकाबले बहुत मैच्योर और भरोसेमंद हैं। हालांकि जे-10सी की स्पीड कुछ ज्यादा है।' ब्रिटेन के एयरपावर और मिलिट्री टेक्नोलॉजी एक्सपर्ट जस्टिन ब्रॉन्क कहते हैं, 'राफेल और जे-10सी की बियॉन्ड विजुअल रेंज, बीवीआर यानी, हवा में दूर से ही होने वाली लड़ाई हो, तो राफेल हर मामले में जे-10सी से काफी आगे निकलेगा। जे-10सी का ईंधन बहुत तेजी से खत्म होता है। इसमें लगने वाली चीन की पीएल-15 मिसाइल्स, राफेल की मेटियोर मिसाइल्स के मुकाबले कमजोर है।' सवाल-4ः बांग्लादेश ने जानबूझकर राफेल और भारत का जिक्र क्यों किया? जवाबः शेख हसीना के पीएम रहते बांग्लादेश का झुकाव भारत की तरफ था। 5 अगस्त 2024 को बांग्लादेश की पीएम शेख हसीना को तख्तापलट के बाद भागकर भारत आना पड़ा था। उसके बाद बांग्लादेश में मोहम्मद यूनुस की अंतरिम सरकार बनी और फरवरी 2026 से पीएम तारिक रहमान की पार्टी बीएनपी सत्ता में हैं। 1. चीन के दौरे, भारत के न्योते का जवाब नहीं दिया-पीएम मोदी ने तारिक को जीत की बधाई के साथ भारत आने का न्योता भी दिया था। हालांकि तारिक रहमान मलेशिया और चीन पहुंचे। उन्होंने चीन को 'सबसे कीमती और भरोसेमंद पार्टनर' कहा। भारत ने 12 और 13 सितंबर को दिल्ली में हो रहे ब्रिक्स सम्मेलन के लिए तारिक को आमंत्रित किया। इस पर भी अब तक बांग्लादेश की तरफ से जवाब नहीं आया है। 2. अपने डेवलपमेंट प्रोजेक्ट भारत से लेकर चीन को दिए- 22 से 26 जून 2026 तक तारिक के चीन दौरे के बीच बांग्लादेश ने भारत के तट से महज 80 किमी दूर अपने मोंगला पोर्ट के डेवलपमेंट का प्रोजेक्ट चीन को देने का समझौता कर लिया। जबकि पहले भारतीय कंपनियों से बात चल रही थी। दूसरे समझौते के तहत भारत की 'चिकन नेक' से 100 किमी दूर तीस्ता नदी को भी चीन मैनेज करेगा। भारत ने कहा था कि वह इस घटनाक्रम पर बारीकी से नजर रख रहा है। 12 दिसंबर 1996 को दोनों देशों में 30 सालों के लिए हुई गंगा जल-संधि की मियाद भी खत्म हो रही है। इसे रिन्यू करने पर अब तक बात नहीं हुई है। 3. पाकिस्तान-तुर्किये-सऊदी के साथ डील की तैयारी-21 अगस्त को बांग्लादेश के विदेश राज्य मंत्री हुमायूं कबीर ने कहा, 'बांग्लादेश सऊदी अरब, पाकिस्तान और तुर्किये के मक्का-पैक्ट में शामिल हो सकता है। मक्का पैक्ट में शर्त है कि इसके किसी भी एक सदस्य देश पर हमला हो, तो बाकी सभी देशों पर हमला माना जाएगा। अब चीन से जे-10सी फाइटर जेट्स के सौदे में राफेल और जे-10 की तुलना के बहाने जाहिद रहमान ने भारत के राफेल गिराने के पाकिस्तान के दावे को हवा दी है। जाहिद ने ये भी कहा, '5 अगस्त 2024 को बांग्लादेश दोबारा आजाद हुआ है। उससे पहले बांग्लादेश अपने हितों के मद्देनजर फॉरेन और डिफेंस पॉलिसी के फैसले नहीं ले पाता था। हम चीनी जे-10सी खरीदने पर सोच भी नहीं पाते, लेकिन अब हम इसे खरीदने जा रहे हैं।' विदेशी मामलों के जानकार और जेएनयू के प्रोफेसर राजन कुमार कहते हैं, 'ऑपरेशन सिंदूर के दौरान बांग्लादेश ने सोच-समझकर बयान जारी किए थे। हालांकि अब बीएनपी सरकार अपनी पुरानी नीति पर चलती दिखाई दे रही है। हसीना से पहले बांग्लादेश की पीएम और तारिक रहमान की मां खालिदा जिया भी एंटी इंडिया स्टैंड के लिए जानी जाती थीं।' तो क्या अब चीन, पाकिस्तान के बाद बांग्लादेश को भी मजबूत कर रहा है? जवाबः 2002 से चीन और बांग्लादेश के बीच डिफेंस एग्रीमेंट है। हथियारों के अलावा दोनों देशों की सेनाएं जॉइंट एक्सरसाइज करती हैं। बांग्लादेश का चीन से फाइटर जेट या हथियार खरीदना भी कोई नई बात नहीं है। कुछ आंकड़े देखिए- स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट, सीपरी की 2024 की रिपोर्ट के मुताबिक, पाकिस्तान के बाद बांग्लादेश चीनी हथियारों का दूसरा सबसे बड़ा खरीदार देश है। 2019 से 2023 के बीच चीन के हथियार एक्सपोर्ट में पाकिस्तान की हिस्सेदारी 61फीसदी थी। फिर 11फीसदी हिस्सा बांग्लादेश का था। मिंग क्लास पनडुब्बी से लेकर टैंक तक बांग्लादेश के 72फीसदी हथियार और उपकरण चीन के बने हैं। अभी बांग्लादेश एयरफोर्स के पास 212 विमान हैं। इनमें से 44 फाइटर जेट्स हैं और इन 44 में से 36 विमान चीने के एफ-7 हैं और बाकी 8 रूसी मिग-29बी हैं। यानी बांग्लादेश एयरफोर्स का 80फीसदी फाइटर स्क्वाड्रन चीनी जेट्स का है। बांग्लादेश इंस्टीट्यूट ऑफ पीस एंड सिक्योरिटी स्टडीज के प्रेसिडेंट मेजर जनरल (रिटायर्ड) मुनीरुज्जमान के मुताबिक, बांग्लादेश का नए फाइटर जेट्स खरीदने का प्लान पुराना है, हालांकि अभी ये सौदा बातचीत की स्टेज में है। दरअसल, बांग्लादेश ने 2009 में 'फोर्सेज गोल 2030' नाम का प्लान शुरू किया था। इसके तहत बांग्लादेश की तीनों फोर्सेज को 2030 तक आधुनिक हथियारों से लैस करने की योजना है। इसके तहत बांग्लादेश, चीन से बैटल टैंक, कई मिसाइल्स, रॉकेट लॉन्चर, रडार सिस्टम और एफ-7 जेट्स और रूस से 16 याक-130 लाइट अटैक एयरक्राफ्ट, एमआई-17 और कुछ रडार सिस्टम खरीद चुका है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, जे-10सी बांग्लादेश की विशलिस्ट में तब शामिल हुआ, जब बांग्लादेश एयरफोर्स के चीफ मार्शल हसन महमूद खान ने 2024 में चीन का दौरा किया। उन्होंने चीन से कुछ लड़ाकू जेट और हेलीकॉप्टर खरीदने की बात की। मार्च 2025 में मोहम्मद यूनुस के चीन दौरे पर ये बातचीत आगे बढ़ी। बांग्लादेश चीन से चौथी जनरेशन के कुछ फाइटर जेट्स, अटैक हेलीकॉप्टर और ड्रोन वगैरह खरीदने की भी बात कर रहा है। जनरल मुनीरुज्जमान कहते हैं, 'बेशक बांग्लादेश को नए लड़ाकू विमानों की जरूरत है, लेकिन आज दुनिया में एक नए तरह का जियो-पॉलिटिकल डिवीजन है। खास तौर पर अमेरिका और चीन के बीच तनाव है। इसलिए किसी भी देश से जेट खरीदने से पहले इसके राजनीतिक असर की एनालिसिस करना भी जरूरी है।'

सवाल-6ः इससे भारत को खतरा क्या है? जवाबः 1971 की जंग हारने के बाद पाकिस्तानी नेवी को बंगाल की खाड़ी से भागना पड़ा था। तब से इस इलाके में पाकिस्तान की मौजूदगी नहीं रही है। पकिस्तान से कोई जंग हुई, तो भी पूर्वी मोर्चे से भारत को कोई बड़ा खतरा नहीं हुआ। हालांकि अब भारत के लिए कई चिंताएं हैंष्55 साल बाद जून 2026 में पाकिस्तान को चीन से नई 'हैंगोर क्लास' पनडुब्बियां मिली हैं। पकिस्तान का कहना है कि वो इन्हें बंगाल की खाड़ी में तैनात करेगा। बांग्लादेश के पाकिस्तान के नजदीक आने से तनाव की स्थिति में भारत के लिए दो मोर्चों पर जंग का खतरा बढ़ सकता है। बांग्लादेश का मोंगला पोर्ट भारतीय जमीन से सिर्फ 80 किमी दूर है। जबकि उसका तीस्ता नदी प्रोजेक्ट भारत की 'चिकन नेक', यानी सिलीगुड़ी कॉरिडोर से सिर्फ 100 किमी दूर है। स्ट्रैटेजिक एनालिस्ट ब्रह्म चेलानी कहते हैं, 'अगर बांग्लादेश मक्का पैक्ट में भी शामिल होता है, तो अरब सागर, बंगाल की खाड़ी और भूमध्य सागर के इलाके में सिक्योरिटी से जुड़ा पूरी इन्फ्रास्ट्रक्चर बदलेगा।' बांग्लादेश शामिल हुआ, तो सऊदी-पाकिस्तान-तुर्किये को साउथ एशिया में मजबूत पकड़ मिल जाएगी। इनकी पहुंच भारत के पूर्व तक हो जाएगी।

लॉरेंस का घर पूछा तो झिझका दुकानदार,बुजुर्ग बोले लैंडलॉर्ड का बेटा; चंडीगढ़ जाकर गलत संगत में पड़ा

पंजाब। पंजाब के अबोहर का दुतारांवाली गांव। बाहर गांव का बोर्ड, अंदर जाती सड़क के दोनों तरफ खेत। कहीं बैलगाड़ी गुजर रही है, तो कहीं पेड़ के नीचे ताश खेलते बुजुर्ग। यही गैंगस्टर लॉरेंस का गांव है। लॉरेंस को गुजरात की साबरमती जेल में आज 3 साल पूरे हो गए हैं। अमेरिकी जांच एजेंसी एफबीआई के ऑपरेशन हॉर्डबॉल में लॉरेंस पर जेल से नेटवर्क चलाने के आरोप कुछ रिपोर्टर उसके गांव दुतारांवाली पहुंचे। गांव में पहुंचते ही लॉरेंस का घर पूछा तो किराना दुकानदार थोड़ा झिझका, फिर रास्ता बता दिया। आगे मंदिर के पास मिले बुजुर्गों से बात हुई तो जुर्म की चर्चा से पहले लॉरेंस के बचपन की बातें सामने आईं- क्रिकेट, स्कूल और गांव का खेल का मैदान। ग्रामीणों के मुताबिक, लॉरेंस के परिवार के पास करीब 110 किले (एकड़) जमीन और 3-4 कोठियां हैं। एक ग्रामीण ने कहा, 'उसे फिरौती मांगने की जरूरत नहीं थी।' ग्रामीणों ने यह भी बताया कि आखिरी बार लॉरेंस को 10-12 साल पहले गांव में देखा गया था। तब से वह सिर्फ मीडिया में ही नजर आता है। वहीं, ग्राउंड में खेल रहे बच्चों ने लॉरेंस के बारे में कैमरे पर बात करने से इनकार कर दिया। घर पूछने पर दुकानदार झिझका, फिर मंदिर का रास्ता बताया। गांव में लॉरेंस का घर और उसके दादा की याद में बना मंदिर तलाशने के लिए टीम ने एक किराना की दुकान पर रुककर रास्ता पूछा। दुकानदार पहले थोड़ा झिझका, लेकिन बाद में मंदिर की तरफ जाने का रास्ता बता दिया। आगे बढ़ने पर मंदिर के पास पेड़ के नीचे कुछ बुजुर्ग ताश खेलते मिले। टीम ने अपना परिचय दिया तो उन्होंने बातचीत शुरू की। दादा की याद में मंदिर, यहीं मिले गांव के बुजुर्ग-दुतारांवाली में लॉरेंस के दादा की याद में मंदिर बना हुआ है। इसी मंदिर के पास मिले बुजुर्गों से बातचीत में लॉरेंस के बचपन की बातें सामने आईं। बुजुर्गों ने बताया कि बचपन में लॉरेंस खेलकूद में आगे रहता था। उसे क्रिकेट का शौक था। क्रिकेट टूर्नामेंट के लिए घर से पैसे लाता था. गांव निवासी अशोक कुमार ने लॉरेंस के बचपन को याद करते हुए कहा कि वह खेलकूद में ज्यादा ध्यान देता था। अशोक के मुताबिक, लॉरेंस गांव में क्रिकेट टूर्नामेंट करवाने के लिए अपने घर से पैसे लगाता था। 'लॉरेंस हमारे गांव में बहुत अच्छा लड़का था। लॉरेंस नशे के खिलाफ रहता था और नशा करने वाले युवाओं को रोकता-समझाता था' 5वीं तक साथ पढ़े, तब कोई गैंग या ग्रुप नहीं था। लॉरेंस के साथ पांचवीं कक्षा तक पढ़े दर्शी राज ने भी उसके बचपन की बातें बताईं। उन्होंने कहा कि उस समय लॉरेंस खेलकूद में रहता था और बच्चों को खिलवाने के लिए अपने घर से पैसे लगाता था। दर्शी राज ने बताया कि वह खुद मध्यम परिवार से हैं। उनके मुताबिक, लॉरेंस ने उन्हें भी अपनी तरफ से खिलवाने के लिए पैसे दिए थे। उन्होंने कहा कि लॉरेंस पढ़ाई में भी अच्छा था और स्कूल के शिक्षकों के साथ उसका रिश्ता पिता-बेटे जैसा था। बचपन में उसका कोई गैंग या ग्रुप नहीं था। वह खेल में ही रमा रहता था। परिवार के पास 110 किले जमीन, 3-4 कोठियां बातचीत में लॉरेंस के परिवार की संपत्ति का भी जिक्र आया। ग्रामीणों के मुताबिक, परिवार के पास करीब 110 किले (एकड़) जमीन और 3-4 कोठियां हैं। उसके पिता खेती से जुड़े रहे हैं। गांव में रहने वाले कृष्ण कुमार ने कहा कि परिवार आर्थिक रूप से संपन्न है। जब परिवार के पास अपनी जमीन-जायदाद है तो लॉरेंस को किसी से रंगदारी मांगने की जरूरत नहीं थी। लोगों ने गांव में जरूरतमंद परिवारों की मदद और लड़कियों की शादी में पैसे देने की बात भी कही। कृष्ण कुमार बताते हैं कि लॉरेंस के परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी थी। परिवार के पास अपनी जमीन थी, इसलिए लॉरेंस को किसी से रंगदारी मांगने की जरूरत नहीं थी।कृष्ण कुमार के मुताबिक, लॉरेंस पढ़ाई में अच्छा था।

नेपाल त्रासदी से कैसे बचा बिहार,2 घंटे देर होती तो 8 जिले बह जाते,22 घंटे में 35 लाख क्यूसेक पानी आया

पटना। बगहा के गंडक बैराज के एग्जक्यूटिव इंजीनियर मो. इकबाल ने जानकारी दी की 'अगर पटना से हमें दो घंटे भी लेट जानकारी मिलती तो हालात कंट्रोल नहीं कर पाते। पहले

जानकारी मिलने से पानी को समय से बैराज से छोड़ने का मौका मिल गया और गंडक के तटबंधों पर अचानक ज्यादा प्रेशर नहीं आया।' एग्जक्यूटिव इंजीनियर ने बताया, 26 अगस्त को सुबह 11 बजकर 10 मिनट पर दिल्ली से पटना सचिवालय को नेपाल त्रासदी के बारे में जानकारी दी गई। कहा गया कि आपके यहां नेपाल से सटे उत्तर-पश्चिम इलाके में स्थिति बिगड़ सकती है। पटना से तुरंत बगहा डीएम को फोन पर सारी जानकारी दी गई। इसके बाद डीएम ने गंडक बैराजइंचार्ज से गंडक में पानी की स्थिति जानी। उस वक्त बैराजमें साढ़े 5 लाख क्यूसेक पानी था, जबकि उसकी क्षमता साढ़े 8 लाख क्यूसेक थी। अधिकारियों को यह पता नहीं था कि नेपाल से कितना पानी आएगा, लेकिन इतना जरूर जानते थे कि अगर नेपाल से पानी आने से पहले बैराजके पानी को खाली कर उसकी क्षमता नहीं बढ़ाई गई तो स्थिति नियंत्रण से बाहर हो सकती है। तत्काल डेढ़ लाख क्यूसेक पानी छोड़ने का आदेश दिया गया। 36 फाटक खोले गए। इसके बाद हर एक घंटे पर करीब डेढ़ लाख क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा था। अगर एक साथ 4-5 लाख क्यूसेक पानी छोड़ दिया जाता तो आसपास के इलाकों में बाढ़ जैसी स्थिति आ सकती थी। गंडक की चौड़ाई ज्यादा नहीं है। इसलिए नियंत्रित तरीके से पानी छोड़ गया। गंडक बैराज से 22 घंटे में करीब 35 लाख क्यूसेक पानी छोड़ा गया। बैराज से छोड़ा गया पानी गंडक से होते हुए धीरे-धीरे गंगा में मिलता गया। इसी बीच गंगा का जलस्तर भी बढ़ रहा था, लिहाजा वैशाली में जहां गंडक गंगा में मिली, वहां बाढ़ जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई। दूसरी तरफ गंडक से लगे सभी जिलों के अधिकारियों को अलर्ट कर दिया गया। करीब पांच जिलों के 70 से ज्यादा ब्लॉक में अधिकारियों की छुट्टियां रद्द कर दी गईं। नदी किनारे बसे लोगों को माइक के जरिए बताया गया कि वे जितनी जल्दी हो सके ऊंचे स्थानों पर चले जाएं। बाढ़ की चपेट में कितने जिले? बिहार में गंडक के उद्गम से लेकर गंगा के बंगाल में प्रवेश करने तक 13 जिलों के नदी किनारे के हिस्से बाढ़ की चपेट में आए हैं। करीब 20 लाख लोग या तो बेघर हो गए हैं या पानी में रहने को मजबूर हैं। वैशाली और खगड़िया में स्थिति ज्यादा खराब हुई है। वैशाली में गंडक का पानी गंगा में मिलता है, यहां पिछले 16 घंटे में साढ़े 28 लाख क्यूसेक पानी गंगा में आया।यही पानी समस्तीपुर, बेगूसराय, लखीसराय, मुंगेर, खगड़िया, भागलपुर और कटिहार होकर बंगाल गया। इन जिलों के दियारा इलाके में बाढ़ जैसी स्थिति बन गई है। नेपाल का पानी गंगा तक कैसे पहुंचता है? नेपाल के रसुवा जिले में बुधवार को आई बाढ़ के बाद बिहार के गंडक बैराज से 22 घंटे में करीब 35 लाख क्यूसेक पानी छोड़ा गया है। यह पानी गंगा तक कैसे पहुंचा, इसे समझिए। नेपाल के ऊपरी जलग्रहण क्षेत्र में अचानक पानी बढ़ने से नारायणी/गंडकी नदी में उफान आया, जो भारत में प्रवेश करने के बाद गंडक कहलाती है। यह पानी वाल्मीकिनगर गंडक बैराजतक पहुंचा। बैराजके गेट खोलकर अतिरिक्त पानी डाउनस्ट्रीम गंडक में छोड़ा गया। 26 अगस्त को नेपाल में फ्लैश फ्लड के बाद बिहार में गंडक के जलस्तर में अचानक बढ़ोतरी की आशंका जताई गई और वाल्मीकिनगर बैराजके सभी 36 गेट खोले गए। गंडक का तेज बहाव पश्चिम चंपारण से होते हुए गोपालगंज, सारण और वैशाली के आसपास पहुंचा।गंडक गंगा नदी में हाजीपुर-सोनपुर के पास मिलती है। वैशाली में गंगा और गंडक दोनों नदियों के बढ़े जल स्तर का असर दिख रहा है। 27 अगस्त को जल संसाधन विभाग के आंकड़ों में वैशाली के हाजीपुर क्षेत्र में गंगा का जलस्तर सामान्य से ऊपर दर्ज किया गया है। आइए, अब जिला वाइज समझते हैं पूरे हालात- पिछले दिनों गंडक में अचानक पानी बढ़ने से वैशाली जिले के करीब 10 से ज्यादा ब्लॉक के 700 घरों में पानी घुस गया। राघोपुर के चकसिंगार, वीरपुर, जुरावनपुर बरारी, जुरावनपुर करारी, फतेहपुर, रामपुर, जफराबाद, जहांगीरपुर, शिवनगर सहित कई इलाकों में बाढ़ का पानी फैल गया है।

निचले इलाकों में पानी बढ़ने से ग्रामीणों की मुश्किलें लगातार बढ़ रही हैं। बाढ़ का पानी अब जुरावनपुर थाना परिसर में भी प्रवेश कर गया है। जुरावनपुर में मोबाइल टावर का निचला हिस्सा बाढ़ के पानी में डूब गया है। जुरावनपुर बरारी स्थित बिंदा चौक तक भी पानी पहुंच चुका है। बगहा में 500 से ज्यादा घरों को कराया गया खाली-पश्चिम चंपारण के बगहा

में गंडक का पानी कई गांव में भर गया है। बगहा-2 ब्लॉक में 500 से ज्यादा घरों को खाली कराया गया। यहां के लोगों को ऊंचे जगहों पर बसाया गया है। कम्युनिटी किचन की शुरुआत की गई है। गोपालगंज के 6 और मोतिहारी में 3 ब्लॉक के खेतों में बाढ़ का पानी घुस आया है। यहां भी निचले इलाके के लोगों को निकालकर ऊंचे स्थानों पर बसाया जा रहा है।

समस्तीपुर में दो नदियां बहती हैं, एक बूढ़ी गंडक और दूसरी गंगा। जिले का ज्यादातर क्षेत्र दोनों के बीच है। यहां गंगा तीन ब्लॉक से गुजरती है। तीनों ब्लॉक में फिलहाल बाढ़ जैसी स्थिति नहीं है। प्रशासन ने किनारे में रहने वाले लोगों को सावधान रहने की अपील की है। बेगुसराय में भी ऐसे ही हालात हैं।

समस्तीपुर और बेगुसराय के दीयारा इलाके के क्षेत्रफल ज्यादा होने के कारण यहां घरों और गांवों तक पानी नहीं पहुंचा है। बाढ़ की स्थिति नहीं बनी है। लखीसराय गंगा दो ब्लॉक से गुजरती है, बरैया, पिपरिया।

इन दोनों ब्लॉक के 10 से ज्यादा गांव में पानी घुस आया है। यहां करीब 25 हजार लोग प्रभावित हुए हैं। किनारे पर रहने वाले लोगों को माइक के जरिए सावधान किया जा रहा है। एनडीआरएफ की दो टीमें लगाई गईं हैं।

खगड़िया में सात नदियां बहती हैं। यहां गंगा से बागमती और बूढ़ी गंडक मिलती है। 4 ब्लॉक (परबत्ता, गोगड़ी, खगड़िया सदर 1, और मानसी) गंगा के तटीय इलाके में हैं।

खगड़िया सदर में गंगा से बूढ़ी गंडक भी मिलती है। यहां लोगों को सावधान रहने के लिए माइकिंग की जा रही है।

4 ब्लॉक के 25 पंचायतों में 75 हजार से ज्यादा घर पानी में हैं।

सिर्फ परबत्ता में 15 हजार से ज्यादा पॉलिथिन बांटने की तैयारी है।

सरकार की तरफ से निशुल्क नाव सेवा चलाई जा रही है। एनडीआरएफ-एसडीआरएफ टीम को तैनात किया गया है। इन तीनों ब्लॉक के अंचलाधिकारियों की छुट्टियां रद्द कर दी गई हैं।

मुंगेर में गंगा नदी के उफान के चलते निचले इलाके के तीन ब्लॉक में पानी पहुंचा है।

बुधवार रात से गंगा का जलस्तर खतरे के निशान से महज 50 सेंटीमीटर नीचे आकर स्थिर हो गया था।

आपदा प्रबंधन विभाग के अनुसार, गुरुवार सुबह 10 बजे मुंगेर में गंगा का जलस्तर 38.83 मीटर दर्ज किया गया सीताचरण जापुर के रहने वाले हरेराम ने बताया कि 'हमारे गांव में करीब एक हफ्ते से पानी फैला हुआ है।

पानी में हेलकर करीब एक हफ्ते से इधर-उधर समय काट रहे हैं। कोई मुखिया या अधिकारी देखने तक नहीं आया है।

अनाज कल-परसों से सरकार की तरफ से भिजवाया जा रहा है। हमारे इलाके में करीब 150 घर प्रभावित हुए हैं, इनमें 2,000 लोग फंसे हैं।

' जिले के सदर मुंगेर, बरियारपुर, जमालपुर, धरहरा, हवेली खड़गपुर और असरगंज प्रखंडों के निचले इलाकों में पानी घुस गया है। कई स्थानों पर घर पानी से घिर गए हैं और धान की फसलें भी डूब गई हैं।

जिलाध्यक्ष शशांक मिश्रा-देश का युवा और नौजवान खुद को भाजपा सरकार से लगातार ठगा हुआ महसूस कर रहा है

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। सोनभद्र कचहरी तिराहे पर आज भारतीय युवा कांग्रेस के जिलाध्यक्ष शशांक मिश्रा के नेतृत्व में युवाओं के भविष्य, शिक्षा, रोजगार और छात्रों के लोकतांत्रिक अधिकारों के सवाल के मद्देनजर पेपर लीक, व दिल्ली में छात्रों पर लाठीचार्ज-पैलेट गन इस्तेमाल से लेकर व बिहार में एके-47 के फायरिंग आदेश तक–हर दमन पर अब जवाबदेही तय होगी सोनभद्र में युवा कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने 20 जुलाई को छात्रों पर हुई लाठीचार्ज की कार्रवाई और पैलेट गन के इस्तेमाल को लेकर सवाल उठाते हुए पूरे मामले में जवाबदेही और निष्पक्ष जांच के साथ साथ अमित शाह के इस्तीफे की मांग को लेकर किया धरना प्रदर्शन आगे और उग्र आंदोलन की चेतावनी। जिलाध्यक्ष शशांक मिश्रा ने कहा कि आज देश का युवा और नौजवान खुद को भाजपा सरकार से लगातार ठगा हुआ महसूस कर रहा है। रोजगार, शिक्षा और बेहतर भविष्य की उम्मीद लगाए बैठे युवाओं की आवाज सुनने के बजाय यदि उनके सवालों के जवाब लाठी, गोली और बल प्रयोग से दिए जा रहे, तो यह लोकतंत्र के लिए गंभीर चिंता का विषय है सरकार को छात्रों की आवाज दबाने के बजाय उनकी समस्याओं को सुनना और संवाद के माध्यम से समाधान निकालना चाहिए। युवा कांग्रेस के प्रदेश उपाध्यक्ष अभिषेक चौबे ने कहा कि जिस देश की युवा शक्ति अपने भविष्य को लेकर सवाल पूछती है, उसके सवालों का जवाब लाठी और गोली से नहीं दिया जा सकता। सरकार को युवाओं की आवाज

सुननी होगी और उनके अधिकारों का सम्मान करना होगा। युवा कांग्रेस के पूर्व प्रदेश महासचिव युवा कांग्रेस धीरज पाण्डेय ने कहा कि लगातार बढ़ती बेरोजगारी और युवाओं में बढ़ता असंतोष सरकार की नीतियों पर गंभीर सवाल खड़े करता है देश का नौजवान अपने भविष्य को लेकर जवाब मांग रहा है और सरकार को इन सवालों का जवाब देना चाहिए अन्यथा देश का युवा अब चुप नही बैठेगा सरकार को जिम्मेदारी और जवाबदेही तय करनी होगी, जिला महासचिव युवा कांग्रेस रोहिल मिश्रा ने कहा कि भाजपा सरकार को अपने अहंकार से बाहर निकलकर छात्रों और युवाओं की समस्याओं को समझना चाहिए लोकतंत्र में असहमति को दबाना किसी भी रूप में उचित नहीं है। शहर अध्यक्ष अनुपम द्विवेदी ने कहा कि आज देश का नौजवान अपने अधिकारों और बेहतर भविष्य के लिए संघर्ष कर रहा है। युवा कांग्रेस छात्रों और नौजवानों की आवाज को मजबूती से उठाती रहेगी। शहर कांग्रेस महासचिव प्रांजल श्रीवास्तव ने कहा कि युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ देश के भविष्य के साथ खिलवाड़ है। सरकार को छात्रों की आवाज सुननी चाहिए और उनके सवालों का जवाब देना चाहिए। प्रदर्शन के दौरान कार्यकर्ताओं ने केंद्र सरकार और संबंधित प्रशासन से छात्रों से जुड़े मामलों में पारदर्शिता, जवाबदेही और निष्पक्ष जांच की मांग की।धरना प्रदर्शन के दौरान वक्ताओं ने कहा कि छात्रों और युवाओं से जुड़े सवालों का समाधान लोकतांत्रिक संवाद के माध्यम से होना चाहिए, बल प्रयोग के माध्यम से नहीं युवा कांग्रेस नेताओं ने कहा कि छात्रों के अधिकार, रोजगार, शिक्षा, लोकतंत्र और जवाबदेही के मुद्दे पर संघर्ष लगातार जारी रहेगा अमित शाह को पैलेट गन का जवाब देना होगा भागने से काम नही चलेगा नही तो आने वाले चुनाव में युवा अपने मताधिकार के माध्यम से अपने सवालों और मुद्दों पर अपना जनादेश अवश्य देगा। इस मौके पर युवा कांग्रेस शहर उपाध्यक्ष मोहम्मद साद अंसारी, शहर महासचिव कनिष्क भार्गव, पूर्व कांग्रेस नेता सत्येंद्र दुबे तथा युवा कांग्रेस कार्यकर्ता सूर्य प्रकाश, रोहित पाण्डेय, एडवोकेट रवि शंकर उपाध्याय, मोहित कुशवाहा, पुनीत कुमार सहित अन्य कार्यकर्ता प्रदर्शन में शामिल हो कर आवाज़ बुलंद किए। भारतीय युवा कांग्रेस-सोनभद्र।

अकीदत और शान-ओ-शौकत के साथ मनाया गया 1501वां ईद-ए-मिलादुन्नबी का जश्न, शहर में निकले पुरअसर जुलूस

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स.अ.व.) के

1501वें मिलाद-उन-नबी का जश्न आज शहर में पूरे अकीदत, एहतराम और शान-ओ-शौकत के साथ मनाया गया। नबी की विलादत की मुबारक घड़ियों और 'सुबह-ए-बहारां' का इस्तकबाल करने के लिए भोर में नई मस्जिद से पहला जुलूस निकाला गया, जो शहर के विभिन्न हिस्सों में गश्त करने के बाद पुनः नई मस्जिद पहुंचकर संपन्न हुआ। दोपहर बाद ज़ोहर की नमाज़ के उपरांत ईद-ए-मिलादुन्नबी का मुख्य जुलूस जामा मस्जिद से रवाना हुआ। यह जुलूस नई मस्जिद होते हुए पूरे शहर में गश्त करने के पश्चात पूरब महाल में जाकर समाप्त हुआ। जुलूस में बच्चे, बूढ़े और नौजवान हाथों में परचम लिए अपने आका की आमद के नारे और नात-ए-पाक गुनगुनाते हुए शामिल हुए। फिजा में 'निसार तेरी चहल पहल पे हजारों ईदे रबीउल अव्वल... सिवाय इब्लीस के जहां में सभी तो खुशियां मना रहे हैं' का तराना गूंजता रहा। प्रशासन की ओर से सुरक्षा और कानून व्यवस्था के कड़े इंतज़ाम रहे। सीओ सदर रणधीर मिश्रा की देखरेख में पुलिस बल मुस्तैद रहा और जुलूस शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ।इस मुबारक मौके पर अंजुमन इस्लामिया के सदर जनाब मुश्ताक खान, अंजुमन फैज़ान-ए-मिलाद के सदर जनाब हिदायत उल्ला खान, अजहर खान, मौलाना खुर्शीद, हाफिज जावेद, नियाज़ सोनभद्री, इमरान बख्शी, तौसीफ अहमद और सैफी खान समेत बड़ी संख्या में उलेमा और अकीदतमंद मौजूद रहे।

राज्य महिला आयोग की सदस्य गीता विश्वकर्मा ने जिला कारागार एवं बाल गृह बालिका का किया निरीक्षण

महिला बंदियों को उपलब्ध कराई जा रही सुविधाओं एवं खान-पान व्यवस्था का लिया जायजा,बाल गृह बालिका में बालिकाओं की सुविधाओं एवं व्यवस्थाओं की समीक्षा कर दिए आवश्यक निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग की सदस्य श्रीमती गीता विश्वकर्मा ने आज जनपद में जिला कारागार का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने महिला बंदियों को उपलब्ध कराई जा रही विभिन्न सुविधाओं, खान-पान, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता संबंधी व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने महिला बंदियों से संवाद कर उनकी समस्याओं एवं आवश्यकताओं के संबंध में जानकारी प्राप्त की तथा संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इसके उपरांत राज्य महिला आयोग की सदस्य ने बाल गृह बालिका का भी निरीक्षण किया। उन्होंने बाल गृह में निवासरत बालिकाओं को उपलब्ध कराई जा रही सुविधाओं, भोजन, रहन-सहन, स्वास्थ्य, शिक्षा एवं सुरक्षा संबंधी व्यवस्थाओं की जानकारी ली। उन्होंने बालिकाओं से संवाद कर उनकी समस्याओं एवं आवश्यकताओं के बारे में भी

जानकारी प्राप्त की। निरीक्षण के दौरान उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि महिला बंदियों एवं बाल गृह में निवासरत बालिकाओं को शासन द्वारा निर्धारित मानकों के अनुरूप सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं। साफ-सफाई, गुणवत्तापूर्ण भोजन, स्वास्थ्य सेवाओं एवं सुरक्षा व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया जाए तथा किसी भी प्रकार की समस्या पाए जाने पर तत्काल उसका समाधान सुनिश्चित किया जाए। राज्य महिला आयोग की सदस्य ने कहा कि महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा, सम्मान और कल्याण सुनिश्चित करना शासन की प्राथमिकता है। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि व्यवस्थाओं की नियमित निगरानी करते हुए संवेदनशीलता के साथ कार्य किया जाए।

सोनभद्र में ईद मिलादुन्नबी के अवसर पर निकला जुलूस,अकीदतमंदों ने पैगंबर मोहम्मद के जन्मदिन पर दिया भाईचारे का संदेश

सोनभद्र। बुधवार को बारावफात (ईद-मिलादुन्नबी) का पर्व धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर पैगंबर हजरत मोहम्मद साहब के जन्मदिन पर मुस्लिम समुदाय द्वारा भव्य जुलूस निकाला गया। अकीदतमंदों ने इस दौरान भाईचारे और अमन-चैन का संदेश दिया। मुख्यालय सहित दुद्धी, बभनी, म्योरपुर, रेणुकूट, अनपरा, शक्तिनगर, ओबरा, घोरावल और करमा जैसे विभिन्न क्षेत्रों में भी जुलूस निकाले गए। रॉबर्ट्सगंज में जुलूस की शुरुआत जामा मस्जिद से जोहर की नमाज के बाद हुई, जो मेन मार्केट होते हुए नई मस्जिद पहुंचा उसके बाद जुलूस जुलूस विभिन्न चौराहे से होते हुए वापस नई मस्जिद पर पहुंच कर समापन हो गया- नई मस्जिद के पेश इमाम मौलाना खुर्शीद साहब ने लोगों को संबोधित करते हुए देश में अमन-चैन, आपसी भाईचारे, सद्भाव और मोहब्बत का पैगाम दिया। जुलूस में शामिल अकीदतमंदों ने पैगंबर की शान में धार्मिक नारे लगाए और उनकी पैदाइश की खुशी मनाई। जुलूस के दौरान पूरब महाल के युवाओं द्वारा तैयार की गई काबा और मदीना की झांकी लोगों के आकर्षण का मुख्य केंद्र रही। इस झांकी को देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग उमड़े। बच्चों और युवाओं ने इसे आकर्षक ढंग से सजाने में विशेष उत्साह दिखाया। जुलूस में शामिल लोगों ने धार्मिक नारों के साथ अमन, शांति और भाईचारे का संदेश दिया। मार्ग में जगह-जगह लोगों ने जुलूस का स्वागत किया, जिससे कार्यक्रम को लेकर युवाओं और बच्चों में भी खासा उत्साह देखने को मिला। मौलानाओं ने हजरत मोहम्मद साहब की जिंदगी, उनके संघर्ष और उनकी शिक्षाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि पैगंबर ने कठिनाइयों का सामना करते हुए लोगों को अल्लाह की इबादत, इंसानियत, अमन और भाईचारे का संदेश दिया। मौलानाओं ने अकीदतमंदों से उनके बताए मार्ग पर चलने और समाज में शांति कायम रखने का आह्वान किया। जुलूस के दौरान शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए सीओ सिटी रणधीर मिश्रा के नेतृत्व में रॉबर्ट्सगंज कोतवाली प्रभारी धर्मेंद्र सिंह, रॉबर्ट्सगंज चौकी इंचार्ज सहित भारी पुलिस बल मौजूद रहा। कार्यक्रम के समापन पर देश में अमन-चैन, खुशहाली और आपसी भाईचारे के लिए विशेष दुआएं की गईं।

बीजपुर पुलिस द्वारा वांछित आरोपी गिरफ्तार,सिरसोती मंदिर के पास से पकड़ा

सोनभद्र। सोनभद्र के बीजपुर में पुलिस ने एक वांछित आरोपी को गिरफ्तार किया है। बुधवार सुबह सिरसोती मंदिर के पास से सोनू कुमार नामक व्यक्ति को पकड़ा गया, जो धारा 80(2)85 बी एन एस 3/4डी पी एक्ट के तहत फरार चल रहा था।

उच्चाधिकारियों के निर्देश पर वांछितों और वारंटियों की गिरफ्तारी के लिए चलाए जा रहे अभियान के तहत यह कार्रवाई की गई। थानाध्यक्ष राजेश कुमार सिंह के नेतृत्व में उप निरीक्षक कमला कांत पाण्डेय, प्रधान आरक्षी भानु प्रताप यादव और आरक्षी के के गुप्ता की टीम क्षेत्र में गश्त कर रही थी। इसी दौरान मुखबिर से सूचना मिली कि वांछित अभियुक्त सिरसोती मंदिर के पास खड़ा है। सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची। पुलिस की गाड़ी देखते ही संदिग्ध भागने लगा, लेकिन पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए उसे धर दबोचा। संबंधित मुकदमा में वांछित-थाने लाकर पूछताछ करने पर आरोपी ने अपना नाम सोनू कुमार पुत्र स्वर्गीय रामलाल, निवासी सिरसोती बताया। वह संबंधित मुकदमे में वांछित था। बुधवार सुबह 5:45 बजे गिरफ्तारी के बाद, आरोपी के खिलाफ विधिक कार्रवाई पूरी कर उसे न्यायालय में पेश किया गया।

20 सितंबर को वाराणसी में नई पीढ़ी संवाद,तैयारी को लेकर रासपहरी में हुई बैठक,पूर्वांचल यात्रा सोनभद्र में चलेगी

म्योरपुर/सोनभद्र। गुरूवार को जवाबदेह सरकार के लिए मिर्जापुर से शुरू हुई पूर्वांचल यात्रा सोनभद्र में जारी रहेगी। इस यात्रा में गांव, कस्बा, बाजार, स्कूल-कालेज,

अधिवक्ताओं और गणमान्य नागरिकों से संपर्क और संवाद किया जाएगा। इस यात्रा के प्रथम चरण के समापन पर वाराणसी शास्त्री घाट पर नई पीढ़ी संवाद और आम सभा का आयोजन किया जाएगा। इस बाबत आज रासपहरी कार्यालय में रोजगार सामाजिक अधिकार अभियान की बैठक हुई। बैठक में उपस्थित ऑल इंडिया पीपुल्स फ्रंट के संस्थापक सदस्य अखिलेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि भाजपा सरकार ने वादा खिलाफी की है। जनगणना में ओबीसी कालम को शामिल करने की बात करके भी उसे पूरा नहीं किया। साथ ही आदिवासी समाज की तरफ से उठ रही आदिवासी धर्म कोड के कालम को जोड़ने की बात भी अनसुनी कर दी जा रही है। इस सवाल को सोनभद्र में प्रमुख सवाल बनाया जाएगा। उन्होंने कहा कि हर नागरिक के रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, पेंशन और भूमिहीनों को आवास के संवैधानिक अधिकारों की गारंटी हो सकती है। यदि सरकार कारपोरेट घरानों की संपत्ति पर टैक्स लगाने और काली पूंजी की अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करने का साहस दिखाएं। बैठक में तय हुआ कि माइक्रोफाइनेंस कंपनियों द्वारा महिलाओं की आर्थिक लूट, प्राकृतिक संसाधनों के दोहन, पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने, पूंजी पलायन पर रोक लगाने, लड़कियों की उच्च शिक्षा जैसे सवालों को यात्रा में मजबूती से उठाया जाएगा। बैठक के अध्यक्षता राजेंद्र प्रसाद गोंड और संचालन कृपा शंकर पनिका ने किया। बैठक में प्रदेश महासचिव दिनकर कपूर, इंद्रदेव खरवार, रूबी सिंह गोंड, सविता गोंड, महेंद्र प्रताप सिंह, मनोहर गोंड, मंगरू प्रसाद श्याम, गुंजा गोंड, सुगवंती गोंड, राजकुमार खरवार, राम विचार गोंड, महावीर गोंड, आदि लोग शामिल रहे।

दी आर्यन्स एकेडमी में धूमधाम से मना सावन महोत्सव, बच्चों ने बिखेरे सांस्कृतिक रंग

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रॉबर्ट्सगंज/सोनभद्र। सन्त नगर स्थित 'दी आर्यन्स एकेडमी' में

सावन माह के पावन अवसर पर भव्य 'सावन सेलिब्रेशन' का आयोजन हर्षोल्लास के साथ किया गया। इस अवसर पर पूरा विद्यालय परिसर हरे रंग के परिधानों और आकर्षक सजावट से सावन के रंग में रंगा नजर आया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के प्रबंध निदेशक विनोद कुमार जालान एवं प्रधानाचार्या श्रीमती चित्रा जालान द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया।प्रबंध निदेशक विनोद कुमार जालान ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि सावन का महीना प्रकृति के सौंदर्य, हरियाली और नवजीवन का प्रतीक है। ऐसे आयोजनों से बच्चों को अपनी समृद्ध भारतीय संस्कृति और परंपराओं से जुड़ने का अवसर मिलता है। प्रधानाचार्या श्रीमती चित्रा जालान ने सावन के प्राकृतिक व आध्यात्मिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए सभी को प्रकृति संरक्षण और पौधरोपण का संकल्प लेने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के दौरान छात्र-छात्राओं ने सावन गीतों, कजरी, लोकनृत्य और कविता पाठ की मनमोहक प्रस्तुतियां देकर सबका मन मोह लिया। विद्यालय परिसर में झूले और मेहंदी प्रतियोगिता का भी विशेष आयोजन किया गया, जिसमें बच्चों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। उत्सव को सफल बनाने में विद्यालय की शिक्षिकाओं – सुषमा पांडे, निशा चौबे, प्रियंका भट्टाचार्या, सुमन, नेहा, प्रिया, काजल, प्रतिमा चौबे, याशमिन और अपर्णा का सराहनीय योगदान रहा।

एक एक रक्षासूत्र की सौगन्ध है बिना जिले को प्रदूषण मुक्त किए पेड़ हैं तो प्राण हैं अभियान नहीं रुकेगा-संदीप मिश्र

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। नगवा ब्लाक के खलियारी में आज किसान निर्मल इण्टर कालेज में रक्षाबन्धन की पूर्व सन्ध्या पर विद्यालय परिवार की बहनों ने किसान

नौजवान संघर्ष मोर्चा के संयोजक संदीप मिश्र जी को रक्षासूत्र बाँधकर अपनी सुरक्षा के साथ सोनभद्र के जल जंगल जमीन व पर्यावरण के सुरक्षा का संकल्प दिलाया वही कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए विद्यालय परिवार की ओर से शिक्षिका बहन सिन्धु प्रजापति ने कहा कि आज भैया को हम लोगों ने रक्षासूत्र बाँधकर एक संकल्प अपनी सुरक्षा के साथ सोनभद्र के पर्यावरण की सुरक्षा कर प्रदूषण मुक्त करने का संकल्प दिलाया है वही कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मोर्चा संयोजक श्री मिश्र ने बहनों से कहा कि हम वादा नहीं करते आप सबके रक्षासूत्र की सौगन्ध खाकर एक बात का दावा करते हैं कि जब सोनभद्र प्रदूषण मुक्त नहीं हो जाता तब तक पेड़ हैं तो प्राण हैं अभियान निरन्तर चलता रहेगा साथ ही सोनभद्र के जल जंगल जमीन के लिए किसान नौजवान संघर्ष मोर्चा कृत संकल्पित है आने वाले समय में यह आन्दोलन निरन्तर चलता रहेगा साथ में उन्होंने यह भी कहा जल जंगल जमीम पेड़ पानी पहाड़ नदी झील झरना इनका सरक्षण सुरक्षा सभी नागरिकों का संविधान में मौलिक कर्तव्य भी हैं आज के कार्यक्रम में सैकड़ों बहनों ने राखी रक्षा सूत्र के रुप में मोर्चा संयोजक को बाधा कार्यक्रम में विद्यालय के प्रबन्धक निर्मल यादव जी कमलेश जी सिन्धु जी सुमन जी आकश चौहान अरविन्द चौहान रोहित यादव व सैकड़ों बहने उपस्थित रही।

दुर्गा मंदिर स्थित प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज के उपसेवाकेन्द्र पर रक्षाबंधन का पावन पर्व संस्कृति और राष्ट्र के रक्षा दिवस के रुप में मनाया गया

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र घोरावल। बुधवार को घोरावल में दुर्गा मंदिर स्थित प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज के उपसेवाकेन्द्र पर रक्षाबंधन का पावन पर्व संस्कृति और राष्ट्र के रक्षा दिवस के रुप में मनाया गया। इस अवसर पर राबर्ट्सगंज से पधारी ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र की मुख्य संचालिका बी0के0सुमन बहन ने कहा कि रक्षाबंधन का पावन स्वयं को मर्यादा और पवित्रता के पवित्र बंधन में बंधकर समस्त नारियों की सुरक्षा का संकल्प लेने का महान पर्व है। नारी सांस्कृति मूल्यों और परम्पराओं की संवाहक होती है। इसलिए नारी के सशक्तिकरण और सुरक्षा से ही सशक्त और समृद्ध राष्ट्र के नवनिर्माण संकल्पना साकार होती है। इस अवसर उपस्थित लोगों ने स्वयं को व्यसनों के सेवन से दूर रहने का प्रतिज्ञा लिया। घोरावल स्थित उपसेवाकेन्द्र की संचालिका बी0के0 सीता बहन ने रक्षाबंधन के आध्यात्मिक रहस्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह पर्व मनुष्यात्माओं के लिए ईश्वरीय उपहार है जिसके

द्वारा जीवन में जीवन-मुक्ति के मार्ग प्रशस्त होता है। थाना प्रभारी श्री बृजेश सिंह जी ने ब्रह्माकुमारीज संस्था का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि संस्था द्वारा किए जा रहे मानव सेवा के कार्य सराहनीय है। क्राइम निरीक्षक श्री भानु प्रताप सिंह, चौकी इंचार्ज श्री उदयनाथ कुशवाहा जी, व अन्य स्टाप को रक्षा सूत्र बाँधी गईं। संस्था में कुछ समाजसेविकों को भी राखी बांधी गई शिवद्वार मंदिर के मुख्य पुजारी श्री अजय गिरी जी, पूर्व चेयरमैन श्री राकेश कुमार उमर, समाजसेवी श्री रमेश चंद्र पांडे, श्री विपिन बिहारी उमर, श्री राजकुमार उमर, श्री काजू अग्रहरी जी को राखी बाँधी गईं।ब्रह्मकुमारी बहनों ने बताया कि रक्षाबंधन के अवसर पर वे किसी भी प्रकार का उपहार स्वीकार नहीं करती उनके लिए सबसे बड़ा उपहार यही है कि भाई - बहन अपने जीवन की किसी कमी कमजोरी विकार मादक पदार्थों के सेवन को छोड़ने का संकल्प ले। इस प्रोग्राम को सफल करने में बी के दीपशिखा बहन, डॉ बी के हरींन्द्र भाई,कुंजलता बहन रानी बहन राजेश भाई, आनंद भाई ने सक्रिय योगदान दिया।

सोनभद्र जनपद की समस्याओं पर निरंकुश हुए आला अधिकारी, समाजवादी पार्टी ने जिलाधिकारी को सौंपा ज्ञापन

सोनभद्र। संवाददाता अजीत प्रताप सिंह। जनपद सोनभद्र में किसानों, नौजवानों, व्यापारियों और आम जनमानस की विभिन्न समस्याओं को लेकर समाजवादी पार्टी सोनभद्र के प्रतिनिधिमंडल ने कलेक्ट्रेट पहुँचकर जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपा। इस दौरान सपा नेताओं ने जिला प्रशासन और राज्य सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की और अधिकारियों पर जनसमस्याओं के प्रति संवेदनहीन होने का आरोप लगाया। ज्ञापन सौंपने के उपरांत जनसभा को संबोधित करते हुए समाजवादी पार्टी के जिलाध्यक्ष राम निहोर यादव ने कहा कि जनपद सोनभद्र में वर्तमान

समय में जनसमस्याओं का अंबार लगा हुआ है। लेकिन सत्ताधारी भाजपा सरकार के दबाव में जिला प्रशासन के आला अधिकारी पूरी तरह निरंकुश हो चुके हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि जब सपा नेता या जनप्रतिनिधि आम जनता की समस्याओं को लेकर अधिकारियों को फोन करते हैं, तो वे फोन तक उठाना मुनासिब नहीं समझते। जिलाध्यक्ष ने चेतावनी देते हुए कहा कि यदि जिला प्रशासन ने जनसमस्याओं का समयबद्ध निस्तारण नहीं किया, तो समाजवादी पार्टी जिले स्तर पर व्यापक जनआंदोलन करने के लिए बाध्य होगी, जिसकी पूरी जिम्मेदारी जिला प्रशासन की होगी। उन्होंने कहा कि सपा शासनकाल में हर वर्ग खुशहाल था, जबकि वर्तमान सरकार में किसान खाद व बिजली के लिए परेशान हैं। कार्यक्रम में उपस्थित पूर्व विधायक रमेश चंद दुबे ने घोरावल (विधानसभा क्षेत्र 400) की बदहाल स्थिति पर चिंता जताते हुए कहा कि क्षेत्र में सैकड़ों विद्युत ट्रांसफार्मर हफ्तों से जले पड़े हैं। इसके कारण किसान फसलों की सिंचाई नहीं कर पा रहे हैं और आम जनता भीषण गर्मी व बिजली संकट से जूझ रही है। उन्होंने कहा कि बार-बार शिकायत करने के बावजूद बिजली विभाग और प्रशासनिक अधिकारी ध्यान नहीं दे रहे हैं। यदि जले हुए ट्रांसफार्मरों को तत्काल नहीं बदला गया, तो सपा कार्यकर्ता सड़कों पर उतरेंगे। ज्ञापन सौंपने के दौरान समाजवादी पार्टी के प्रमुख पदाधिकारियों और सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष बाबूलाल यादव, जिला उपाध्यक्ष रामप्यारे सिंह पटेल, प्रमुख नेता पवन पटेल, बाबू हाशमी, जगत पटेल, राजेश विश्वकर्मा ,सहित बड़ी संख्या में समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता एवं स्थानीय नागरिक उपस्थित रहे।

2030 कॉमनवेल्थ गेम्स की तैयारियों को लेकर बैठक हुई,अहमदाबाद में 2036 ओलिंपिक की बोली पर चर्चा हुई, गृहमंत्री अमित शाह और खेलमंत्री शामिल

अहमदाबाद। कॉमनवेल्थ गेम्स 2030 की तैयारियों को लेकर अहमदाबाद में गृहमंत्री अमित शाह, खेलमंत्री मनसुख मांडविया और गुजरात के डिप्टी सीएम हर्ष सांघवी की बैठक हुई। इस बैठक में 2036 ओलिंपिक की मेजबानी के लिए भारत की बोली पर भी चर्चा हुई। गृह मंत्रालय खेलों के दौरान सुरक्षा व्यवस्था, आवाजाही और दूसरे इंतजामों की निगरानी में अहम भूमिका निभाएगा। शाह ने एक्स पर बैठक की जानकारी दी-शाह ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर बैठक की जानकारी दी। उन्होंने कहा- हम इंटरनेशनल खेल आयोजनों की मेजबानी करके भारत को वैश्विक खेल स्थल बनाने के लिए

पूरी तरह प्रतिबद्ध है।' उन्होंने बताया की बैठक में 2029 पुलिस और फायर गेम्स की मेजबानी पर भी चर्चा हुई। अहमदाबाद में पहले पुलिस और फायर गेम्स होंगे-वर्ल्ड पुलिस और फायर गेम्स इन सभी आयोजनों से पहले अहमदाबाद में होगी। यह एक बड़ी मल्टी-गेम्स इंटरनेशनल प्रतियोगिता होगी। इसमें 70 देशों के करीब 10 हजार खिलाड़ी शामिल होंगे। ओलिंपिक बोली पर फैसला 2029 तक संभव-कॉमनवेल्थ गेम्स दो दशक बाद भारत लौटेंगे। साल 2010 में दिल्ली ने पहली बार इसका आयोजन किया था। अहमदाबाद 2036 ओलंपिक की मेजबानी की दौड़ में भी शामिल है। सांघवी खेल विभाग भी संभालते हैं, इसलिए वे इंटरनेशनल ओलिंपिक समिति के साथ होने वाली बातचीत में शहर का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। भारत अभी मेजबान चुनने की प्रक्रिया के 'कंटीन्यूअस डायलॉग' चरण में है। देश की बोली पर फैसला 2029 से पहले होने की उम्मीद नहीं है। 2030 में गेम्स के 100 साल पूरे होंगे-2030 में कॉमनवेल्थ गेम्स अपने 100 साल पूरे करेगा। पहला एडिशन 1930 में कनाडा के हैमिल्टन शहर में हुआ था। भारत दूसरी बार गेम्स की मेजबानी करेगा। इससे पहले भारत ने 2010 में गेम्स की मेजबानी की थी। तब सारे इवेंट दिल्ली में हुए थे। ऑस्ट्रेलिया ने सबसे ज्यादा 5 बार गेम्स की मेजबानी की है। कनाडा और स्कॉटलैंड में 4 बार टूर्नामेंट खेला गया।

25 साल बाद पेरेंट्स के घर लौटी हूं:यहां मन नहीं लग रहा, अपनी अकेली जिंदगी याद आती है, क्या मैं स्वार्थी हूं

नयी दिल्ली। विषय को समझेंगे एक्सपर्ट- डॉ. द्रोण शर्मा, कंसल्टेंट साइकेट्रिस्ट, आयरलैंड, यूके।

यूके, आयरिश और जिब्राल्टर मेडिकल काउंसिल के मेंबर जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मेरी उम्र 45 साल है। पिछले 25 सालों से मैं घर से दूर रह रही थी। पहले पढ़ाई और फिर जॉब के लिए। एक साल पहले ही मैं अपने होमटाउन में पेरेंट्स के घर में शिफ्ट हुई हूं। लेकिन जैसा मैंने सोचा था, वैसा बिल्कुल फील नहीं हो रहा। मुझे लगा था कि इतने साल बाद घर लौटना अच्छा लगेगा। ज्यादा सुकून और खुशी होगी। लेकिन इसका ठीक उल्टा हुआ है। मुझे ज्यादा तनाव और अकेलापन महसूस होने लगा है। यहां मेरा बिल्कुल मन नहीं लगता। मुझे अपनी अकेली जिंदगी की याद आती है। बेंगलुरू में मेरा घर और मेरी सिंगल लाइफ। ये बात मैं अपने पेरेंट्स से कैसे कहूं कि मुझे इस घर में रहना अच्छा नहीं लग रहा। मैं अपनी मेंटल हेल्थ को कैसे ठीक रखूं? सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि आपकी भावनाएं गलत नहीं हैं। 25 साल तक घर से दूर रहना बहुत लंबा समय होता है। इस दौरान आपने सिर्फ पढ़ाई और नौकरी नहीं की, बल्कि अपनी पूरी जिंदगी अपने तरीके से जीना सीखा है। आपने तय किया होगा कि कब उठना है, कब खाना है, किससे मिलना है, कब घर से बाहर जाना है, छुट्टी कैसे बितानी है और कितना समय अकेले रहना है। अब एक साल से आप फिर उसी घर में हैं, जहां कभी आपकी जिंदगी की शुरुआत हुई थी। लेकिन इस बीच आप खुद बहुत बदल चुकी हैं। इसलिए घर वही होने के बावजूद आपका अनुभव पहले जैसा नहीं है। यह जरूरी नहीं कि आपका अपने माता-पिता से प्यार कम हो गया है। हो सकता है कि आपको सिर्फ अपनी पुरानी स्वतंत्र जिंदगी की कमी महसूस हो रही हो। 25 साल स्वतंत्र जीवन जीने के बाद माता-पिता के घर लौटना बड़ा बदलाव है। परिवार वही है, लेकिन व्यक्ति की आदतें, सोच और जरूरतें बदल चुकी हैं। इसलिए घर में रहते हुए घुटन या बेचैनी महसूस हो सकती है। घर लौटने की खुशी की जगह तनाव क्यों? लंबे समय तक अकेले रहने के बाद जब कोई व्यक्ति माता-पिता के साथ वापस रहने लगता है तो उसे अपनी आजादी कम होती हुई महसूस हो सकती है। माता-पिता का ये पूछना कि- 'कहां जा रही हो?' 'कब वापस आओगी?' 'खाना खाया या नहीं?' ये उनका प्यार और चिंता का तरीका हो सकता है। लेकिन इतने साल अपने फैसले खुद लेने के बाद यही बातें आपको रोक-टोक जैसी लग सकती हैं। इसी तरह परिवार के साथ खाना, हर दिन बातचीत करना और अपनी दिनचर्या में दूसरों को शामिल करना माता-पिता के लिए सामान्य हो सकता है। लेकिन आपको अपने अकेलेपन और पर्सनल स्पेस की जरूरत ज्यादा महसूस हो सकती है। इसमें किसी एक को गलत ठहराने की जरूरत नहीं है। दोनों की जरूरतें अलग हो सकती हैं।घर लौटने पर तनाव की वजह पुराने नियमों में लौटना। प्राइवेसी कम होना। पेरेंट्स वेज सवाल टोकाटाकी। दिनचर्या बदलना। पर्सनल स्पेस कम होना हर वक्त निगरानी में रहना। परेशानी की असल वजह क्या है? पहले यह समझें कि आपको वास्तव में परेशानी किस बात से है, जैसेकि- क्या आपको अपने कमरे में पर्याप्त निजी जगह नहीं मिलती? क्या आपके आने-जाने के समय पर सवाल होता है? क्या आप अपनी पसंद के अनुसार खाना, सोना या आराम करना चाहती हैं, लेकिन ऐसा नहीं कर पातीं? क्या दोस्तों से मिलने या बाहर जाने पर आपको सफाई देनी पड़ती है? क्या आपको लगता है कि घर में रहते हुए आप फिर से बेटी की उसी भूमिका में चली गई हैं, जबकि पिछले 25 सालों में आप अपने फैसले खुद लेने वाली एक स्वतंत्र महिला बन चुकी हैं? इन सवालों के जवाब आपको असली समस्या को समझने में मदद करेंगे। खुद से पूछें ये 7 सवाल- घर में मन क्यों नहीं लग रहा? क्या पेरेंट्स टोकाटाकी करते हैं? क्या पेरेंट्स हर बात पूछते हैं? क्या बाहर जाने पर टोकते हैं? क्या पर्सनल स्पेस नहीं मिलता ? क्या अपने फैसले नहीं ले पाती ? क्या हर बात की सफाई देनी पड़ती है? क्या दोस्तों से मिलने नहीं आ सकती? माता-पिता से बात कैसे करें? सबसे जरूरी बात यह है कि माता-पिता से यह न कहें कि मुझे आपके साथ रहना अच्छा नहीं लगता। ऐसा सुनकर उन्हें लग सकता है कि आप उनके प्यार या घर को अस्वीकार कर रही हैं। इसके बजाय अपनी परेशानी को अपनी जरूरत के रूप में बताएं। पहले चिट्?ठी लिखना भी अच्छा विकल्प-अगर आपको लगता है कि आमने-सामने बात करते समय आप अपनी बात ठीक से नहीं कह पाएंगी, तो पहले माता-पिता को एक पत्र भी लिख सकती हैं। यहां मैं आपके लिए एक काल्पनिक खत लिख रहा हूं। आप इसमें अपने मन की बातें लिख सकती हैं। प्यारे मम्मी-पापा, मैं आप दोनों से एक जरूरी बात कहना चाहती हूं। शायद सामने बैठकर मैं इसे ठीक से न कह पाऊं। इसलिए पत्र लिख रही हूं। सबसे पहले मैं आपको बताना चाहती हूं कि इतने साल बाद घर लौटने पर आपने जिस तरह मुझे अपनाया, उसके लिए मैं बहुत आभारी हूं। मुझे पता है कि मेरे लिए आपके मन में बहुत प्यार है और आप चाहते हैं कि मैं आपके साथ रहूं। लेकिन पिछले 25 सालों में मेरी जिंदगी बहुत बदल गई है। मैं लंबे समय तक अकेले रही हूं। मुझे अपने समय, काम, फैसले और निजी जगह को अपने तरीके से संभालने की आदत हो गई है। घर लौटने के बाद मुझे महसूस हुआ कि मैं अपनी उस स्वतंत्र जिंदगी को बहुत याद कर रही हूं। इसका मतलब यह नहीं है कि मैं आपसे दूर होना चाहती हूं। मैं सिर्फ यह समझने की कोशिश कर रही हूं कि आपके साथ रहते हुए अपनी स्वतंत्रता कैसे बनाए रखूं। मैं चाहती हूं कि हम मिलकर कुछ बातें तय करें। जैसे हम कितना समय साथ बिताएं, मुझे कब अपने काम या अकेले रहने का समय चाहिए और किन निजी फैसलों में मुझे अपनी आजादी बनाए रखने की जरूरत है। मैं यह भी समझती हूं कि मेरे घर लौटने के बाद आपको भी अपनी दिनचर्या में बदलाव करना पड़ा होगा। इसलिए मैं सिर्फ अपनी बात नहीं रखना चाहती। मैं आपकी परेशानी भी समझना चाहती हूं। मैं घर छोड़कर आपसे दूर नहीं जाना चाहती। मैं ऐसा रास्ता ढूंढना चाहती हूं, जिसमें हमारा रिश्ता भी अच्छा रहे और मैं अपनी स्वतंत्र पहचान भी बनाए रखूं। प्यार के साथ। घर में तय करें कुछ स्पष्ट सीमाएं-माता-पिता के साथ रहने का मतलब यह नहीं है कि आपकी सारी स्वतंत्रता खत्म हो जाए। आप मिलकर कुछ ऐसी बातें तय कर सकते हैं, जिनसे दोनों पक्ष सहज रहें। मसलन- आपके कमरे में आने से पहले दरवाजा खटखटाया जाए। आपके काम के समय में आपको परेशान न किया जाए। दोस्तों से मिलने

या बाहर जाने के लिए हर बार इजाजत लेने की जरूरत न हो। हर दिन कुछ वक्त आपको अकेले रहने के लिए मिले। इसी तरह हर मील साथ लेना भी जरूरी न हो। आप कुछ समय परिवार के साथ बिताएं और कुछ समय अपनी पसंद से। लेकिन सीमाएं तय करते समय सिर्फ अपनी सुविधा के बारे में न सोचें। माता-पिता की भी अपनी दिनचर्या है। 25 सालों में उन्होंने भी अपने घर को अपने तरीके से चलाया होगा। इसलिए उनसे भी यह पूछें- 'मेरे यहां रहने से आपको किन बातों से परेशानी हो रही है?' इस सवाल से बातचीत एकतरफा नहीं रहेगी। दोनों पक्ष अपनी जरूरतें समझा पाएंगे। अपनी सीमाएं तय करना दूरी बनाना नहीं दोस्तों से जुड़े रहे। अपनी पसंद का काम करें। पेट्स से बात करे।अंतिम बात:-आखिर में एक बात याद रखिए, माता-पिता से प्यार करने और उनके साथ न रह पाने की इच्छा, दोनों बातें एक साथ सच हो सकती हैं।

आपको अपने माता-पिता और अपनी स्वतंत्र जिंदगी में से किसी एक को चुनने की जरूरत नहीं है।शायद आपको घर छोड़ने या खुद को बदलने से पहले एक नया तरीका खोजने की जरूरत है- माता-पिता के साथ एक वयस्क बेटी की तरह रहना, न कि 25 साल पहले वाली बेटी की तरह।इससे रिश्ता भी बचेगा, अपनापन भी बना रहेगा और आपकी स्वतंत्र जिंदगी भी रहेगी।

कप्तानी जाने पर सूर्यकुमार बोले, डेढ़ महीने सोचता रहा ऐसा कैसे हुआ,सोच रहा था ओलिंपिक और अगले टी-20 वर्ल्डकप में कप्तान रहूंगा

स्पोर्ट डेस्क। भारत के पूर्व टी-20 कप्तान सूर्यकुमार यादव ने

पहली बार अपनी कप्तानी छिनने पर चुप्पी तोड़ी है। उन्होंने कहा- 'मैं करीब डेढ़ महीने तक घर पर बैठकर यही सोचता रहा कि ऐसा कैसे हो सकता है।' पूर्व क्रिकेटर आकाश चोपड़ा के यूट्यूब चैनल पर बातचीत में सूर्यकुमार ने कहा- मैंने सोचा था कि 2028 लॉस एंजिल्स ओलिंपिक और अगले टी20 वर्ल्ड कप तक भारतीय टीम को संभालूंगा।' अजित अगरकर की अगुआई वाली सिलेक्शन कमेटी ने टी-20 वर्ल्डकप 2026 जीतने के बाद सूर्यकुमार को कप्तानी से हटा दिया था। उनकी जगह श्रेयस अय्यर नए कप्तान बने। यहां तक आयरलैंड और इंग्लैंड की टीम में भी उन्हें शामिल नहीं किया गया। सिलेक्टर्स ने उनके खराब फॉर्म को इसकी वजह बताया।सूर्यकुमार ने बताया कि टीम से बाहर किए जाने पर खुद को सिलेक्टर्स की जगह रखकर सोचा। समझने की कोशिश की कि वे उनसे आगे बढ़कर भविष्य के लिए नई टीम क्यों बनाना चाहते हैं। उन्होंने कहा- 'जब मेरा नाम टीम में नहीं था, तब मैं मुस्कुराया। मैंच के दौरान जब भी दबाव की स्थिति आई, मैंने खुद को शांत रखने की कोशिश की। मैंने सोचा नहीं था कि ऐसा होगा।' सूर्या ने खुद को मिले मौकों के लिए शुक्रिया भी कहा। सूर्या बोले- फोन पर सिलेक्टर्स ने कहा आप टीम में नहीं होंगे- सूर्या ने कहा कि टीम के ऐलान से तीन दिन पहले सिलेक्शन कमेटी ने मुझसे बात की थी। मुझे बताया गया था, 'इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज के लिए टीम में मेरा नाम नहीं होगा। अब आगे बढ़ने का समय है। मैंने रिएक्ट नहीं किया, क्योंकि इसमें मेरी गलती नहीं थी।' इस पर सूर्या ने सिलेक्टर्स से कहा- 'जो फैसला लिया गया, वह निश्चित ही टीम के लिए बेहतर होगा। आपने फैसला लिया और मुझे बता दिया। कोई समस्या नहीं है। मैं खेलता रहूंगा। जब आपको लगे कि सही समय है, तब बुला लीजिए।' वर्ल्ड कप जिताने के बाद भी सूर्यकुमार बाहर- सूर्यकुमार यादव की कप्तानी में भारत ने इसी साल 8 मार्च को टी-20 वर्ल्ड कप जीता था। इस जीत के साथ भारत अपने टाइटल को डिफेंड करने और लगातार दो टी-20 वर्ल्ड कप ट्रॉफी जीतने वाला दुनिया का पहला देश बना। सूर्या टी-20 में भारत के सफल कप्तान हैं। उनकी कप्तानी में भारत ने 52 टी-20 मैच खेले। इसमें 42 जीते , 8 हारे और दो मैचों का नतीजा नहीं निकला। उनका जीत प्रतिशत 80.76फीसदी है। सूर्यकुमार की अगुआई में भारत ने 2026 टी-20 वर्ल्ड कप, 2025 एशिया कप अपने नाम किया था। रोहित के बाद सूर्या को कप्तानी मिली थी- वेस्टइंडीज में 2024 टी-20 वर्ल्ड कप जीतने के बाद रोहित शर्मा ने इस फॉर्मेट से संन्यास ले लिया था। इसके बाद सूर्यकुमार यादव को भारत की कप्तानी सौंपी गई थी। सूर्या टी-20 में 4 शतक लगा चुके- सूर्यकुमार ने 113 मैचों में 3272 रन बनाए हैं। उनका औसत 36.35 और स्ट्राइक रेट 162.94 रहा है। सूर्यकुमार के नाम 4 शतक और 25 अर्धशतक दर्ज हैं। उनका बेस्ट स्कोर 117 रन है। सूर्या ने 297 चौके, 179 छक्के और 58 कैच भी लिए हैं।

क्या पडिक्कल बनेंगे भारत के अगले पुजारा या द्रविड़, नंबर-3 पर लगातार दो शतक, श्रीलंका सीरीज में 328 रन और इनमें 123 स्पिन के खिलाफ

स्पोर्ट डेस्क। देवदत्त पडिक्कल ने श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट सीरीज में लगातार दो शतक लगाकर भारत

के नंबर-3 बल्लेबाज की तलाश को फिलहाल खत्म कर दिया है। उन्होंने गॉल में 167 और कोलंबो में 117 रन की पारियां खेलीं। पडिक्कल ने सीरीज में भारत के लिए सबसे ज्यादा 328 रन बनाए और प्लेयर ऑफ द सीरीज चुने गए। इनमें 123 रन स्पिन गेंदबाजों के खिलाफ आए। 26 साल के पडिक्कल को चोटिल साई सुदर्शन की जगह टीम में मौका मिला था। लेकिन जिस नंबर-3 पोजिशन पर 2023 में चेतेश्वर पुजारा के बाद लगातार बदलाव होते रहे, वहां पडिक्कल ने सिर्फ तीन पारियों में अपनी दावेदारी मजबूत कर दी है। भारत में नंबर-3 की जगह इतनी अहम क्यों? टेस्ट क्रिकेट में नंबर-3 बल्लेबाज को कई बार ओपनर और मिडिल ऑर्डर दोनों की भूमिका निभानी पड़ती है। इसलिए यह टीम की बल्लेबाजी की सबसे अहम पोजिशन में से एक होती है। राहुल द्रविड़ ने भारत के लिए इस जगह पर विराट कोहली और केएल राहुल ने भी इस पोजिशन पर बल्लेबाजी की। लेकिन कोहली के रिटायरमेंट के बाद गिल नंबर-4 पर बैटिंग करने लगे। इसके बाद साई सुदर्शन को इंग्लैंड दौरे पर टीम में शामिल किया। हालांकि वे कुछ खास नहीं कर सके। नंबर-3 पर सुदर्शन ने लगभग 32 की औसत से 383 रन बनाए हैं। इंग्लैंड सीरीज में करुण नायर और वॉशिंगटन सुंदर को भी इस नंबर पर मौका मिला। वे भी टीम का भरोसा नहीं जीत सके। ऐसे में देवदत्त पडिक्कल ने सिर्फ 5 पारियों में 353 रन बनाकर अपने आपको रेस में सबसे आगे कर दिया है। श्रीलंका में मौका कैसे मिला? साई सुदर्शन चोट के कारण श्रीलंका दौरे से बाहर हो गए। इससे नंबर-3 की जगह पडिक्कल के लिए खुली। इससे पहले वे भारत ए के लिए दो अर्धशतक लगा चुके थे और श्रीलंका में ही टूर गेम में 142 रन गिल को सबसे पहले यह पोजिशन मिली। उन्होंने इस नंबर पर 972 रन बनाए। उनके टेस्ट मिस करने

पर 10 हजार से ज्यादा रन बनाए। उनके बाद चेतेश्वर पुजारा ने यह जिम्मेदारी संभाली। उन्होंने 13 साल में नंबर-3 पर 155 पारियां खेलते हुए 6529 रन बनाए। 11 जून 2023 में पुजारा के आखिरी टेस्ट के बाद भारत ने नंबर-3 पर कुल 7 बल्लेबाजों को आजमाया। शुभमन की नाबाद पारी खेल चुके थे। पडिक्कल ने 2025-26 के घरेलू फर्स्ट-क्लास सीजन में 812 रन 47.76 के औसत से बनाए। इसमें ऑस्ट्रेलिया ए के खिलाफ 150 और रणजी ट्रॉफी सेमीफाइनल में 232 रन की पारियां शामिल थीं। उन्होंने कर्नाटक की कप्तानी करते हुए टीम को फाइनल तक भी पहुंचाया। पडिक्कल ने 109.33 की औसत से रन बनाए- पडिक्कल ने पहले टेस्ट की पहली पारी में 167 रन बनाए और दूसरी पारी में 44 रन जोड़े। दूसरे टेस्ट में उन्होंने 117 रन की पारी खेली। इस तरह सीरीज में उनके नाम 328 रन रहे। उन्होंने 109.33 की औसत से बल्लेबाजी की। उनके दोनों शतक लगातार टेस्ट मैचों में आए। यह प्रदर्शन इसलिए भी खास रहा क्योंकि यह उनकी पहली सीरीज रही, जहां उन्होंने सभी मैच खेले। इससे पहले उन्हें 2024 में ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड के खिलाफ एक-एक टेस्ट खेलने का मौका मिला था। पडिक्कल का स्पिन के खिलाफ बैकफुट गेम मजबूत- भारत के बल्लेबाजों की स्पिन के खिलाफ खेलने की मजबूत पहचान रही है, लेकिन हाल के दौर में टीम इसी कमजोरी से परेशान रही। न्यूजीलैंड के स्पिनर्स ने तीन टेस्ट में 37 विकेट लिए और उनका औसत 23.48 रहा। इसके बाद साउथ अफ्रीकी स्पिनर्स ने भारत में दो टेस्ट में 25 विकेट लिए और 15.48 के औसत से गेंदबाजी की। यह भारत में किसी विदेशी टीम के स्पिनर्स का टेस्ट इतिहास में सबसे बेहतर औसत था। इसी दौर में देवदत्त पडिक्कल ने स्पिन के खिलाफ अलग तरीका अपनाया। श्रीलंका के खिलाफ सीरीज में स्पिनर्स की लेंथ गेंदों पर उन्होंने 37.4फीसदी गेंदें बैकफुट से खेलीं। कोलंबो टेस्ट में 117 रन की पारी के दौरान भी पडिक्कल ने स्पिन के खिलाफ बैकफुट से 52 रन

बनाए, जिनमें 47 रन लेंथ गेंदों पर आए। श्रीलंका सीरीज में स्पिन के खिलाफ उनका स्ट्राइक रेट करीब 65 रहा। पडिक्कल की 6 फीट 3 इंच की लंबाई भी उनके इस अंदाज में मदद करती है। वे अच्छी लेंथ की गेंदों पर भी पीछे जाकर कट, पंच और पुल जैसे शॉट खेलते हैं। आमतौर पर भारतीय बल्लेबाज स्पिन के खिलाफ फ्रंटफुट पर जाकर खेलते हैं, जबकि पडिक्कल का तरीका अलग है। पडिक्कल और साई सुदर्शन में क्या अंतर? दोनों बल्लेबाज स्पिनर्स की लेंथ गेंदों के खिलाफ बैकफुट पर खेलने का तरीका अपनाते हैं। साई सुदर्शन ने ऐसी गेंदों पर करीब 36.5फीसदी बार बैकफुट का इस्तेमाल किया, जो पडिक्कल के 37.4फीसदी के लगभग बराबर है। फर्क इन शॉट्स से रन बनाने में नजर आता है। पडिक्कल बैकफुट शॉट्स पर करीब 50 के स्ट्राइक रेट से रन बनाते हैं, जबकि साई सुदर्शन का स्ट्राइक रेट इन शॉट्स पर सिंगल डिजिट में रहा है। घरेलू क्रिकेट में पडिक्कल का रिकॉर्ड कितना मजबूत है? पडिक्कल ने जूनियर स्टेज से ही घरेलू क्रिकेट में अपनी बल्लेबाजी का दम दिखाया। 2018 की कूच बिहार ट्रॉफी में उन्होंने 829 रन बनाए और टूर्नामेंट के चौथे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज रहे। इसके बाद उन्हें कर्नाटक की सीनियर टीम में जगह मिली। 2019-20 विजय हजारे ट्रॉफी में पडिक्कल ने 609 रन बनाए और टूर्नामेंट के टॉप रन-स्कोरर रहे। इसी दौरान उन्होंने अपना पहला लिस्ट-ए शतक भी लगाया।2025-26 फर्स्ट-क्लास सीजन में 812 रन बनाने के प्रदर्शन ने भी उनके टेस्ट दावे को मजबूत किया। आईपीएल और इंटरनेशनल करियर कैसा रहा?पडिक्कल ने 2020 में आरसीबी के लिए आईपीएल डेब्यू किया। उन्होंने शुरुआती चार मैचों में तीन अर्धशतक लगाए और पूरे सीजन में 473 रन बनाए। उन्हें इमर्जिंग प्लेयर ऑफ द ईयर भी चुना गया। 2021 में राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ नाबाद 101 रन बनाकर उन्होंने अपना पहला आईपीएल शतक लगाया।इसके बाद राजस्थान रॉयल्स के लिए दो सीजन में पडिक्कल ने 28 मैचों में 637 रन बनाए, जबकि 2024 में लखनऊ सुपर जायंट्स के लिए उनका औसत सिर्फ 5.43 रहा। हालांकि, 2025 और 2026 में आरसीबी की खिताबी टीम का हिस्सा रहते हुए उन्होंने टीम को लगातार दो आईपीएल ट्रॉफी जीतने में योगदान दिया। 2025 में उन्होंने 10 मैचों में 247 रन बनाए, जबकि 2026 में 16 मैचों में 464 रन बनाए। टेस्ट क्रिकेट में पडिक्कल ने 2024 में इंग्लैंड के खिलाफ डेब्यू किया। पहली ही पारी में उन्होंने 65 रन बनाए। 2024-25 के ऑस्ट्रेलिया दौरे पर हालांकि उनका प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा और वे दोनों पारियों में 0 और 25 रन ही बना सके। द्रविड़ और पुजारा पडिक्कल के बारे में क्या कहते हैं? पूर्व भारतीय कप्तान राहुल द्रविड़ ने श्रीलंका के खिलाफ गॉल टेस्ट में पडिक्कल की 167 रन की पारी की तारीफ की। उन्होंने कहा कि चोटिल साई सुदर्शन की जगह टीम में आए पडिक्कल ने मिले मौके का शानदार फायदा उठाया और नंबर-3 पर अपनी पहली बड़ी पारी खेली। पडिक्कल ने द्रविड़ की तरह ही नंबर-3 पर प्रभावी शुरुआत की है। कर्नाटक क्रिकेट में भी द्रविड़ उनके लिए मददगार रहे हैं। पडिक्कल के मुताबिक, द्रविड़ कर्नाटक स्टेट क्रिकेट एसोसिएशन में उनसे मिलने और जरूरी सलाह देने के लिए हमेशा उपलब्ध रहते हैं। वहीं, पूर्व नंबर-3 बल्लेबाज चेतेश्वर पुजारा का मानना है कि पडिक्कल को इस पोजिशन पर लगातार कुछ समय तक मौका मिलना चाहिए। उनके मुताबिक घरेलू क्रिकेट और आईपीएल में प्रदर्शन के दम पर पडिक्कल इस अवसर के लिए तैयार थे और उन्होंने अपनी तकनीक पर भी काम किया है।

दिशा पाटनी 500 रुपए लेकर मुंबई आई थीं,'हीरोपंती' के ऑडिशन में फेल हुईं, इंजीनियरिंग छोड़ी, फिर 'एमएस धोनी' से बनीं स्टार

मुंबई। दिशा पाटनी की बॉलीवुड तक पहुंचने की कहानी किसी फिल्मी कहानी से कम नहीं है। बरेली से निकलकर इंजीनियरिंग की पढ़ाई के बीच मॉडलिंग शुरू करने वाली दिशा 500 रुपए लेकर मुंबई पहुंची थीं। यहां उन्हें लगातार ऑडिशन देने पड़े और 'हीरोपंती' का ऑडिशन फेल हो गया। लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और इंजीनियरिंग छोड़कर एक्टिंग को करियर बना लिया। 2015 में 'लोफर' से फिल्मी सफर शुरू हुआ, लेकिन 2016 की 'एमएस धोनीः द अनटोल्ड स्टोरी' ने उन्हें घर-घर पहचान दिलाई। इसके बाद 'बागी 2', 'भारत', 'मलंग' और 'कल्कि 2898 एडी' जैसी फिल्मों ने उन्हें चर्चित अभिनेत्रियों में शामिल कर दिया। हाल में उनकी मल्टीस्टार फिल्म 'वेलकम टू द जंगल' और 'अवारापन 2' रिलीज हुई हैं।बरेली में जन्म, पुलिस अधिकारी पिता और हेल्थ इंस्पेक्टर मां का परिवार-दिशा पाटनी का जन्म 13 जून 1992 को उत्तर प्रदेश के बरेली में हुआ। उनका परिवार उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र की राजपूत पृष्ठभूमि से आता है। उनके पिता जगदीश सिंह पाटनी

पुलिस अधिकारी और मां हेल्थ इंस्पेक्टर हैं। बड़ी बहन खुशबू पाटनी भारतीय सेना में मेजर रह चुकी हैं और फिटनेस से भी जुड़ी हैं। छोटा भाई सूर्यांश पाटनी है। जिस दुनिया में दिशा बाद में ग्लैमर और फिल्म स्टारडम के लिए पहचानी गईं, उसकी शुरुआत एक सामान्य और अनुशासित पारिवारिक माहौल से हुई थी। इंजीनियरिंग की पढ़ाई के बीच आया मॉडलिंग का मौका-दिशा ने लखनऊ की एमिटी यूनिवर्सिटी से इंजीनियरिंग की पढ़ाई शुरू की थी। लेकिन उनकी जिंदगी में ऐसा मोड़ आया, जिसने उन्हें पढ़ाई से कैमरे की दुनिया तक पहुंचा दिया। दिशा ने बाद में 'आज तक' को दिए इंटरव्यू में बताया था कि वह नोएडा से बीटेक कर रही थीं और सेकेंड ईयर में उन्हें मॉडलिंग के ऑफर मिलने लगे। इन्हीं ऑफर्स से उनका मुंबई आना-जाना शुरू हुआ। पढ़ाई और मॉडलिंग के बीच संतुलन बनाना मुश्किल होता गया। आखिरकार उन्होंने इंजीनियरिंग की पढ़ाई दूसरे साल में छोड़ दी और मॉडलिंग को करियर बनाने की दिशा में कदम बढ़ाया। तब शायद उन्हें भी अंदाजा नहीं था कि कैमरे के सामने किया यह काम आगे चलकर उन्हें बॉलीवुड के बड़े

सितारों के बीच पहुंचा देगा। 18 साल की उम्र में मॉडलिंग, फिर मिस इंडिया तक पहुंचीं-दिशा ने कम उम्र में मॉडलिंग शुरू कर दी थी। 2020 में 'फिल्मीबीट' को दिए इंटरव्यू में उन्होंने बताया था कि उन्होंने 18 साल की उम्र में मॉडल के तौर पर काम शुरू किया था। उनके मुताबिक उस समय उन पर कई जिम्मेदारियां थीं और उन्होंने परिवार पर आर्थिक रूप से निर्भर रहने के बजाय खुद काम करके अपना खर्च संभाला। 19 साल की उम्र में जब वह मुंबई आई थीं, तब शहर में उन्हें कोई जानने वाला नहीं था। फिल्मी परिवार से न होने के कारण उन्हें अपना रास्ता खुद बनाना था। वह अकेली रहती थीं, ऑडिशन देती थीं और अपनी जरूरतों का खर्च खुद उठाती थीं। मुंबई आने के समय उनके पास सिर्फ 500 रुपए थे। टीवी विज्ञापनों के ऑडिशन रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा बन गए थे। किराया देने का दबाव इतना था कि उनके लिए हर काम पहले नौकरी जैसा था। मॉडलिंग के दौरान दिशा ने कई विज्ञापनों में काम किया। 2013 में उन्होंने पॉन्ड्स फेमिना मिस इंडिया इंदौर प्रतियोगिता में हिस्सा लिया और फर्स्ट रनर-अप रहीं। इससे उन्हें मॉडलिंग में और पहचान मिली। दिशा का लक्ष्य सिर्फ रैंप तक सीमित नहीं था। कैमरे के सामने काम करते हुए उन्हें एहसास हुआ कि उन्हें एक्टिंग ज्यादा पसंद है। मॉडलिंग उनके लिए मंजिल के बजाय बॉलीवुड तक पहुंचने का रास्ता बनने लगी। पहला ऑडिशन सफल नहीं हुआ, 'हीरोपंती' में मौका हाथ से निकला-दिशा की कहानी का दिलचस्प हिस्सा यह

है कि उनका पहला बड़ा फिल्मी ऑडिशन सफल नहीं हुआ था। उन्होंने टाइगर श्रॉफ की डेब्यू फिल्म 'हीरोपंती' के लिए ऑडिशन दिया था। उस समय दिशा और टाइगर एक-दूसरे को जानते तक नहीं थे। 'बॉलीवुड हंगामा' को दिए इंटरव्यू में दिशा ने बताया था कि उस समय वह पढ़ाई कर रही थीं और एक शूट के सिलसिले में मुंबई आई थीं। वह खुद को एक्टर नहीं मानती थीं और एक्टिंग के बारे में ज्यादा नहीं जानती थीं। उन्हें सिर्फ ऑडिशन के लिए बुलाया गया था। दिशा ने माना कि उनका ऑडिशन खराब था। उन्होंने यह भी बताया कि वह फिल्म के बारे में ज्यादा नहीं जानती थीं और मुंबई शिफ्ट भी नहीं हुई थीं।जिस फिल्म से टाइगर श्रॉफ का बॉलीवुड डेब्यू हुआ, उसी फिल्म में दिशा का सफर शुरू नहीं हो सका। लेकिन यह असफलता आगे की कहानी में अहम साबित हुई, क्योंकि दिशा रुकी नहीं। तेलुगु फिल्म 'लोफर' से एक्टिंग डेब्यू-2015 में दिशा को फिल्मी दुनिया में पहला बड़ा मौका मिला। उन्होंने पुरी जगन्नाथ की तेलुगु फिल्म 'लोफर' में वरुण तेज के साथ काम किया। फिल्म में उन्होंने मौनी का किरदार निभाया था। यहीं से उनका आधिकारिक एक्टिंग करियर शुरू हुआ। 'लोफर' बॉक्स ऑफिस पर बड़ी सफलता हासिल नहीं कर सकी। लेकिन दिशा के लिए यह फिल्म महत्वपूर्ण थी, क्योंकि उन्हें पहली बार बड़े पर्दे पर खुद को साबित करने का मौका मिला था। कई कलाकारों के लिए पहली फिल्म की असफलता करियर रोक देती है। दिशा के मामले में ऐसा नहीं हुआ। उन्होंने अगले मौके का इंतजार किया और वही फिल्म उनके करियर की बड़ी शुरुआती सीढ़ी बनी। 'एमएस धोनी' ने बदली किस्मत-2016 में दिशा को वह फिल्म मिली जिसने उन्हें देशभर में पहचान दिलाई- 'एमएस धोनीः द अनटोल्ड स्टोरी'। नीरज पांडे निर्देशित इस फिल्म में सुशांत सिंह राजपूत ने महेंद्र सिंह धोनी की भूमिका निभाई थी। दिशा ने प्रियंका झा का किरदार निभाया, जो धोनी की जिंदगी का बेहद भावनात्मक अध्याय था। फिल्म बॉक्स ऑफिस पर बड़ी सफलता साबित हुई और दिशा के काम को नोटिस किया गया। उनका स्क्रीन टाइम ज्यादा नहीं था, लेकिन प्रियंका के किरदार की कहानी भावनात्मक थी। यही वजह रही कि उनकी स्क्रीन प्रेजेंस दर्शकों को याद रह गई। इस फिल्म के बाद दिशा को सिर्फ मॉडल या नई एक्ट्रेस के तौर पर नहीं देखा गया। उन्हें ऐसी अभिनेत्री के रूप में पहचान मिलने लगी, जिसमें ग्लैमर के साथ भावनात्मक किरदार निभाने की क्षमता है। इस फिल्म के लिए उन्हें आईफा में 'स्टार डेब्यू ऑफ द ईयर- फीमेल' का पुरस्कार मिला। इसके अलावा उन्हें कई अन्य डेब्यू अवॉर्ड्स और नामांकन मिले। जैकी चैन के साथ इंटरनेशनल प्रोजेक्ट-'एमएस धोनी' के बाद दिशा का अगला बड़ा पड़ाव बॉलीवुड के बाहर था। 2017 में वह जैकी चैन की फिल्म 'कुंग फू योगा' में नजर आईं। फिल्म में सोनू सूद और अन्य कलाकार भी थे। इस प्रोजेक्ट से दिशा को इंटरनेशनल दर्शकों के सामने आने का मौका मिला। एक तरफ वह बॉलीवुड में जगह बनाने की कोशिश कर रही थीं और दूसरी तरफ अंतरराष्ट्रीय प्रोजेक्ट का अनुभव ले रही थीं। लेकिन दिशा को असली कमर्शियल स्टारडम अभी मिलना बाकी था। 'बागी 2' ने बनाया कमर्शियल स्टार-2018 में दिशा की फिल्म 'बागी 2' रिलीज हुई। इसमें वह टाइगर श्रॉफ के साथ नजर आईं। दोनों इससे पहले म्यूजिक वीडियो 'बेफिक्रा' में साथ काम कर चुके थे। 'बागी 2' उनकी टाइगर श्रॉफ के साथ पहली फिल्म थी, जिसमें दोनों की जोड़ी बड़े पर्दे पर दिखाई दी। फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर जबरदस्त प्रदर्शन किया और दुनिया भर में 258 करोड़ रुपये से ज्यादा का कारोबार किया। यह 2018 की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली हिंदी फिल्मों में शामिल रही। दिशा के लिए 'बागी 2' महत्वपूर्ण थी, क्योंकि इससे उनकी लोकप्रियता तेजी से बढ़ी। उनका ग्लैमरस लुक, फिटनेस और टाइगर के साथ ऑन-स्क्रीन केमिस्ट्री चर्चा में रही। हालांकि

समीक्षकों ने उनके किरदार की सीमाओं पर सवाल भी उठाए। दिशा के करियर की दिलचस्प सच्चाई यही रही- उनकी लोकप्रियता बढ़ती गई, लेकिन बतौर अभिनेत्री उन्हें मजबूत भूमिकाओं की तलाश भी रही। सलमान खान के साथ 'भारत', फिर 'राधे'2019 में दिशा को सलमान खान के साथ काम करने का मौका मिला। अली अब्बास जफर की 'भारत' में उन्होंने राधा का किरदार निभाया और 'स्लो मोशन' गाने में सलमान के साथ नजर आईं। फिल्म कमर्शियल तौर पर सफल रही और साल की बड़ी फिल्मों में शामिल हुई। दिशा ने 'भारत' को लेकर कहा था कि वह फिल्म से खुश थीं, क्योंकि उन्हें डांस करना पसंद है और वह ऐसा बॉलीवुड गाना करना चाहती थीं। उन्होंने सलमान खान और कोरियोग्राफर वैभवी मर्चेंट के साथ काम करने को खास अनुभव बताया था। इसके बाद सलमान और दिशा की जोड़ी 'राधे' में फिर नजर आई। हालांकि फिल्म को आलोचकों से खास प्रतिक्रिया नहीं मिली और कोविड-19 के कारण इसकी रिलीज प्रभावित हुई। 'मलंग' में ग्लैमर से आगे बढ़ने की कोशिश-2020 की 'मलंग' दिशा के लिए अलग तरह का प्रोजेक्ट था। मोहित सूरी की इस फिल्म में उनके

लेकिन दिशा को पहले की तुलना में ज्यादा स्क्रीन स्पेस मिला। उनके स्क्रीन टाइम और प्रदर्शन को सकारात्मक तरीके से नोट किया गया था। दिशा ने अपने करियर को लेकर कहा था कि वह सिर्फ नंबर वन बनने के लिए फिल्में साइन नहीं करतीं। उनके लिए जरूरी है कि वह चुनी गई भूमिका के सफर को एंजॉय करें। उन्होंने यह भी कहा कि फिल्म चुनते समय वह अपनी 'इनर वॉइस' पर भरोसा करती हैं। यही बात दिशा की करियर स्ट्रैटेजी को अलग करती है। उनकी फिल्मोग्राफी में बड़ी कमर्शियल फिल्में हैं, लेकिन उन्होंने खुद को हर फिल्म में एक ही तरह से पेश करने की कोशिश नहीं की। 'हर फिल्म के सेट पर खुद को नया कलाकार मानती हूं' अपने एक्टिंग ग्रोथ को लेकर दिशा पाटनी ने कहा था कि हर फिल्म करते समय उन्हें लगता है कि उन्होंने पहले जो सीखा था, वह भूल गई हैं और सेट पर खुद को नए कलाकार की तरह महसूस करती हैं। उन्होंने बताया कि उन्होंने एक्टिंग की कोई औपचारिक ट्रेनिंग नहीं ली। उन्होंने ऑडिशन और काम करते हुए एक्टिंग सीखी। उनके लिए हर फिल्म सीखने की प्रक्रिया रही। यह बयान अहम है, क्योंकि दिशा का करियर किसी फिल्म स्कूल या लंबे थिएटर अनुभव से शुरू नहीं हुआ था। मॉडलिंग, विज्ञापन, ऑडिशन और लगातार काम- यही उनका प्रशिक्षण बनता गया। फिटनेस और एक्शन बनीं पहचान-दिशा की पहचान सिर्फ फिल्मों तक सीमित नहीं रही। फिटनेस और डांस उनकी पब्लिक इमेज का बड़ा हिस्सा हैं। जिम, जिम्नास्टिक और फिटनेस से जुड़े वीडियो और तस्वीरों के कारण वह सोशल मीडिया पर भी चर्चा में रहती हैं। एक्शन फिल्मों में भी उनकी रुचि दिखाई दी। दिशा ने कहा था कि वह एक आउट-एंड-आउट एक्शन फिल्म करना चाहती हैं। उनके मुताबिक अगर दर्शक किसी लड़की को एक्शन करते हुए देखना चाहते हैं और उनकी धारणा बदलती है, तो ऐसी फिल्मों के लिए रास्ता और खुलेगा। यानी दिशा खुद को सिर्फ ग्लैमरस भूमिकाओं तक सीमित नहीं देखना चाहती थीं। 'राधे' से 'एक विलेन रिटर्न्स' तक आया उतार-'मलंग' के बाद दिशा के करियर में उतार-चढ़ाव आए। 2021 में 'राधे' रिलीज हुई और 2022 में वह 'एक विलेन रिटर्न्स' में नजर आईं। दोनों फिल्मों को अपेक्षित सफलता नहीं मिली। 'एक विलेन रिटर्न्स' में उन्होंने थ्रिलर कहानी से जुड़ा किरदार निभाया, लेकिन फिल्म बॉक्स ऑफिस पर उम्मीद के मुताबिक प्रदर्शन नहीं कर सकी। इसके बाद 2024 में 'योद्धा' आई। फिल्म में दिशा ने एक्शन से जुड़ा किरदार निभाया और उनके फाइट सीक्वेंस की तारीफ हुई, हालांकि फिल्म बॉक्स ऑफिस पर सफल नहीं रही। लेकिन उसी साल 'कल्कि 2898 एडी' ने तस्वीर बदल दी। फिल्म में दिशा का रोल छोटा था, लेकिन यह जबरदस्त कमर्शियल सफलता रही। 'कंगुवा' और नई इंडस्ट्री में कदम 2024 में दिशा ने तमिल सिनेमा में कदम रखा। वह सूर्या स्टारर 'कंगुवा' में नजर आईं और एंजेलिना का किरदार निभाया। हालांकि फिल्म को मिश्रित प्रतिक्रिया मिली और उनके किरदार के स्क्रीन स्पेस पर भी सवाल उठे। यह दौर बताता है कि दिशा का करियर हमेशा सीधी रेखा में नहीं चला। कभी बड़ी हिट मिली, कभी फिल्म असफल हुई, कभी भूमिका की तारीफ हुई तो कभी सीमित स्क्रीन टाइम के लिए आलोचना झेलनी पड़ी। 2026 में भी जारी है सफर-2025 में उनकी कोई फिल्म रिलीज नहीं हुई, लेकिन 2026 में दिशा की फिल्मोग्राफी में कई प्रोजेक्ट जुड़े। 'ओ'रोमियो' में वह जूली के किरदार में नजर आईं। इसके अलावा 'वेलकम टू द जंगल' और 'अवारापन 2' भी उनके करियर का हिस्सा बने। 'अवारापन 2' में उन्होंने इमरान हाशमी के साथ मुख्य भूमिका निभाई। यह 2007 की चर्चित 'अवारापन' का सीक्वल है। अपने करियर के एक दशक से ज्यादा समय बाद भी दिशा अलग-अलग तरह के प्रोजेक्ट्स का हिस्सा बन रही हैं। स्टारडम के बीच भी खुद को 'इंट्रोवर्ट' मानती हैं-दिशा की सोशल मीडिया छवि बेहद ग्लैमरस है, लेकिन 'फिल्मीबीट' से बातचीत में उन्होंने वास्तविक जीवन को काफी अलग बताया था। उन्होंने कहा था कि वह इंट्रोवर्ट हैं, सामाजिक कार्यक्रमों में असहज महसूस करती हैं और घर पर रहना ज्यादा पसंद करती हैं। बचपन के दिनों को याद करते हुए उन्होंने बताया कि स्कूल में उनके छोटे बाल थे, वह टॉमबॉय की तरह रहती थीं और उन्हें 'जादू' कहकर चिढ़ाया जाता था। लेकिन उस समय वह अपनी छोटी-सी दुनिया में इतनी व्यस्त रहती थीं कि इन बातों को ज्यादा गंभीरता से नहीं लेती थीं। शायद यही वजह है कि कैमरे के सामने आत्मविश्वासी दिखाई देने वाली दिशा निजी जिंदगी में खुद को अलग तरह से देखती हैं।

'अरे बेवकूफों, क्या एक मुसलमान, मुसलमान को राखी बांधता है?' पत्नी जरीना वहाब का नाम दाऊद से जोड़ने पर भड़के थे आदित्य पंचोली

मुंबई। 2000 के दशक में कुछ हिंदी अखबारों और मीडिया रिपोर्ट्स में यह दावा किया गया था कि मुंबई में आदित्य पंचोली

की 'दादागिरी' इसलिए चलती है क्योंकि उनकी पत्नी और अभिनेत्री जरीना वहाब अंडरवर्ल्ड डॉन दाऊद इब्राहिम को राखी बांधती हैं। इस दावे पर आदित्य पंचोली ने कड़ी नाराजगी जताई थी। आप की अदालत में दिए एक पुराने इंटरव्यू में उन्होंने कहा था, 'मेरी बीवी 17 साल की उम्र से फिल्म इंडस्ट्री में काम कर रही है। एक भी उंगली आज तक उस पर नहीं उठी। वह एक मुस्लिम औरत है। मैं बोलता हूं, वो पाक है, देवी है।' उन्होंने आगे कहा था, 'उसके बारे में लिखा गया कि वो इसलिए दादागिरी करता है क्योंकि आदित्य पंचोली की बीवी जरीना वहाब, दाऊद इब्राहिम को राखी बांधती है। अरे बेवकूफों, लिखने से पहले सोचो, क्या एक मुसलमान, मुसलमान को राखी बांधता है?' आदित्य पंचोली और जरीना वहाब की लव स्टोरी बॉलीवुड की सबसे चर्चित और अनोखी कहानियों में से एक है। दोनों की पहली मुलाकात साल 1986 में नारी हीरा की वीडियो फिल्म 'कलंक का टीका' के सेट पर हुई थी। जरीना वहाब के मुताबिक, आदित्य उनसे उम्र में लगभग 5 साल छोटे थे और पहली मुलाकात में ही उन्हें बेहद हैंडसम लगे थे।

सैफ अली खान पर हमले के आरोपी ने जुर्म कबूला,आरोपी ने कोर्ट से नरमी की अपील की, पीठ में फंसा था चाकू का टुकड़ा

मुंबई। सैफ अली खान पर हमले के आरोपी मोहम्मद शरीफुल

इस्लाम ने अपना अपराध स्वीकार करने की अर्जी दायर की है। उसने अदालत से नरमी बरतने की अपील भी की है। उसके वकील विपुल दुशिंग ने इसकी पुष्टि की है। पीटीआई की रिपोर्ट के अनुसार, अदालत ने अभियोजन पक्ष से जवाब दाखिल करने को कहा है और सुनवाई 11 सितंबर तक टाल दी है। 16 जनवरी 2025 की देर रात सैफ के घर में लूट की नीयत से घुसे शख्स ने उन पर हमला किया था। घटना के दो दिन बाद शरीफुल इस्लाम की गिरफ्तारी हुई थी, जो अब तक न्यायिक हिरासत में है। इस महीने की शुरुआत में एडिशनल सेशंस जज जीपी देशमुख ने शरीफुल इस्लाम पर आरोप तय किए थे। इसके साथ ही मामले में ट्रायल का रास्ता साफ हो गया। इस्लाम पर भारतीय न्याय संहिता की संबंधित धाराओं के तहत घातक हथियार का इस्तेमाल करके लूटपाट, गंभीर चोट पहुंचाने और घर में जबरन घुसने के आरोप लगाए गए हैं। उस पर फॉरेनर्स एक्ट और पासपोर्ट (भारत में प्रवेश) नियमों की संबंधित धाराएं भी लगाई गई हैं। जांच में सामने आया था कि शरीफुल इस्लाम बांग्लादेशी है, जो फर्जी डॉक्यूमेंट्स की मदद से गैरकानूनी ढंग से भारत में रह रहा

है। हमले के बाद बेटे ने पूछा था- क्या आप मरने वाले हैं- हाल ही में मोजो स्टोरी को दिए इंटरव्यू में सैफ ने हमले पर बात करते हुए कहा था, 'मैं बच्चों के कमरे में गया। वह शख्स बच्चे (जेह) को पकड़े हुए था। उसने बच्चे को हल्की चोट पहुंचाई थी और हमारी मेड को भी जख्मी कर दिया था। शायद अगर मैं पहले लाइट जला देता और उससे बात करने की कोशिश करता, तो स्थिति अलग हो सकती थी। लेकिन उस समय मैंने बिना सोचे-समझे उस पर हमला कर दिया और हमारी हाथापाई शुरू हो गई। इसके बाद वह चाकू लेकर बेकाबू हो गया। चारों तरफ खून और अफरा-तफरी मच गई।' आगे सैफ ने कहा, 'मैं वाकई तैमूर के साथ रहना चाहता था। मैंने उससे पूछा कि क्या तुम मेरे साथ हॉस्पिटल आओगे। उसने मुझे देखा और पूछा, 'क्या आप मरने वाले हैं?' मैंने कहा, 'नहीं, मेरी पीठ में बहुत दर्द है, लेकिन मैं ठीक हो जाऊंगा', उसने कहा, हां मैं चलूंगा।' सैफ ने ये भी कहा कि उस शख्स ने उन्हें पूरी ताकत से चाकू मारा था। चाकू का 6 इंच का टुकड़ा उनकी पीठ में रह गया था। वो टुकड़ा रीढ़ की हड्डी के पास लगा था। सैफ ने कहा, 'मेरा एक पैर सुन्न हो रहा था, मैं पैरालाइज होने के बेहद करीब था।' हमला करने वाले शख्स को माफ करना चाहते हैं सैफ-

इसी इंटरव्यू में सैफ ने कहा है कि वो हमला करने वाले शख्स को माफ करना चाहते हैं। सैफ ने कहा, 'मैं उस आदमी को माफ भी करना चाहता था, क्योंकि मुझे लगता है कि उसने बहुत बड़ी गलती की। मुझे नहीं लगता कि वह झगड़ा करना चाहता था। मैं उसे खुशी-खुशी माफ कर देता, लेकिन जिस तरह से उसने मुझे मारने की कोशिश की, उसे भूल पाना मेरे लिए मुश्किल हो रहा है। यह अमीर और गरीब का मामला है और इसी असमानता की वजह से ऐसा हुआ है।'

बॉक्स ऑफिस कलेक्शन-नेगेटिव रिव्यू का असर

टॉक्सिक की कमाई में 64फीसदी गिरावट,पहले दिन से आगे से भी कम कमाई हुई

मुंबई। कन्नड़ स्टार यश की फिल्म टॉक्सिक पर नेगेटिव रिव्यू और रेटिंग का बुरा असर पड़ा है। पहले दिन दर्शक बड़ी संख्या में ये फिल्म देखने पहुंचे और भारत में फिल्म ने करीब 101 करोड़ रुपए का बॉक्स ऑफिस कलेक्शन कर लिया। हालांकि खराब रिव्यू के चलते दूसरे दिन ही फिल्म की कमाई में 64फीसदी गिरावट आ गई। फिल्म ने पहले दिन के मुकाबले तीन गुना कम कमाई की है। इंडस्ट्री ट्रैकर वेबसाइट सैकनिल्क के मुताबिक, गुरुवार को दूसरे दिन टॉक्सिक ने देशभर में सभी भाषाओं को मिलाकर 22,629 शोज से 36.40 करोड़ रुपए की नेट कमाई की। बुधवार को फिल्म ने 101.10 करोड़ रुपए कमाए थे। इसके मुकाबले दूसरे दिन कमाई 63.99फीसदी घट गई। करीब 500 करोड़ रुपए के बजट में बनी टॉक्सिक ने दो दिन में भारत में 164.50 करोड़ रुपए का ग्रॉस कलेक्शन किया है। फिल्म का भारत में नेट कलेक्शन 137.50 करोड़ रुपए हो गया है। फिल्म को आज रक्षाबंधन और लॉन्ग वीकेंड का फायदा मिल सकता है, लेकिन दर्शकों द्वारा जिस तरह फिल्म की आलोचना की जा रही है, उससे ये अनुमान गलत साबित भी हो सकता है। हिंदी वर्जन से सबसे ज्यादा कमाई-दूसरे दिन भी टॉक्सिक की सबसे ज्यादा कमाई हिंदी डब वर्जन से हुई। हालांकि, हिंदी वर्जन की कमाई पहले दिन के मुकाबले काफी घट गई। बुधवार को रिलीज के दिन हिंदी वर्जन ने 55.00 करोड़ रुपए का नेट बिजनस किया था। गुरुवार को यह कमाई घटकर 23.00 करोड़ रुपए रह गई। विदेशों में भी कमाई घटी- यश, नयनतारा, कियारा आडवानी, हुमा कुरैशी, तारा सुतारिया और रुक्मिणी वसंत की फिल्म की विदेशों में भी दूसरे दिन कमाई कम हुई।ओपनिंग डे पर फिल्म ने ओवरसीज मार्केट में 16.25 करोड़ रुपए का ग्रॉस बिजनस किया था। दूसरे दिन विदेशों से 10.00 करोड़ रुपए का ग्रॉस कलेक्शन हुआ। दो दिनों में टॉक्सिक ने विदेशों से कुल 26.25 करोड़ रुपए का ग्रॉस कलेक्शन किया है। भारत और विदेशों को मिलाकर फिल्म का वर्ल्डवाइड ग्रॉस कलेक्शन 190.75 करोड़ रुपए हो गया है। धुरंधर 2 के मुकाबले आधी कमाई भी नहीं-टॉक्सिक पहले दिन

देश में रणवीर सिंह की धुरंधर 2 के ओपनिंग डे रिकॉर्ड के करीब पहुंची थी। धुरंधर 2 ने पहले दिन 102.55 करोड़ रुपए कमाए थे, जबकि टॉक्सिक की कमाई 101.10 करोड़ रुपए रही। दोनों फिल्मों की पहले दिन की कमाई की तुलना की जा रही है। हालांकि, आदित्य धर के डायरेक्शन में बनी धुरंधर 2 ने दूसरे दिन देश में 80.72 करोड़ रुपए का बिजनस किया था। फिल्म को माउथ पब्लिसिटी का फायदा मिला था। इसके मुकाबले टॉक्सिक दूसरे दिन 36.40 करोड़ रुपए ही कमा सकी। फिल्म की कमाई धुरंधर 2 की दूसरे दिन की कमाई की आधी भी नहीं है। आवारापन 2 की 14वें दिन की कमाई-टॉक्सिक की कमाई घटने का आवारापन 2 या बंटवारा 1947 को कोई फायदा नहीं मिला। गुरुवार को इमरान हाशमी की सुपरहिट फिल्म आवारापन 2 की कमाई भी कम हुई। 14वें दिन आवारापन 2 ने 1,085 शोज से 60 लाख रुपए की नेट कमाई की। इसके बाद भारत में फिल्म का कुल ग्रॉस कलेक्शन 171.90 करोड़ रुपए और कुल नेट कलेक्शन 144.25 करोड़ रुपए हो गया।आवारापन 2 का वर्ल्डवाइड ग्रॉस कलेक्शन 203.70 करोड़ रुपए है। नितिन ककड्ड के डायरेक्शन में बनी यह फिल्म 45 करोड़ रुपए के बजट में बनी है। बंटवारा 1947 का कलेक्शन-सनी देओल की बंटवारा 1947 की कमाई 14वें दिन भी 5 लाख रुपए तक नहीं पहुंची। राजकुमार संतोषी के डायरेक्शन में बनी इस फिल्म ने गुरुवार को 126 शोज से 3 लाख रुपए कमाए। 150 करोड़ रुपए के बजट में बनी बंटवारा 1947 का वर्ल्डवाइड ग्रॉस कलेक्शन अब तक 53.88 करोड़ रुपए है। भारत में फिल्म ने 37.80 करोड़ रुपए का नेट कलेक्शन किया है। टॉक्सिक के मेकर्स पर नेगेटिव रेटिंग हटवाने के आरोप-केजीएफ स्टार यश की फिल्म टॉक्सिक को लगातार दर्शकों के नेगेटिव रिव्यू मिल रहे हैं। सोशल मीडिया और अन्य वेबसाइट्स में फिल्म को काफी निराशाजनक रेटिंग मिली है। इसी बीच अब फिल्म के मेकर्स पर बुक माय शो से फिल्म की रेटिंग हटवाने के आरोप लग रहे हैं। बुक माय शो पर आमतौर पर हर रिलीज हुई फिल्म की रेटिंग दिखाई जाती है। कुछ समय पहले तक फिल्म टॉक्सिक को बुक माय शो पर 5.5 रेटिंग मिली थी, लेकिन अब ये रेटिंग हटा दी गई है। इसके बदले वेबसाइट पर सिर्फ लाइक नजर आ रहे हैं। जबकि अन्य फिल्मों की रेटिंग अब भी मौजूद है। सोशल मीडिया यूजर्स ने दावा किया कि दर्शकों से खराब रिव्यू मिलने के बाद रेटिंग हटा दी गई। हालांकि, रेटिंग हटाने को लेकर बुक माय शो या फिल्म के निर्माताओं की ओर से कोई जानकारी नहीं दी गई है। एक्स के एक यूजर ने आरोप लगाते हुए लिखा, 'बुक माय शो ने टॉक्सिक फिल्म की रेटिंग बंद कर दी। यह इतनी खराब थी कि 5.5/10 मिली, बीएमएस के इतिहास में सबसे खराब।' एक दिन में कमाए 100 करोड़, फिर फ्लॉप का डर क्यों? फिल्म टॉक्सिक 26 अगस्त को रिलीज हुई। इंडस्ट्री ट्रैकर वेबसाइट सैकनिल्क के मुताबिक, फिल्म ने पहले दिन ही भारत में 101 करोड़ का कलेक्शन कर लिया है। लेकिन इसके बावजूद फिल्म के फ्लॉप होने के अनुमान लगाए जा रहे हैं। वजह है फिल्म की हाइप और अब आने वाले नेगेटिव रिव्यू। पहले दिन फिल्म को 24579 शोज मिले, जिसकी ऑक्यूपेंसी 57 पर्सेंट रही। वीक डे होने के बावजूद, दर्शक बड़ी संख्या में फिल्म देखने पहुंचे, लेकिन दोपहर तक फिल्म के नेगेटिव रिव्यू चर्चा में आ गए। फिल्म की आलोचना का एक कारण ये भी रहा कि पिछले कुछ महीनों से मेकर्स लगातार इसे बड़े स्केल और बड़े बजट में तैयार करने की बात कर रहे थे, जिससे फिल्म से ज्यादा उम्मीदें जुड़ी थीं।

नेपाल बाढ़ में पत्नी संग फंसे परिणीता एक्टर खराज मुखर्जी,शूटिंग के लिए गए थे, बंगाली एक्ट्रेस भी फंसी

काठमांडू। नेपाल में आई भीषण बाढ़ के बाद अब तक 332 शव बरामद किए जा चुके हैं। बॉलीवुड फिल्म परिणीता और कहानी में नजर आ चुके पॉपुलर बंगाली एक्टर खराज मुखर्जी और उनकी पत्नी प्रतिभा मुखर्जी भी नेपाल बाढ़ में फंसे हैं। वह एक फिल्म की शूटिंग के लिए नेपाल गए थे। खराज मुखर्जी लगातार परिवार के संपर्क में थे, फिर बाढ़ के बाद अचानक उनका नंबर बंद हो गया। उनके साथ शूटिंग यूनिट के कई और साथी भी थे। हिंदुस्तान टाइम्स की रिपोर्ट में एक्टर के परिवार के सदस्य के अनुसार लिखा गया है, खराज और उनकी पत्नी अब सुरक्षित हैं, हालांकि आसपास की स्थिति बिगड़ी हुई है। वह नेपाल से

नहीं निकल पा रहे हैं। खराज के साथ एक्टर रजताभ दत्ता भी फंसे हुए हैं। काठमांडू में मौजूदा हालात के कारण उनका ग्रुप वहां से उड़ान नहीं भर सका। अब उनकी योजना सड़क मार्ग से उत्तर प्रदेश के गोरखपुर पहुंचने की है। इसके बाद वे गोरखपुर से कोलकाता के लिए फ्लाइट लेंगे। कौन हैं खराज मुखर्जी? बंगाली फिल्म इंडस्ट्री का जाना-माना नाम रहे मुखर्जी ने 'द नेमसेक', 'एक्सीडेंट', 'मुक्तोधारा' और 'जातिस्वर' जैसी फिल्मों में काम किया है।उनकी हिंदी फिल्मों में 'युवा', 'परिणीता', 'लागा चुनरी में दाग', स्पेशल 26 और 'लफंगे परिंदे' शामिल हैं। सुजॉय घोष की फिल्म 'कहानी' में इंस्पेक्टर चटर्जी का किरदार उनकी चर्चित हिंदी फिल्म भूमिकाओं में शामिल है।

स्वत्वाधिकारी
प्रकाशक एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
श्री आधुनिक प्रिन्टर्स एण्ड पैकेजर्स प्रा.लि.
1- मिर्जापुर रोड नैनी प्रयागराज उ.प्र. 211008 से मुद्रित एवं एम2ए/25 एडीए कालोनी नैनी प्रयागराज 211008 (उ.प्र.) से प्रकाशित
सम्पादक
डॉ.दीपक अरोरा
मो 0 न0 09415608783
RNI No. UPHIN/2012/41154
website:www.adhuniksamachar.com
नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।